राजभाषा जागृति

15वाँ अंक
सितम्बर 2017

भ्रष्टाचार से मुक्ति और पारदर्शिता - विकास की कुंजी

गार्डन रीच शिपबिल्डर्स एण्ड इंजीनियर्स लिमिटेड

पोतनिर्माण में उत्कृष्टता एवं गुणवत्ता की दिशा में अग्रसर

महामहिम राज्यपाल, पश्चिम बंगाल, श्री केशरी नाथ त्रिपाठी जी पुरस्कार प्रदान करते हुए

विषय सूची

गार्डन रीच शिपबिल्डर्स एण्ड इंजीनियर्स लिमिटेड
अर्धवार्षिक हिन्दी पत्रिका

अंक : 15वाँ
सितम्बर 2017
(केवल आंतरिक वितरण के लिए)

सम्पादक
श्रीमती सुनीता शर्मा
उप महाप्रबंधक (राजभाषा)

सम्पादकीय पत्राचार का पता :

सम्पादक
राजभाषा जागृति
राजभाषा विभाग
गार्डन रीच शिपबिल्डर्स एण्ड इंजीनियर्स लिमिटेड
61, गार्डन रीच रोड, कोलकाता - 700 024
दूरभाष : 033-24698140-8143, एक्स - 303
ईमेल-Sharma.Sunita@grse.co.in

(राजभाषा जागृति पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं के विचार लेखकों के अपने हैं, अत: यह आवश्यक नहीं कि सम्पादक इनसे सहमत हो)

1. आवरण कथा 6-9
भ्रष्टाचार से मुक्ति और पारदर्शिता -विकास की कुंजी

2. तकनीकी लेख 10-13
नवीकरणीय ऊर्जा

3. विविध लेख 14-17, 27, 36, 41-43
• डिजिटलीकरण - एक सुदृढ़ भारतीय लोकतन्त्र • भ्रष्टाचार को मिटाना है देश को आगे बढ़ाना है • सुखी जीवन का मंत्र • समर्थ भारत का सपना • पारदर्शिता-भ्रष्टाचार रोधक उपाय • परमाणु विद्युत शक्ति की आवश्यकता

4. कविताएँ 15,17-18, 22, 26, 32, 44
• जिंदगी एक सफर • देने का आनंद लेने में नहीं • समय का चक्र • सत्य का अस्तित्व • ये कैसी आज़ादी • हे प्रकृति तुम्हें प्रणाम • नीम

5. जीआरएसई परिवारों से 19-20, 33, 40, 45-50
• देश की विकास दर को है बढ़ाना भ्रष्टाचार को जड़ से है निकालना • जीवन • जातीय एकता और आदि शंकराचार्य • आयुर्वेदिक दोहे • बेटी • डॉ ए पी जे अब्दुल कलाम के अनमोल विचार • देश की शक्ति देश की भक्ति • हमारे कर्मचारी-हमारी बहुमूल्य संपदा

6. अध्यात्म 21-22
मैं आत्मा हूँ

7. पर्यटन 23-25
ट्रैक फॉर चिल्ड्रन - रूपम वैली

8. स्वास्थ्य 30-32
चिकन पॉक्स

9. निगमित सामाजिक दायित्व 34-35

10. साहित्य 37-39
हिन्दी काव्य के ये मुस्लिम कवि

11. राजभाषा गतिविधियाँ 51-55

प्रभास कुमार झा
सचिव

Prabhas Kumar Jha
SECRETARY
Tel. : 23438266 Telefax : 23438267
E-mail : secy-ol@nic.in

सत्यमेव जयते

भारत सरकार
राजभाषा विभाग
गृह मंत्रालय
तृतीय तल, एन.डी.सी.सी.-II भवन,
जय सिंह रोड, नई दिल्ली-110001

GOVERNMENT OF INDIA
DEPARTMENT OF OFFICIAL LANGUAGE
MINISTRY OF HOME AFFAIRS
3rd FLOOR, N.D.C.C.II BUILDING,
JAI SINGH ROAD, NEW DELHI-110001

पत्र सं0-11014/08/2016-रा.भा. (पत्रिका) दिनांक: 28 जुलाई, 2017

संदेश

यह हर्ष का विषय है कि गार्डन रीच शिपबिल्डर्स एंड इंजीनियर्स लि., कोलकाता द्वारा हिंदी पत्रिका "राजभाषा जागृति" के 15 वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है।

राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में गृह पत्रिकाओं के प्रकाशन की महती भूमिका होती है । इनके प्रकाशन से संस्था की अद्यतित सूचनाएं तो प्राप्त होती ही है, संस्था के रचनाकारों को अपनी रचनाधर्मिता प्रकट करने के लिए सशक्त मंच भी मिलता है । मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि 'राजभाषा जागृति' अपने कर्तव्यों का निर्वहन पूरी लगन व निष्ठा से कर रही है । विगत वर्षों में 'हिंदी दिवस' के मौके पर 'राजभाषा जागृति' को पुरस्कृत किया गया है, इससे राजभाषा के प्रचार-प्रसार में इस पत्रिका की प्रतिबद्धता बढ़ जाती है ।

मुझे विश्वास है कि पत्रिका "राजभाषा जागृति" इसी प्रकार अपने प्रगति पथ पर अग्रसर रहेगी।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित,

(प्रभास कुमार झा)

साथियों,

हिन्दी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

कंपनी की हिन्दी पत्रिका "राजभाषा जागृति" के 15वें अंक के माध्यम से पुन: एक बार आपके समक्ष अपने विचार रखने का अवसर मिला है। हिन्दी के प्रयोग को बढ़ाने में प्रयासरत यह पत्रिका नित नई ऊंचाइयों को छू रही है। लगातार क्षेत्रीय स्तर पर सम्मानित होने के साथ साथ अब राजभाषा कीर्ति पुरस्कार द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर भी अपनी पहचान को साबित कर चुकी है। इसके लिए हमारा राजभाषा विभाग वास्तव में बधाई का पात्र है।

जहां तक शिपयार्ड और उत्पादन का संबंध है, आने वाले वर्ष हम सभी के लिए चुनौतीपूर्ण हैं। इस प्रतिस्पर्धात्मक माहौल में हम अपने संगठन को तभी तक जीवित बनाए रख सकते हैं जब हम किफ़ायती लागत पर निर्धारित समय सीमा के भीतर अपनी गुणवत्ता को उच्चतम बनाए रख कर उत्पादन कर सकें। पोतनिर्माण में अब निजी क्षेत्र के आगमन से हमारी प्रतिस्पर्धा सरकारी कंपनियों के साथ साथ निजी कंपनियों से भी है। अत: इन कठिन परिस्थितियों से निपटने के लिए हमें एकजुट होकर समय और कार्य को प्राथमिकता देते हुए सुव्यवस्थित व योजनाबद्ध तरीके से कार्य करना होगा ताकि निगमित लक्ष्यों को पूरा करते हुए उत्पादन लागत को बढ़ाया जा सके।

पत्रिका के इस अंक का विषय समाज और राष्ट्र के गंभीर मुद्दे अर्थात **"भ्रष्टाचार से मुक्ति और पारदर्शिता - विकास की कुंजी"** पर आधारित है। भ्रष्टाचार किसी भी राष्ट्र के विकास के लिए बहुत बड़ी चुनौती है। केवल आर्थिक अपराध ही भ्रष्टाचार नहीं है परंतु अपना कर्तव्य सही प्रकार न करना भी भ्रष्टाचार की श्रेणी में आता है। संगठन में पारदर्शिता से न केवल संगठन के कार्मिकों अपितु उन सभी में विश्वसनीयता बढ़ती है जो संगठन से प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से जुड़े हैं और यह विश्वसनीयता सभी को कार्य निष्पादन के प्रति प्रेरित व उत्साहित करती है। आइए, एक भ्रष्टाचार मुक्त राष्ट्र निर्माण में हम सभी भागीदार बनें।

"राजभाषा जागृति" के 15वें अंक के सफल प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

14 सितम्बर 2017

वी के सक्सेना

विपिन कुमार सक्सेना
रियर एडमिरल, भानौ (सेवानिवृत्त)
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

निदेशक (कार्मिक) के विचार

साथियों,

"राजभाषा जागृति" वर्ष 2006 से यानि एक दशक से भी अधिक समय से नियमित रूप से प्रकाशित की जा रही है और मुझे यह बताते हुए अत्यंत सुखद अनुभूति हो रही है कि इसके सभी अंक अपने निर्धारित समय पर जारी हुए हैं। मुझे बेहद खुशी है कि पत्रिका का 15वां अंक भी इस परंपरा का निर्वाह करते हुए हिन्दी दिवस के शुभ अवसर पर प्रकाशित किया जा रहा है। इस पत्रिका के माध्यम से न केवल हिन्दी का प्रचार प्रसार हो रहा है अपितु जीआरएसई की विभिन्न गतिविधियों से भी यह सभी का साक्षात्कार करवा रही है। हिन्दी के प्रयोग को बढ़ाने में अभूतपूर्व योगदान देने के साथ साथ यह कंपनी के विभिन्न कार्मिकों के बीच भावनात्मक एकता बनाए रखने में भी अपनी असाधारण भूमिका निभा रही है। अपनी विशिष्टता के कारण इस पत्रिका ने केवल जीआरएसई में ही नहीं बल्कि अन्य कार्यालयीन पत्रिकाओं के बीच अपनी एक सुदृढ़ पहचान बनाई है। राष्ट्रीय/क्षेत्रीय स्तर पर जीआरएसई और उप महाप्रबंधक (राजभाषा) श्रीमती सुनीता शर्मा को लगातार मिल रहे पुरस्कार इसका प्रमाण हैं।

"राजभाषा जागृति" का प्रत्येक अंक किसी न किसी विषय पर आधारित होता है। पत्रिका के इस अंक का विषय **"भ्रष्टाचार से मुक्ति और पारदर्शिता – विकास की कुंजी"** समसामयिक माहौल को देखते हुए बहुत ही सटीक और सार्थक है। राष्ट्र और संगठन के विकास के लिए भ्रष्टाचार मुक्त व पारदर्शी माहौल अत्यंत आवश्यक है। संगठन में पारदर्शिता होगी तो संगठन मजबूत बनेगा और यही उन्नति का मूल मंत्र भी है।

आज के प्रतिस्पर्धात्मक युग में उपरोक्त के साथ साथ श्रेष्ठ गुणवत्ता, ग्राहक को प्राथमिकता, लागत में कमी, रचनात्मकता व टीम भावना ऐसे मूल्य हैं जिनके लिए व्यवस्थित प्रयास अपेक्षित हैं। आज तकनीकी ज्ञान के अतिरिक्त नेतृत्व व अंतर्वेयक्तिक कौशल का होना भी जरूरी है। नियम और नीति निर्धारण व लक्ष्य निर्धारण में कामगार और कार्यपालक की समान भूमिका की आवश्यकता है। आइए, हम भी राष्ट्र से भ्रष्टाचार को मिटाने व एक पारदर्शी समाज तैयार करने में अपनी महती भूमिका निभाएँ।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

अ. कु. नंदा

असित कुमार नंदा
निदेशक (कार्मिक)

साथियों,

आज के युग में विज्ञान के ज्ञान को जन साधारण तक पहुंचाना बेहद महत्वपूर्ण है और इसे सरल रूप में जन-जन तक पहुंचा पाना अपनी भाषा अर्थात देश के अधिकतर लोगों द्वारा बोली और समझी जाने वाली हिन्दी द्वारा अधिक सरल होगा और यही हमारे सम्प्रेषण का सरल आधार भी है। हमें चाहिए कि हिंदी में तकनीकी-वैज्ञानिक जानकारी व अनुसंधान एवम सृजन के लिये सरल शब्दों की संरचना द्वारा भाषा को सरल बनाएँ ताकि हर एक आम आदमी उसे समझ सके। ऐसी सरल भाषा के रूप में हिन्दी को तकनीकी और वैज्ञानिक क्षेत्रों में लाने की आवश्यकता है। इतना ही नहीं अंग्रेजी के बेहद प्रचलित शब्दों को भी, जो विज्ञान, प्रशासन इत्यादि से जुड़े हैं, हिन्दी में सहज इस्तेमाल करें ताकि हम वैज्ञानिक, तकनीकी व प्रशासनिक क्षेत्रों में लाभ उठाते हुए राजभाषा के साथ साथ देश को उन्नत कर पाएं।

'राजभाषा जागृति' पत्रिका के माध्यम से भी मैं अपने साथी कार्मिक रचनाकारों को यही संदेश देना चाहूंगी कि अपने विचारों को सरल भाषा में उतारने का प्रयास किया जाए। तकनीकी लेख लिखते समय भी ऐसे शब्द प्रयोग किए जाएँ जिससे उस विषय का कम जानकार भी उसे समझ पाए। हाल ही में सचिव (राजभाषा) की अध्यक्षता में सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ आयोजित बैठक में सचिव महोदय ने हिन्दी के सरल और सहज प्रयोग पर बल देते हुए कहा कि लिखते समय आम बोलचाल की भाषा का प्रयोग किया जाए और भाषा ऐसी होनी चाहिए जो कि अंतिम व्यक्ति से जुड़ी हुई हो। हिन्दी सबको जोड़ने वाली भाषा है। इसे जटिल व बोझिल न बनने दें। सचिव महोदय के विचारों को आप सभी तक पहुंचाते हुए सभी कार्मिकों से मेरा अनुरोध है कि सरल हिन्दी के प्रयोग द्वारा कार्यालयीन काम काज में मूल रूप से हिन्दी में लेखन को बढ़ावा दिया जाए।

पत्रिका के 15वें अंक का विषय देश के विकास हेतु भ्रष्टाचार की समस्या को दूर करने के लिए **"भ्रष्टाचार से मुक्ति और पारदर्शिता - विकास की कुंजी"** रखा गया है। आज देश एक बदलाव के दौर से गुजर रहा है। सरकार द्वारा चलाई जा रही मेक इन इंडिया, डिजिटल इंडिया, कौशल विकास जैसी महत्वपूर्ण योजनाओं के जरिए देश प्रगति की राह पर अग्रसर है। ऐसे में भ्रष्टाचार राष्ट्र के विकास की राह में एक विकराल समस्या और बहुत बड़ा अवरोध है। आइए, हम सब मिलकर राष्ट्र की उन्नति के रास्ते से इस बाधा को दूर करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दें।

इस अंक के सभी रचनाकारों के प्रति धन्यवाद और आभार व्यक्त करते हुए सभी से निवेदन है कि फीडबैक के रूप में पत्रों के माध्यम से अपने सुझाव भेजते रहिए, जिससे कि आगामी अंकों को और भी अधिक सुरुचिपूर्ण व लाभकारी बनाया जा सके।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

सुनीता शर्मा
उप महाप्रबंधक (राजभाषा)

भ्रष्टाचार से मुक्ति और पारदर्शिता - विकास की कुंजी

भ्रष्टाचार अर्थात भ्रष्ट+आचार। भ्रष्टाचार का शाब्दिक अर्थ हुआ- वह आचरण जो किसी प्रकार से अनैतिक और अनुचित है। स्वीकृत मूल्यों के विरुद्ध आचरण को भ्रष्ट आचरण समझा जाता है। अपनी स्वार्थ पूर्ति के लिए ***अपने पद का दुरुपयोग और अनुचित ढंग से किसी भी प्रकार का लाभ कमाना ही भ्रष्टाचार है।*** यद्यपि यह समस्या विश्वव्यापी है परंतु आज हमारे देश में भी भ्रष्टाचार की जड़ें बहुत गहरे तक समाहित हैं।

पहले भ्रष्टाचार को आम जन जीवन में केवल आर्थिक अपराधों से जोड़ा जाता था,परंतु ***आज इसके विभिन स्वरूप हैं।*** शासन द्वारा नियुक्त अधिकारी अपने पद का दुरुपयोग विभिन्न प्रकार से करते हैं जैसे -किसी मामले में किसी कार्य विशेष के लिए आबंटित धन को पूरा या अंशत:, अकेले या अन्य जनों से मिलकर हड़प जाना; अथवा अपने अधीनस्थ कर्मचारियों एवं कार्य से संबंधित अन्य व्यक्तियों के कार्य में नियमों की अनदेखी करना, जिससे वे धन का लाभ स्वयं उठाते हैं और दूसरों को उठाने देते हैं। ईमानदार कार्मिकों को प्रताड़ित या ब्लैकमेल कर अनुचित निर्णयों में भागीदार बनाने के लिए मजबूर करना, गैरकानूनी तरीकों से अपने जानकारों की भर्ती धन लाभ या अनुचित कार्यों में सहयोग के लिए करना, जालसाज़ी, पक्षपात, अपने निजी स्वार्थ के लिए महिलाओं का शोषण करना, इत्यादि इत्यादि भ्रष्टाचार के अंतर्गत शामिल है।

भारतीय संस्कृति व्यक्तिगत शुचिता,नैतिकता तथा कर्तव्य परायणता की संवाहक रही है परंतु आज भ्रष्टाचार देश और व्यक्ति के विकास में अवरोध का एक बड़ा कारक बनता जा रहा है। यह समाज और समुदायों के बीच असमानता का बड़ा कारण हैऔर साथ साथ हमारे समाज और राष्ट्र के सभी अंगों को बहुत ही गंभीरतापूर्वक प्रभावित कर रहा है। ये राजनीतिक,आर्थिक और सामाजिक रूप से राष्ट्र की प्रगति और विकास में बहुत बड़ी बाधा है। दुराचार, व्यभिचार, अनाचार आदि भ्रष्टाचार के ही प्रतीक हैं। इसलिए भ्रष्टाचार के कई नाम-रूप हो गए हैं, लेकिन उनके कार्य और प्रभाव लगभग समान हैं या एक-दूसरे से बहुत ही मिलते-जुलते हैं।

भ्रष्टाचार के रूप

- वक्त के साथ साथ भ्रष्टाचार के रूप भी बदले हैं। भ्रष्टाचार केवल धन के रूप में ही नहीं होता। इसमें सार्वजनिक धन तथा भण्डार का दुरुपयोग करना, ठेकेदारों या फर्मों को रियायतें देना, बिना पूर्व अनुमति के अचल संपत्ति अर्जित करना, शासकीय कर्मचारियों का व्यक्तिगत कार्यों में प्रयोग करना, अनैतिक आचरण, उपहार ग्रहण करना आदि मुख्य रूप से शामिल हैं।
- इसके साथ ही भ्रष्टाचार की परिभाषा भी विस्तृत होती गई है। पहले केवल आर्थिक भ्रष्टाचार को ही भ्रष्टाचार मानते थे, लेकिन आज इसके कई रूप हैं, जैसे: आर्थिक भ्रष्टाचार, नैतिक भ्रष्टाचार, राजनीतिक भ्रष्टाचार, न्यायिक भ्रष्टाचार, प्रशासनिक भ्रष्टाचार, सामाजिक भ्रष्टाचार इत्यादि। न्याय मिलने में होनी वाली जानलेवा देरी न्यायिक भ्रष्टाचार और कुप्रथाएँ सामाजिक भ्रष्टाचार का उदाहरण है। रिश्वत लेना, पक्षपात, हफ्ता वसूली, जबरन चन्दा लेना, सरकारी मशीनरी का दुरुपयोग, गलत या पक्षपातपूर्ण निर्णय, वंशवाद, ब्लैकमेल करना, टैक्स चोरी, झूठी गवाही, झूठा मुकदमा, परीक्षा में नकल, परीक्षार्थी का गलत मूल्यांकन, पैसे लेकर रिपोर्ट छापना, विभिन्न पुरस्कारों के चयन के लिए पक्षपात करना, महिलाओं का शोषण आदि भ्रष्टाचार के विभिन्न रूप हैं।
- किसी उच्च पद पर आसीन अधिकारी प्राय: गुणवत्ता की अनदेखी कर अपने समाज, परिवार अथवा संप्रदाय के लोगों को प्राथमिकता देता है या किन्हीं विशेष कार्मिकों का पक्षपात करता है तो उसका यह कृत्य भ्रष्टाचार का ही रूप है। ***"भ्रष्टाचार में लिप्त व्यक्ति सदैव न्याय की अनदेखी करता है"***।

भ्रष्टाचार के प्रमुख कारण

- भ्रष्टाचार आज जीवन शैली बनता जा रहा है और जीवन के हर रंग में समाकर उसे दूषित कर रहा है। इसका प्रमुख कारण है नैतिक मूल्यों में कमी और चारित्रिक नैतिकता में आई गिरावट, जिससे अधर्म तथा पाप का कोई डर नहीं।
- कुछ मनुष्यों में स्वार्थ की प्रवृत्ति। लोगों में निजी स्वार्थ की भावना परस्पर असमानता को जन्म देती है। यह असमानता आर्थिक, सामाजिक व प्रतिष्ठा के मतभेद को बढ़ावा देती है।
- ***अन्याय और निष्पक्षता के अभाव में भी भ्रष्टाचार का जन्म होता है***। जब प्रशासन या समाज किसी व्यक्ति के प्रति निष्पक्ष नहीं हो, तब इससे प्रभावित हुआ व्यक्ति या वर्ग अपनी दुर्भावना को भ्रष्टाचार को उत्पन्न करने में लगा देता है। इससे चोरबाजारी, रिश्वतखोरी, कार्य के प्रति ईमानदारी व निष्ठा का अभाव आदि अव्यवस्थाएँ प्रकट होती हैं।
- जातीयता, साम्प्रदायिकता, क्षेत्रीयता, भाषावाद, पक्षपात आदि के फलस्वरूप भ्रष्टाचार का जन्म होता है।

- जीवन शैली में भौतिक विलासिता, झूठा दिखावा, बाह्य प्रदर्शन व झूठी सामाजिक प्रतिष्ठा पाना।
- लालच, धन को ही सर्वस्व समझना तथा अधिक परिश्रम किए बिना धनार्जन की चाहत।
- मानवीय संवेदनाओं की कमी।
- गरीबी, भुखमरी तथा बढ़ती महंगाई, बेरोजगारी, जनसंख्या वृद्धि तथा व्यक्तिगत स्वार्थ।
- लचीली कानून व्यवस्था और राष्ट्रभक्ति का अभाव।
- अधिकांश स्थितियों में जाँच आयोग की निष्पक्षता पर शक किया जाता है। कार्यपालिका द्वारा जाँच आयोग को प्रभावित करने के मामले भी सामने आए हैं तथा जाँच आयोग द्वारा अपराधी घोषित होने के बावजूद अपराधी को कोई सजा नहीं मिल पाती है।
- **भ्रष्टाचार का एक अहम कारण यह भी है कि भ्रष्टाचार को सहने की क्षमता आम जनता के बीच बढ़ चुकी है।**
- **पारदर्शिता** का अभाव भ्रष्टाचार को जन्म देता है क्योंकि भ्रष्टाचारी सदैव अपने अनुचित कार्यों पर पर्दा डालने का हरसंभव प्रयास करता है। भ्रष्टाचारी पारदर्शिता से डरता है।

भ्रष्टाचार का देश और समाज पर प्रभाव

भ्रष्टाचार का दुष्प्रभाव पूरे देश में दिखाई दे रहा है, भ्रष्टाचार देश के विकास में बाधक है। इसके अतिरिक्त :

- किसी भी राष्ट्र के विकास के लिए उसके नागरिकों का, राजकीय कर्मचारियों और अधिकारियों का निष्ठावान होना, अपने कर्तव्य का पालन करना आवश्यक है। इनके अभाव में न तो संगठन का विकास हो सकता है और न ही देश का। देश के महाशक्ति बनने की कसौटी उसकी जनशक्ति और उसका तकनीकी नेतृत्व व श्रम का मूल्य है। यदि कार्य को निष्ठापूर्वक नहीं किया जाएगा तो वह न केवल उच्च गुणवत्ता की कसौटी पर खरा नहीं उतरेगा अपितु ***विलंब से पूरा होने से श्रम का मूल्य भी बढ़ेगा।*** उत्पादन महंगा होगा, आपूर्ति निर्धारित समय पर नहीं होगी तो ऐसे में दूसरे देशों में उत्पाद कैसे प्रतिस्पर्धा कर प्रवेश कर पाएगा। कार्य के प्रति निष्ठा व जवाबदेही का अभाव भ्रष्टाचार का ही प्रभाव है।
- भ्रष्टाचार मुख्यत: राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, पर्यावरण स्तर पर, लोगों के जीवन मूल्य को प्रभावित करता है। लोकतांत्रिक व्यवस्था में, निजी लाभ के लिए आधिकारिक सत्ता के दुरुपयोग होने पर कार्यालयों और संस्थानों की स्वीकार्यता प्रभावित होती है। एक भ्रष्ट वातावरण में जवाबदेह नेतृत्व को विकसित करना बेहद चुनौतीपूर्ण है।
- आर्थिक रूप से भ्रष्टाचार राष्ट्रीय संपदा को कम करता है। कई भ्रष्ट अधिकारी अपने निजी स्वार्थ के लिए परियोजनाओं में दुर्लभ सार्वजनिक संसाधनों का निवेश करते हैं और इससे होने वाला लाभ समुदायों के बजाय अपने निजी प्रयोग में लाते हैं। पर्यावरणीय नियमों और कानूनों को कई बार भ्रष्ट व्यवस्थाओं के कारण अनदेखा कर दिया जाता है।
- भ्रष्टाचार बाजार की निष्पक्ष संरचना के विकास को बाधित करता है, पक्षपात के प्रभाव में गुणवत्ता का ख्याल रखे बगैर कई बार गलत पार्टियों को कार्य सौंपे जाने से प्रतिस्पर्धा प्रभावित होती है, परिणामत: निवेश प्रभावित होता है।
- भ्रष्टाचार से संस्थानों और उसके नेतृत्व में लोगों का भरोसा टूटता है।
- आम जनता की सुविधा के लिए घोषित की गयी परियोजनाओं के लिए सरकारी खजाने से जो धन भेजा जाता है, कई बार उसका आधे से अधिक हिस्सा सम्बंधित अधिकारियों की जेबों में चला जाता है, जिससे परियोजनाओं का आंशिक लाभ ही आम जनता को मिल पाता है। भ्रष्टाचार के कारण प्रगति प्रभावित होती है।
- समस्या यह है कि, कई बार ऊपर से लेकर नीचे तक हर व्यक्ति का आर्थिक भ्रष्टाचार में एक तय हिस्सा होता है और पूरा चैनल इसमें लिप्त हो जाता है। इस कारण भ्रष्टाचार को रोक पाना बहुत कठिन हो जाता है। जैसे – सरकार ने गरीबों के लिए कई सुविधाएं उपलब्ध कराई है। जबकि, कई बार सरकारी सुविधाएं गरीबों की पहुँच से दूर हो जाती है क्योंकि भ्रष्ट अधिकारी अंदर ही अंदर गठजोड़ बना कर गरीबों को मिलने वाली सुविधाओं को आपस में ही बाँट लेते हैं। अधिकारियों और अपराधियों के बीच में यह सांठगांठ संगठन के साथ साथ पूरे देश को कमजोर करती जा रही है।
- भ्रष्टाचार के कारण आज की शिक्षा व्यवस्था, चिकित्सा व्यवस्था से नैतिकता समाप्त हो रही है। इनका व्यवसायीकरण हो गया है।
- भ्रष्टाचार के कारण अनेक परियोजनाएँ अधूरी रह जाती हैं और सरकारी खजाने का करोड़ों रुपया व्यर्थ हो जाता है। इससे सरकार की आय में कमी और आय व संपत्ति में असमानता आती है।

- भ्रष्टाचार के कुपरिणामस्वरूप समाज और राष्ट्र में व्यापक रूप से असमानता और अव्यवस्था का उदय होता है। इससे ठीक प्रकार से कोई कार्य पद्धति चल नहीं पाती है और सबके अन्दर भय, आक्रोश और चिंता की लहरें उठने लगती हैं।

भ्रष्टाचार की बीमारी का इलाज

विकास के लिए भ्रष्टाचार को नियंत्रित करना आवश्यक है। भ्रष्टाचार की बीमारी समाज और देश के लिए अत्यंत खतरनाक है। जो भ्रष्ट तरीकों से धन अर्जित करता है,वह उसे ऐश तथा दिखावे में खर्च कर देता है अर्थात यह धन अनुत्पादक कार्यों में लगता है,जिससे दूसरे मेहनतकश एवं ईमानदार व्यक्ति हताश होते हैं तथा युवा पीढ़ी में बिना परिश्रम किए बड़ी-बड़ी महत्वाकांक्षाएं उत्पन्न हो जाती हैं। भ्रष्टाचार को दूर करने के लिए सरकार द्वारा अनेक कदम उठाए गए हैं जिनमें प्रमुख हैं :-

- **भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम,** 1988 (Prevention of Corruption Act, 1988) भारतीय संसद द्वारा पारित केंद्रीय कानून है जो सरकारी तंत्र एवं सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों में भ्रष्टाचार को कम करने के उद्देश्य से बनाया गया ।
- **भारतीय दंड संहिता** की धाराएं 161, 162, 164, 165 तथा 165(ए)।
- **सूचना का अधिकार अधिनियम 2005** - सरकार और नौकरशाही को जनता के प्रति जवाबदेह बनाने और उनके कामकाज में पारदर्शिता लाने के उद्देश्य से भारतीय संसद ने 2005 में सूचना का अधिकार कानून (आरटीआई) पारित किया। इसके तहत केंद्र और राज्यों के स्तर पर सूचना आयुक्त नियुक्त किए गए और नागरिकों को सरकार से सूचना मांगने का अधिकार दिया गया। इससे सरकार के कामकाज पर कुछ अंकुश लगा और पारदर्शिता भी बढ़ी।
- **भ्रष्टाचार निवारण (संशोधन) अधिनियम, 2013**
- **केन्द्रीय सतर्कता आयोग** - केन्द्रीय सरकार में केन्द्रीय सतर्कता आयोग है जो कि केन्द्रीय सरकार के कर्मचारियों में भ्रष्टाचार की रोकथाम तथा उन्हें दंड देने के लिए कार्यरत है। प्रत्येक मंत्रालय तथा केन्द्रीय सरकारी उपक्रमों में सतर्कता अधिकारी नियुक्त हैं। इसी प्रकार राज्यों में भी सतर्कता आयोग है।
- **निगमित शासन** - पिछले कुछ समय से, जब से भारतीय अर्थव्यवस्था विश्व अर्थव्यवस्था के साथ शामिल हो गई है तब से देश में निगमित शासन का विषय चर्चा में आ गया है। आर्थिक उदारता के इस माहौल में प्राइवेट और सार्वजनिक क्षेत्र के बीच प्रतिस्पर्धा आ गई है। सार्वजनिक क्षेत्र आज के इस नए परिदृश्य में आत्मनिर्भर बन रहे हैं तथा लाभ अर्जित करने पर आमादा हैं और इस कारण वे नई नई चुनौतियों का भी सामना कर रहे हैं। ऐसे में निगमित शासन की भूमिका बहुत ही अहम हो गई है।
- **जांच आयोग अधिनियम,1952**
- **फेमा अधिनियम, 1999**
- **मनी लाउन्डरिंग अधिनियम, 2002**
- **केन्द्रीय लोकपाल बिल 1998**
- **भ्रष्टाचार निरोधक अधिनियम, 1947**
- **अखिल भारतीय सेवा (आचरण) नियम 1954**
- **केंद्रीय नागरिक सेवा नियम 1956**
- **केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो**
- **व्हिसल ब्लोअर नीति**
- **सिटीजन चार्टर**
- **अखंडता संधि**

हमारे माननीय प्रधान मंत्री, श्री नरेंद्र मोदी जी ने देश से भ्रष्टाचार को समाप्त करने और भ्रष्टाचारियों पर लगाम कसने के लिए कई क्रांतिकारी कदम उठाए हैं, जिनमें प्रमुख हैं:

- नोटबंदी या विमुद्रीकरण एक ऐतिहासिक कदम है जिससे काले धन की समस्या को दूर करने का प्रयास किया गया।
- डिजिटलीकरण अन्य महत्वपूर्ण कदम है जिससे लेनदेन के हिसाब को पारदर्शी बनाने का प्रयास किया जा रहा है।
- आधार कार्ड को बैंक खातों, गैस सबसिडी व अन्य कल्याणकारी योजनाओं से जोड़ा जा रहा है।
- केंद्रीय सरकार की नजर अंतिम व्यक्ति तक है। डैशबोर्ड और बिग डाटा एनालिसिस के जरिए मंत्रालय की योजनाओं और उसके कामकाज पर नजर रखी जा रही है।
- जीएसटी लागू करना यानि देश में एक समान कर व्यवस्था भी भ्रष्टाचार को दूर करने के लिए उठाया गया उल्लेखनीय कदम है।
- मई 2014 में माननीय सुप्रीम कोर्ट के फैसले को लागू करने के लिए एक विशेष जांच दल (एसआईटी)के गठन को मंजूरी दे दी ताकि टैक्स चोरी और गैरकानूनी ढंग से विदेशों में जमा धन पर कार्रवाई की जा सके।
- काला धन (अघोषित विदेशी आय और संपत्ति) तथा कर इम्पोजिशन अधिनियम, 2015 जुलाई 2015 से प्रभावी हुआ ताकि विशेष रूप से और प्रभावी ढंग से अघोषित आय से निपटा जा सके।
- पनामा पेपर लीक की जांच के लिए, सरकार ने सेंट्रल बोर्ड ऑफ डाइरेक्ट टैक्सेज (सीबीटीडी), रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया (आरबीआई),

प्रवर्तन निदेशालय (ईडी)तथा फाइनेंशियल इंटेलिजेंस यूनिट (एफ़आईयू) के अधिकारियों के साथ मल्टी एजेंसी ग्रुप (एमएजी) का गठन किया है।

- जानकारी के आदान-प्रदान को सुविधाजनक बनाने और उसे विस्तृत करने के लिए भारत ने विदेशी सरकारों के साथ समझौता किया है। जिसके अंतर्गत:
  - डबल टैक्सेशन अवॉयडेशन एग्रीमेंट्स (डीटीएए)पर मॉरीशस और साइप्रस जैसे टैक्स आश्रयों के साथ हस्ताक्षर किए गए हैं।
  - ऑटोमैटिक एक्सचेंज ऑफ इन्फोर्मेशन(एईओआई)के संबंध में बहुपक्षीय सक्षम प्राधिकरण समझौते में शामिल होकर टैक्स चोरी और काले धन से निपटने के लिए वैश्विक प्रयास और विदेशी खाता टैक्स अनुपालन अधिनियम (एफएटीसीए) के तहत अमेरिका के साथ सूचना साझा करने की व्यवस्था।
  - काले धन पर दबाव बनाने के लिए सरकार स्विट्जरलैंड सहित कई देशों के साथ सूचना विनिमय को स्वचालित करने का भी प्रयास कर रही है। अब तक, भारत और स्विटजरलैंड दोनों ने ओटोमेटिक एक्सचेंज ऑफ इन्फॉर्मेशन (एईओआई) पर काम करने के लिए सहमति की है।
- लोकसभा ने बेनामी लेनदेन विधेयक 2015 पारित किया, जो अज्ञात संपत्ति को पकड़ने और इस तरह की गतिविधियों में शामिल लोगों पर मुकदमा चलाने के उद्देश्य से काले धन के खिलाफ कार्रवाई का एक उपाय है।
- आयकर विभाग द्वारा सूचना प्रौद्योगिकी आधारित 'प्रोजेक्ट इनसाइट' आरंभ की गयी है।
- आय घोषणा कार्यक्रम, 2016 घोषित किया गया, जो नागरिकों के लिए उनकी अज्ञात आय को घोषित करने के लिए एक बार की माफीनुमा कोंप्लायन्स विंडो की तरह है। इस योजना के तहत, व्यक्ति अपनी अज्ञात आय को घोषित कर सकते हैं और कुल अप्रकाशित आय के 45% तक के कर, अधिभार और जुर्माने का भुगतान कर सकते हैं।
- सरकार ने क्राइम एंड क्रिमिनल ट्रैकिंग नेटवर्क के नेशनल डाटाबेस को पासपोर्ट सर्विस से जोड़कर पुलिस वेरिफिकेशन की आवश्यकता को समाप्त करने का निर्णय लिया है। इससे जहां एक ओर गलत व्यक्ति बच नहीं सकेगा वहीं दूसरी ओर सही लोग अनावश्यक प्रताड़ना से बचेंगे और भ्रष्टाचार भी रुकेगा।
- सरकार जनता से सीधे संवाद के माध्यम से जुड़ रही है ताकि उनकी समस्याएँ समय पर सरकार तक पहुँचें और समय पर उनका निदान किया जा सके।

भ्रष्टाचार का समाधान

- जन चेतना। बच्चों को विद्यालय,घर एवं गुरुजनों से अच्छे संस्कार मिलने चाहिए, जिससे कि वह भ्रष्टाचार और सदाचार में अंतर समझ सकें।
- शिक्षा व्यवस्था में नैतिकता पर बल दिया जाए।
- सतर्कता विभाग और अधिक सतर्क हों।
- डिजिटल व्यवस्था को और चुस्त दुरुस्त किया जाए।
- सभी अपनी संपत्ति का विवरण सरकार को दें।
- सरकारी अधिकारियों की डिस्क्रीशनरी पावर को सीमित करने से भी भ्रष्टाचार को कम किया जा सकता है।
- जन आंदोलन से भ्रष्टाचार को दूर करने का प्रयास किया जा सकता है।
- कार्यों में पारदर्शिता लानी होगी। किसी भी लोकतांत्रिक राजनीतिक व्यवस्था में जवाबदेही और पारदर्शिता बुनियादी मूल्य हैं। सरकार हो या नौकरशाही,पार्टियाँ हों या गैरसरकारी स्वयंसेवी संगठन, सभी की लोगों के प्रति जवाबदेही और पारदर्शिता होनी चाहिए।
- भ्रष्टाचार के विरोध में जबरदस्त लोकमत उत्पन्न किया जाना चाहिए ताकि भ्रष्टाचारियों की छवि लोगों के सामने स्पष्ट हो सके।
- भ्रष्टाचार के मामलों के लिए कानून में सख्त सजा का प्रावधान हो ताकि अन्य लोगों को भी संदेश जाए।
- इसके अतिरिक्त इसके लिए फास्ट ट्रैक कोर्ट बनाए जाएँ।
- भ्रष्टाचारियों की सूचना जनता में प्रसारित की जाए।
- अपने संगठन को भ्रष्टाचार मुक्त बनाने के लिए हम नैतिकता और सच्चाई के मार्ग पर चलने की संस्कृति बनाएँ। उच्च नैतिक आदर्श रखते हुए बुद्धिसंगत निर्णय लें। प्रशासन के भीतर पारदर्शिता और खुलापन लाएँ। सुरक्षात्मक सतर्कता हेतु सदैव चौकन्ना रहें। अपने कर्तव्य का पालन निष्ठापूर्वक करें।

भ्रष्टाचार को जड़ से उखाड़ने के लिए प्रशासन को सख्त और चुस्त बनना चाहिए। न केवल सरकार अपितु सामाजिक और धार्मिक संस्थाओं को भी आगे आना चाहिए। समाज और राष्ट्र के ईमानदार और कर्तव्यनिष्ठ सेवकों, मानवता और नैतिकता के सच्चे पुजारियों को प्रोत्साहित कर भ्रष्टाचारियों के मनोबल को तोड़ना चाहिए ताकि सच्चाई, ईमानदारी, कर्तव्यनिष्ठा का उज्ज्वल प्रकाश भ्रष्टाचार के अंधकार को दूर करने में सफल हो सके।

सुनीता शर्मा

उप महाप्रबंधक (राजभाषा)

नवीकरणीय ऊर्जा / Renewable Energy

नवीकरणीय ऊर्जा में वे सारी ऊर्जा शामिल हैं जो प्रदूषणकारक नहीं हैं तथा जिनके स्रोत का क्षय नहीं होता, या जिनके स्रोत का पुन:भरण होता रहता है। सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा, जलविद्युत ऊर्जा, जैव इंधन, बायोमास आदि नवीकरणीय ऊर्जा के कुछ उदाहरण हैं। आज भी ऊर्जा के परम्परागत स्रोत महत्वपूर्ण हैं, इस तथ्य से इनकार नहीं किया जा सकता, तथापि ऊर्जा के परम्परागत स्रोतों अथवा वैकल्पिक स्रोतों पर भी ध्यान देने की आवश्यकता महसूस की जा रही है। इससे एक ओर जहां ऊर्जा की मांग एवं आपूर्ति के बीच का अन्तर कम हो जाएगा, वहीं दूसरी ओर पारम्परिक ऊर्जा स्रोतों का संरक्षण होगा, पर्यावरण पर दबाव कम होगा, प्रदूषण नियंत्रित होगा, ऊर्जा लागत कम होगी और प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से सामाजिक जीवन स्तर में भी सुधार हो पाएगा।

आइए, हम इन नवीकरणीय ऊर्जा के बारे में कुछ संक्षिप्त जानकारी तथा इनसे ऊर्जा के उत्पादन के बारे में जानें:

सौर ऊर्जा:- सूर्य ऊर्जा का प्राथमिक स्रोत है। सूर्य ऊर्जा का सर्वाधिक व्यापक एवं अपरिमित स्रोत है, जो वातावरण में फोटॉन (छोटी-छोटी प्रकाश तरंग पेटिकाएं) के रूप में विकीरण से ऊर्जा का संचार करता है। सोलर फोटोवोल्टेइक सेल के माध्यम से सौर विकीरण सीधे डीसी करेन्ट में परिवर्तित हो जाता है। इस प्रकार, उत्पादित बिजली का उसी रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है या उसे बैटरी में स्टोर/जमा रखा जा सकता है। संग्रह की गई सौर ऊर्जा का उपयोग रात में या वैसे समय किया जा सकता है जब सौर ऊर्जा उपलब्ध नहीं हो। संभवत: पृथ्वी पर सर्वाधिक महत्वपूर्ण रासायनिक अभिक्रिया प्रकाश संश्लेषण को माना जा सकता है, अनुमानत: सूर्य की कुल ऊर्जा क्षमता-75000 x1018 किलोवाट का मात्र एक प्रतिशत ही पृथ्वी की समस्त ऊर्जा आवश्यकता की पूर्ति कर सकता है।

भारत को प्रतिवर्ष 5000 ट्रिलियन किलोवाट घंटा के बराबर ऊर्जा मिलती है। प्रतिदिन का औसत भौगोलिक स्थिति के अनुसार 4-7 किलोवाट घंटा प्रति वर्ग मीटर है। वैश्विक सौर रेडिएशन का वार्षिक प्रतिशत भारत में प्रतिदिन 5.5 किलोवाट घंटा प्रति वर्ग मीटर है। गौरतलब है कि उच्चतम वार्षिक रेडिएशन लद्दाख, पश्चिमी राजस्थान एवं गुजरात में और निम्नतम रेडिएशन पूर्वोत्तर क्षेत्रों में प्राप्त होता है। हम इसका प्रयोग दो रूप से कर सकते हैं- सौर फोटो-वोल्टेइक और सौर तापीय।

सौर ऊर्जा को सीधे विद्युत में परिवर्तित करने की युक्तियां सौर सेल (Solar Cells) कहलाती हैं। सर्वप्रथम व्यावहारिक सौर सेल 1954 में बनाया गया जो लगभग 1% सौर ऊर्जा को विद्युत में परिवर्तित कर सकता था। वहीं आधुनिक सौर सेलों की दक्षता 25% है। इनके निर्माण में सिलिकन का प्रयोग होता है। एक सामान्य सौर सेल लगभग 2 वर्ग सेंटीमीटर क्षेत्रफल वाला अतिशुद्ध सिलिकन का टुकड़ा होता है जिसे धूप में रखने पर वह 0.7 वाट (लगभग) विद्युत उत्पन्न करता है। जब बहुत अधिक संख्या में सौर सेलों को जोड़कर इनका उपयोग किया जाता है तो इस व्यवस्था को सौर पैनल कहते हैं। सिलिकन का लाभ यह है कि यह प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है तथा पर्यावरण हितैषी है तथा पृथ्वी पर पाए जाने वाले तत्वों में सिलिकन दूसरे स्थान पर है परंतु सौर सेल बनाने हेतु विशेष श्रेणी के सिलिकन की उपलब्धता सीमित है। सौर सेल विद्युत के स्वच्छ पर्यावरण हितैषी तथा प्रदूषण रहित स्रोत हैं परन्तु फिर भी इनका उपयोग सीमित उद्देश्यों की पूर्ति हेतु हो रहा है।

पवन ऊर्जा:- पवन स्थल या समुद्र में बहने वाली हवा की एक गति है। पवन चक्की के ब्लेड जिससे जुड़े होते हैं उनके घुमाने से पवन चक्की घूमने लगती है जिससे पवन ऊर्जा उत्पन्न होती है। शाफ्ट का यह घुमाव पंप या जनरेटर के माध्यम से होता है तो बिजली उत्पन्न होती है। यह अनुमान है कि भारत में 49,132 मेगावॉट पवन ऊर्जा का उत्पादन करने की क्षमता है। वायु की गति के कारण अर्जित गतिज ऊर्जा पवन ऊर्जा होती है। यह एक नवीकरणीय ऊर्जा स्रोत है। आधुनिक पवन चक्कियों का निर्माण इस प्रकार किया जाता है कि वे पवन ऊर्जा को यांत्रिक या विद्युत ऊर्जा में परिवर्तित कर सकें।

पवन ऊर्जा का इस्तेमाल विद्युत उत्पन्न करने के अतिरिक्त, सिंचाई के लिए जल की पम्पिंग में किया जा सकता है। गैर परम्परागत ऊर्जा स्रोत मंत्रालय(एमएनईएस)की वार्षिक रिपोर्ट (2004-05) के अनुसार, भारत में तटीय पवन ऊर्जा क्षमता 45,000 मेगावाट मूल्यांकित की गई है जो कि पवन ऊर्जा सृजन के लिए उपलब्ध

भूमि का 1% है। हालाँकि तकनीकी क्षमता को 13,000 मेगावाट के लगभग सीमित किया गया है। पवन ऊर्जा उत्पादन क्षमता में विश्व में भारत का पांचवां स्थान है।

गुजरात, तमिलनाडु, महाराष्ट्र और ओडीशा जैसे तटीय राज्यों का पवन ऊर्जा के संदर्भ में बेहतर स्थान है, क्योंकि इन राज्यों के तटीय क्षेत्रों में पवन की गति निरंतर 10 किमी प्रति घंटा से भी अधिक रहती है। घरेलू और साथ ही निर्यात बाजार की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए विंड टरबाइन्स और इनके साधक (कम्पोनेंट) के निर्माण में उल्लेखनीय संवृद्धि दर्ज की गई है।

जलविद्युत ऊर्जा:- जल से उत्पन्न की गई विद्युत शक्ति को जलविद्युत ऊर्जा कहते हैं। विद्युत शक्ति के जनन की विधियों में जलविद्युत बहुत महत्वपूर्ण है। विश्व की संपूर्ण विद्युत शक्ति का एक तिहाई भाग जलविद्युत के रूप में प्राप्त होता है। न केवल गिरते हुए जल में निहित ऊर्जा का उपयोग शक्ति जनन के लिए किया जा सकता है, वरन् बहते हुए पानी में निहित गतिज ऊर्जा (Kinetic Energy) का उपयोग भी शक्ति जनन के लिए किया जा सकता है। इसके लिए सबसे पहले ऐसे स्थान का चुनाव करना होता है, जहाँ बाँध बाँधकर प्रचुर मात्रा में पानी जमा किया जा सके और उसमें निहित शक्ति को विद्युत शक्ति के जनन के लिए जल को आवश्यकतानुसार नलों अथवा खुली नहर के द्वारा बिजलीघरों में प्रयुक्त किया जा सके। बाँध के ऊपर एक और अग्रताल (Forebay) बनाया जाता है, जहाँ से पानी खुली नहर अथवा नलों द्वारा बिजलीघर तक ले जाया जाता है। यह पानी बिजलीघर में स्थित बड़े बड़े टरबाइनों को चलाता है, जिनसे योजित जनित्रों में विद्युत शक्ति का जनन होता है। टरबाइन, सीमेंट कंक्रीट के बने ड्राफ़्ट ट्यूब (Draft Tube) के मुख पर अवस्थित होता है। पानी गाइड वेन (Guide Vanes) में होता हुआ टरबाइन के ब्लेडों (Blades) को घुमाता है और इस प्रकार अपने निहित ऊर्जा का टरबाइन के चलाने में उपयोग करता है। चलते हुए टरबाइन की यांत्रिक ऊर्जा विद्युत ऊर्जा में रूपांतरित कर दी जाती है और इस प्रकार जल में निहित ऊर्जा जलविद्युत का रूप ले लेती है।

टरबाइन में इस प्रकार पानी में निहित शक्ति का उपयोग हो जाने के पश्चात, पानी ड्राफ्ट-ट्यूब में से होता हुआ विसर्जनी कुल्या (Tail Race) में जाता है, जहाँ से वह फिर नदी में जा मिलता है।

जैव ईंधन:- जैव ईंधन मुख्यत: सम्मिलित बायोमास से उत्पन्न होता है अथवा कृषि या खाद्य उत्पाद या खाना बनाने और वनस्पति तेलों के उत्पादन की प्रक्रिया से उत्पन्न अवशेष और औद्योगिक संसाधन के उप-उत्पाद से उत्पन्न होता है। जैव ईंधन में किसी प्रकार का पेट्रोलियम पदार्थ नहीं होता है किंतु इसे किसी भी स्तर पर पेट्रोलियम ईंधन के साथ जैव ईंधन का रूप भी दिया जा सकता है। इसका उपयोग परंपरागत निवारक उपकरण या डीजल इंजन में बिना प्रमुख संशोधनों के साथ उपयोग किया जा सकता है। जैव ईंधन का प्रयोग सरल है, यह प्राकृतिक तौर से नष्ट होने वाला सल्फर तथा गंध से पूर्णतया मुक्त है। इथेनॉल का प्रयोग मुख्य रूप से रसायन उद्योगों, दवा क्षेत्र में कच्चे माल के तौर पर होता है। जटरोफा कुरकास, करंज, होग इत्यादि अन्य खाद्य एवं गैर खाद्य शक्तिशाली जैव ईंधन हैं।

जैव ईंधन ऊर्जा का एक महत्वपूर्ण स्रोत है जिसका देश के कुल ईंधन उपयोग में एक-तिहाई योगदान है और ग्रामीण परिवारों में इसकी खपत लगभग 90 प्रतिशत है। जैव ईंधन का व्यापक उपयोग खाना बनाने और उष्णता प्राप्त करने में किया जाता है। उपयोग किये जाने वाले जैव ईंधन में शामिल हैं- कृषि अवशेष, लकड़ी, कोयला और सूखा गोबर जट्रोफा इत्यादि। यह स्थानीय रूप से उपलब्ध होता है। जीवाश्म ईंधन की तुलना में यह एक स्वच्छ ईंधन है। एक प्रकार से जैव ईंधन, कार्बन डाइऑक्साइड का अवशोषण कर हमारे परिवेश को भी स्वच्छ रखता है। इसके अतिरिक्त इसमें कुछ समस्याएं भी आती हैं जैसे- ईंधन को एकत्रित करने में कड़ी मेहनत करनी पड़ती है। खाना बनाते समय और घर में रोशनदान (वेंटीलेशन) नहीं होने के कारण गोबर से बना ईंधन वातावरण को प्रदूषित करता है, जिससे स्वास्थ्य गंभीर रूप से प्रभावित होता है। जैव ईंधन के लगातार और पर्याप्त रूप से उपयोग न करने के कारण वनस्पति का नुकसान होता है जिसके चलते पर्यावरण के स्तर में गिरावट आती है।

बायोमास ऊर्जा:- यह जैव ऊर्जा का एक रूप है। जैविक पदार्थों का उपयोग ऊर्जा उत्पादन के लिए किया जाता है। पादप एंजाइम, जीवाणु आदि ऊर्जा के महत्वपूर्ण स्रोत हैं। जैव पदार्थों से ऊर्जा प्राप्त करने की अनेक विधियाँ प्रचलित हैं। एक तो पादप को सीधे जलाकर ऊर्जा प्राप्त की जाती है, जिससे प्राप्त ऊर्जा की मात्रा भी कम होती है और उससे प्रदूषण भी फैलता है। परन्तु, यदि वैज्ञानिक तकनीक से जैवाण्विक संवर्द्धन द्वारा मीथेन का निर्माण कर अथवा यीस्ट फर्मेण्टेशन से इथेनॉल का निर्माण कर ऊर्जा प्राप्त की जाती है, तो इससे अधिक ऊर्जा भी प्राप्त होती है और प्रदूषण भी कम फैलता है। बायोमास या जैव ऊर्जा मुख्यत: पौधों और कूड़ों-कचड़ों से प्राप्त की जा रही है। पौधों से बायोमास प्राप्त करने के लिए तीव्र विकास वाले पौधों को बेकार पड़ी जमीन पर उत्पादित किया जा रहा है। इनसे प्राप्त लकड़ियों के गैसीकरण से ऊर्जा प्राप्त की जाती है।

बायोमास ऊर्जा पर राष्ट्रीय कार्यक्रम का उद्देश्य विविध प्रकार की बायोमास सामग्री का अधिकतम उपयोग करना है। इसमें वन और कृषि उद्योग आधारित अवशिष्ट, ऊर्जा समर्पित वृक्षारोपण के अतिरिक्त दक्ष और आधुनिक तकनीकी परिवर्तन के माध्यम से वन और कृषि अवशिष्टों से ऊर्जा उत्पादन शामिल है। इसमें दहन एवं गैसीकरण तकनीक शामिल हैं। इसके लिए बने संयंत्रों में गैस/भाप टरबाइन, दोहरा ईंधन इंजन या इनका मिश्रण, जिनका उपयोग केवल बिजली उत्पादन या ऊर्जा के एक से अधिक प्रकारों के सह-उत्पादन के लिए कैप्टिव उपयोग या ग्रिड बेचने के लिए किया जाता है। ये अक्षय हैं, व्यापक रूप से उपलब्ध हैं तथा कार्बन तटस्थ हैं और साथ ही साथ इसमें ग्रामीण क्षेत्रों में प्रचुर उत्पादनकारी रोजगार देने की क्षमता भी है।

भारत सरकार ने वर्ष 2022 तक नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों द्वारा 175 गीगावाट ऊर्जा उत्पादन का लक्ष्य निर्धारित किया है। इसके अंतर्गत 60 गीगावाट पवन ऊर्जा, 100 गीगावाट सौर ऊर्जा, 10 गीगावाट बायोमास ऊर्जा एवं 5 गीगावाट छोटे जल विद्युत ऊर्जा उत्पादन द्वारा प्राप्त किया जाना है।

जीआरएसई नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय, भारत सरकार को जमा किए गए अपनी हरित ऊर्जा प्रतिबद्धता पत्र के तहत वर्ष 2021-22 तक 1 मेगावाट नवीकरणीय ऊर्जा परियोजना स्थापित करने के लिए प्रतिबद्ध है।

जीआरएसई द्वारा क्रियान्वित की जा रही विभिन्न नवीकरणीय ऊर्जा (सौर एवं बायोमास ऊर्जा) परियोजनाओं का विस्तृत ब्यौरा आगे दर्शाया गया है:

जीआरएसई द्वारा स्थापित सौर ऊर्जा - विस्तृत ब्यौरा

वर्ष 2014-15
- क्षमता - 100 किलोवाट
- स्थान - ईएस रूफ टॉप
- स्थिति - 31 दिसम्बर 2014 से संचालित

वर्ष 2015-16
- क्षमता - 200 किलोवाट
- स्थान - मॉडर्न हल शॉप रूफ टॉप
- स्थिति - 28 मार्च 2016 से संचालित

वर्ष 2016-17
- क्षमता - 200 किलोवाट
- स्थान - मॉडर्न हल शॉप रूफ टॉप
- स्थिति - 28 फरवरी 2017 से संचालित

वर्ष 2017-18
- क्षमता - 100 किलोवाट
- स्थान - मशीन शॉप रूफ टॉप
- स्थिति - 28 फरवरी 2018 तक संचालन

शेष 400 किलोवाट वर्ष 2018-19 से 2021-22 तक पूरा किया जाएगा।

***जीआरएसई वर्ष 2017-18 में एक पूर्वनिर्मित कंटेनरिड बायोगैस संयंत्र भी आरंभ करने जा रही है। जिसकी क्षमता 15 CUM होगी।**

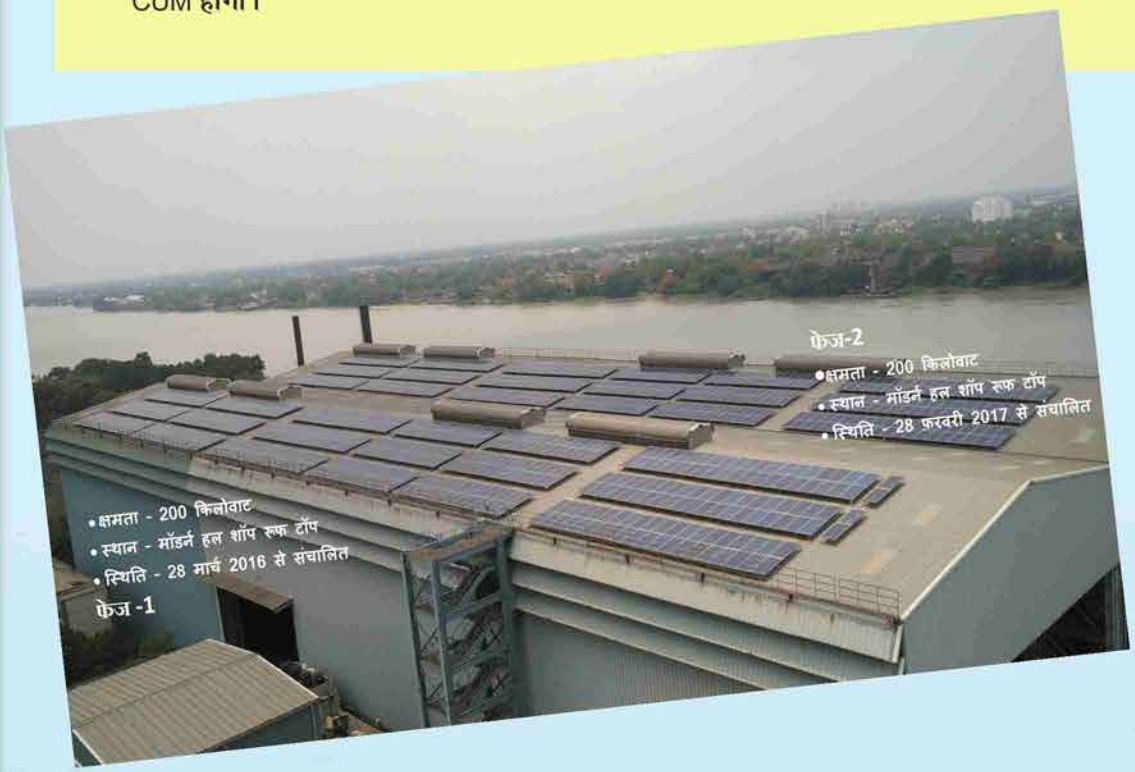

रवि किशन
उप प्रबंधक,
यार्ड आधुनिकीकरण
मेन यूनिट

डिजिटलीकरण - एक सुदृढ़ भारतीय लोकतन्त्र

"कागजी काम कम होगा जब डिजिटल होगा देश का जन जन"
भारत का गणतन्त्र दुनिया का सबसे बड़ा लोकतन्त्र है। लोकतन्त्र भारत की जीवन रेखा है। यह हमारा अस्तित्व तंत्र है। विधानमंडल, कार्यकारी, न्यायपालिका और मीडिया भारतीय लोकतन्त्र के चार स्तंभ माने जाते हैं। सफल लोकतान्त्रिक देशों के लिए इन स्तंभों का योगदान समान रूप से महत्वपूर्ण है। लोकतन्त्र में या सरकार के किसी भी रूप में मीडिया अन्य सभी तीन संस्थाओं के काम पर सार्वजनिक भावनाओं और विचारों का प्रतिनिधित्व करती है। भारतीय लोकतन्त्र की विशेषता यह है कि ये विभिन्न विचारों और आदर्शों को शांतिपूर्ण तरीके से सह अस्तित्व प्रदान करती है।

सन 1947 में आजादी के बाद भारत विश्व के सबसे बड़े लोकतन्त्र देश के रूप में उभरा। भारतीय लोकतन्त्र को और अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए लोगों को पर्याप्त रूप से शिक्षित करने की आवश्यकता है। इसके लिए पूरे भारत को डिजिटल इंडिया बनाने पर ज़ोर देना पड़ेगा।

डिजिटलीकरण का क्या अर्थ है ?

डिजिटलीकरण एनालॉग संकेतों या किसी भी रूप की जानकारी को एक डिजिटल स्वरूप में परिवर्तित करने की प्रक्रिया है जिसे कंप्यूटर सिस्टम या इलेक्ट्रोनिक उपकरणों द्वारा समझा जा सकता है। शब्द पाठ, चित्र या आवाज और ध्वनियों जैसी जानकारी द्विधारी कोड (बाइनरी कोड अंक 0 या 1) में परिवर्तित करते समय शब्द का उपयोग किया जाता है। डिजिटाइज्ड जानकारी को स्टोर करना, पहुंचाना और संचारण करना बहुत ही आसान है। साथ ही अन्य प्रकार के उपभोक्ता इलेक्ट्रोनिक उपकरणों द्वारा भी डिजिटलीकरण का उपयोग किया जा सकता है।

भारत की डिजिटल क्रान्ति

डिजिटलीकरण ने देश और दुनिया में गहरी क्रांति लाई है। जुलाई 2015 में भारत सरकार ने इन्टरनेट कनेक्टिविटी को मजबूती देने और ऑनलाइन इन्फ्रास्ट्रक्चर में सुधार के जरिए नागरिकों को सरकारी सेवाएँ उपलब्ध कराने के लिए राष्ट्रीय 'डिजिटल इंडिया' पहल की शुरुआत की है, जिसके अंतर्गत प्रशासन की सर्वोच्च प्राथमिक योजना का उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों को उच्च गति वाले नेटवर्क से जोड़ना और डिजिटल साक्षरता को बढ़ावा देना है।

"ऑनलाइन और मोबाइल बैंकिंग के द्वारा लेन-देन की शुरुआत कर दें तो ये भ्रष्टाचार और काले धन से मुक्त भारत के लिए हमारा एक बड़ा योगदान होगा"। -श्री नरेंद्र मोदी

भारतीय लोकतन्त्र का डिजिटलीकरण

डिजिटलीकरण के अंतर्गत कई योजनाओं द्वारा भारतीय लोकतन्त्र में बड़े परिवर्तन लाने की सरकार द्वारा पहल शुरू हो गई है। इस योजना में 'डिजिटल इंडिया प्रोग्राम' और 'स्टार्ट अप इंडिया' जैसे कार्यक्रम शामिल हैं जिनका उद्देश्य समाज को सशक्त और ज्ञानवर्धक बनाना है। डिजिटाइजेशन कार्यक्रम को कार्यान्वित करने के लिए सार्वजनिक और निजी भागीदारी को प्राथमिकता दी जा रही है। इस कार्यक्रम के अंतर्गत कई परियोजनाएँ शामिल हैं :-

- आधार कार्ड जैसे प्रावधान, जो प्रत्येक नागरिक को एक डिजिटल पहचान संख्या के साथ एक डिजिरूप प्रदान करता है, जिससे सरकार का काम और नियोजन करना आसान और सुविधाजनक हो जाएगा।

- डिजिटलीकरण द्वारा हम यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि देश के सभी छात्रों को शिक्षा की समान गुणवत्ता प्राप्त हो। इसमें सभी विषयों में प्रतिष्ठित व्यक्तियों द्वारा वीडियो व्याख्यान रिकॉर्ड करके सभी सरकारी स्कूलों में उन्हें उपलब्ध करवा कर किया जा सकता है। वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग तथा परंपरागत कक्षा अध्यापन के साथ ई-पुस्तकें समान शिक्षा सुनिश्चित करने में काफी मददगार हो सकती हैं। इस तरह से डिजिटलीकरण सबको समान अवसर प्रदान करता है जो लोकतन्त्र का मुख्य मूल्य है।

- डिजिटलीकरण यह सुनिश्चित करता है कि सार्वजनिक सामान और सेवाएँ लोगों तक प्रभावी ढंग से पहुँचें। इसके अंतर्गत अब सभी सेवाएँ ऑनलाइन कर दी गई हैं ताकि लोगों को लंबी कतार में खड़े रहने की जरूरत न पड़े। पैन कार्ड, पासपोर्ट के लिए आवेदन, रेलवे टिकट बुकिंग, यहाँ तक कि बिलों का भुगतान भी ऑनलाइन

हो गया है। लगभग हर सेवा के लिए एक शिकायत प्रणाली भी बन गई है। इस तरह डिजिटलीकरण लोकतन्त्र के मूल्य को बनाए रखते हुए लोगों को प्रभावी ढंग से समान सेवा प्रदान कर रहा है।

- लोगों का स्वास्थ्य और कल्याण – सरकार की ज़िम्मेदारी है कि डिजिटाइजेशन की मदद से स्वास्थ्य क्षेत्र में लोग डॉक्टर, दवाइयों की उपलब्धता की जांच कर सकते हैं और साथ ही पंजीकरण भी कर सकते हैं। उदाहरण के तौर पर एम्स अस्पताल के मामले में इस तरह की सेवा टीसीएस द्वारा प्रदान की जा रही है।

- मतदान लोकतन्त्र की सबसे बड़ी पहचान है। डिजिटलीकरण ने इसी मतदान की प्रक्रिया को कम करके इसे अधिक सुविधाजनक बनाकर नागरिक भागीदारी बढ़ा दी है। ई-वोटिंग एक चुनाव प्रणाली है, जो कि मतदाता को अपने सुरक्षित और गुप्त मतदान को इलेक्ट्रोनिक रूप से रिकॉर्ड करने की अनुमति देती है।

- डिजिटाइजेशन मीडिया को बहुत शक्तिशाली बनाता है और सामान्य जनता तक पहुंचाता है। आज प्रत्येक जानकारी, रिपोर्ट, पत्रिकाएँ आदि ऑनलाइन उपलब्ध हैं जो लोगों को सरकार के बारे में जागरूक करते हैं।

सारांश :

डिजिटलीकरण एक सह भागिता वाले लोकतन्त्र को सुनिश्चित करता है, जिसके तहत हर नागरिक सरकार के कार्यों में अहम भूमिका निभाने में सक्षम हो जाता है तथा नवीन विचारों और व्यावहारिक समाधानों के साथ आता है। यह हमारे देश को बदलने का उत्तम मंच प्रदान करता है और साथ ही सभी नागरिकों को भागीदारी का समान अवसर प्रदान करता है। यह हर नागरिक को डिजिटल सेवाओं, ज्ञान और सूचना तक अपनी पहुँच बनाने के लिए सक्षम बनाता है। डिजिटलीकरण वास्तव में भारतीय लोकतन्त्र को मजबूत कर रहा है और एक नए स्तर पर इसके दायरे को विस्तृत करके देश को 'डिजिटल इंडिया' बना रहा है।

सौरिस सामन्ता
प्रबन्धक, निपटान विभाग
मेन यूनिट

जिंदगी एक सफर

ये जिंदगी है अजीब सी
राह में मुश्किल आ जाने से,
मंजिल तेरे भटक जाने से,
बिछड़ना है तो मिलना भी होगा।
पतझड़ है तो सावन भी होगा।

दुख से सुख
रात से दिन हुआ करता है।
दो पल रुक कर फिर आगे बढ़
नए हौसले के साथ आगे चल।

हिम्मत रख, धीरज धर
कर दे नई शुरुआत
हर हार के बाद विजय आती है।
कौन सी मुश्किल है ऐसी जिसका न हो समाधान।

जिसने कभी न साहस खोया
उसके आगे झुकता है संसार।
चल मानव जीवन के पथ पर
जिंदगी में जोखिम तो लेना है।

आप जीतिए आप लीडर बन गए,
आप हारिए तो आप गाइड बन गए।

मिठु पाल
पर्यवेक्षक, पीपी एण्ड सी विभाग
मेन यूनिट

भ्रष्टाचार को मिटाना है, देश को आगे बढ़ाना है

मुझे भारतीय होने पर गर्व है। भारत एक ऐसा देश है जहाँ लोग अलग अलग भाषा बोलते हैं और विभिन्न जाति, धर्म, संप्रदाय और संस्कृति के लोग एक साथ रहते हैं। हम गर्व के साथ कहते हैं कि ऐसी "विविधता में एकता" दुनिया में और किसी भी देश में देखने को नहीं मिलेगी।

लेकिन हमारे देश की इस अच्छी छवि के पीछे कुछ ऐसा दर्द भी छुपा हुआ है जो हमारे देश को विकास की ओर जाने के लिए हमेशा रोकता रहता है। किसी भी देश का विकास तभी सम्भव है जब देश में बेरोजगारी, जनसंख्या और अशिक्षा की मात्रा कम होती है, लेकिन हमारे देश में ये समस्याएँ सबसे ज्यादा हैं। ऐसा नहीं कि देश की इस समस्या से निपटने के लिए जिम्मेदार लोग चिंतित नहीं हैं। इस समस्या को दूर करने के लिए कई कदम उठाए गए, लेकिन सफलता की ओर मंजिल आज भी अधूरी ही है और इसका कारण है भ्रष्टाचार। भ्रष्टाचार एक बीमारी की तरह भारतीय समाज में सबसे तेजी से उभरने वाला मुद्दा है। भ्रष्टाचार हमारी राष्ट्रीय समस्या है। कोई भी मंत्रालय, कोई भी विभाग नहीं बचा है जहाँ पर भ्रष्टाचार के आरोप न लगे हों। भ्रष्टाचार जैसी बीमारी को दूर करने के लिए सब से पहले हमें यह जानना बहुत जरूरी है कि भ्रष्टाचार के कारण क्या हैं और इसका निवारण कैसे किया जा सकता है।

भ्रष्टाचार के कारण

इंसान की शिक्षा सबसे पहले शुरू होती है अपने ही घर से। जब इंसान उम्र में छोटा होता है तब अपने माता पिता से सीखता है कौन सा काम करना उचित है और कौन सा अनुचित। यही शिक्षा उसके आचरण पर भी प्रभाव डालती है। लेकिन, बच्चों के नैतिक उत्थान के प्रति लापरवाही उनके पूरे जीवन को प्रभावित करती है। अर्थात, जब जीवन की पहली सीढ़ी पर ही उचित मार्गदर्शन, नैतिकता का पाठ और उचित अनुचित में भेद करने का ज्ञान उसके पास नहीं होता, तो उसका आचरण धीरे धीरे उसकी आदत में बदलता जाता है। यही आदत आगे जा कर उसे भ्रष्टाचार करने का उत्साह देती है।

इंसान की सब से बड़ी कमजोरी यह होती है कि वो आसानी से हर काम पूरा करना चाहता है। इसीलिए वो हमेशा आसान रास्ता खोजने का प्रयास करता है। तभी वो कानून का सही रास्ता छोड़ कर गलत तरीके से अपना लक्ष्य हासिल करने की कोशिश करता है। इस में वह खुद तो भ्रष्ट होता ही है, दूसरों को भी भ्रष्ट बनने मे बढ़ावा देता है।

इंसान की चाहत कभी पूरी नहीं होती। अमीर आदमी तो अपनी धन दौलत से अपनी चाहत पूरा कर लेता है लेकिन गरीब आदमी जब आर्थिक समस्या के कारण अपनी न्यूनतम आवश्यकताएँ भी पूरी नहीं कर पाता तब वह चाहत को पूरा करने के लिए गलत तरीके अपनाता है। यही गलत तरीका उसे भ्रष्टाचार की ओर धकेल देता है।

कभी कभी इंसान जब गलत तरीके से धन कमाता है तब वो और अधिक धन पाने को लालायित होता है। नई नई सुख सुविधाओं की तलाश करता है और उसे लगता है कि जिस रास्ते में वो चल रहा है वही सही रास्ता है। यही कारण है कि एक दिन वो भ्रष्टाचार के चक्रव्यूह में फँस जाता है।

भ्रष्टाचार का एक और कारण है सिस्टम की लापरवाही। भ्रष्टाचार को मिटाने के लिए सिस्टम में तमाम ऐसी खामियाँ होती हैं कि अगर कभी कोई भ्रष्टाचार करते हुए पकड़ा भी जाता है तो भ्रष्टाचारी को सजा दिलाना ही मुश्किल हो जाता है। जब भ्रष्टाचारी को सही समय पर सजा नहीं मिलती तो आम आदमी की भी इसके विरुद्ध लड़ने की इच्छा कम हो जाती है। आम जनता के सहने की क्षमता बढ़ जाती है। तब वह यही सोचता है कि भ्रष्टाचार के विरुद्ध लड़ने का कोई फायदा नहीं। इसकी खिलाफत करने के लिए समाज में ऐसा कोई मजबूत लोक मंच भी नहीं है जहाँ पर लोग भ्रष्टाचार के विरुद्ध अपनी आवाज़ उठा सकें।

सवाल यह है कि भ्रष्टाचार जैसी सामाजिक समस्या का समाधान कैसे किया जा सकता है? ये रास्ता कठिन है पर असम्भव नहीं लेकिन, उसके लिए हमें कदम उठाने पड़ेंगे :

- बच्चों को अपने ही घर पर माता पिता से अच्छे संस्कार मिलने चाहिए। विद्यालय में छात्रों को अच्छी शिक्षा मिलनी जरूरी है

जिससे कि वे भ्रष्टाचार और सदाचार में अंतर समझ सकें और आगे चलकर सदाचार को अपनाएं।

- ऑफिस में भ्रष्टाचार के विरुद्ध चेतना बढ़ाने के कार्यक्रम होने चाहिए।
- ये ध्यान रखना जरुरी है कि ऊँचे पद के अधिकारी यदि भ्रष्टाचार ना करें तब छोटे कर्मचारियों को भ्रष्टाचार से रोकना सम्भव है।
- जन आंदोलन से भी भ्रष्टाचार को दूर किया जा सकता है।
- जन प्रतिनिधियों के खिलाफ अगर कोई भी मामला दर्ज होता है तो जल्दी ही उसकी जांच होनी जरुरी है। उन्हें अपने आपको सच्चा प्रमाणित करना पड़ेगा, नहीं तो उन्हें दंड दिया जाएगा।
- भ्रष्टाचार से निपटने के लिए कठोर और प्रभावी कानून व्यवस्था का होना तो अति आवश्यक है ही साथ ही देश में गरीब और अमीर के बीच में फासला जितना कम होगा, भ्रष्टाचार भी उतना ही कम होगा। सरकार को इन क्षेत्रों में ध्यान देना होगा।
- भ्रष्टाचार को रोकने के लिए हर स्थान पर एक यूनीक फ़ोन नंबर होना चाहिए। जिससे कि भ्रष्टाचार की कोई घटना होने पर तुरंत उस नंबर में डायल करके अधिकारी को सूचित किया जा सके।

सबसे बेहतर उपाय यह है कि लोगों के अंदर अच्छी भावना जागृत होनी चाहिए। लोगों के मन में यह सोच विकसित होनी चाहिए कि वे भ्रष्टाचार किए बिना भी सफल हो सकते हैं, ऊचाई पर पहुँच सकते हैं। उम्मीद है कि वो दिन दूर नहीं जब हम सब मिलकर देश से भ्रष्टाचार को खतम करने में कामयाब होंगे और विकास का झंडा लहराएंगे।

कौशिक तालुकदार
पर्यवेक्षक (स्टोर)
मेन यूनिट

देने का आनंद लेने में नहीं

फ लदायी पेड़ कभी नहीं मांगता अपने लिए फल,
बारिश ओर बादल कभी नहीं कहते हमें चाहिए जल।

सूरज देव तो कभी नहीं कहता ताप में है मेरा भाग,
फूल और पौधे ने भी कभी नहीं मांगा खूशबु में अपना भाग ।

जलती मशाल ने कहा नहीं कभी, मेरे लिए भी रोशनी दो,
बहती नदियाँ कभी नहीं मांगती कुछ जल हमें भी दो ।

धरती माँ ने तो कभी नहीं मांगी मिट्टी में उपजी फसल,
माँ ने भी हमारी कभी नहीं मांगा ममता का मोल।

दान के बदले प्रतिदान की कभी ना करेंगे आशा हम,
प्रतिदान की कोई आशा रखे तो दान का महत्व होता कम ।

देने का आनंद लेने में नहीं है, यह नियम प्रकृति का,
चलो हम सब बांटें समाज में खुशियाँ जिंदगी की ।

बिजय कुमार दास
वरिष्ठ प्रबन्धक (वित्त)
तातला यूनिट

समय का चक्र

समय समय पर समय इतिहास बन जाता है,
समय होनी अनहोनी समय कहीं खास बन जाता है।

समय रोग निरोग समय मनमीत बन जाता है,
समय योग वियोग समय गीत संगीत बन जाता है।

समय धर्म अधर्म समय पुण्य और पाप बन जाता है,
समय अच्छा-बुरा, समय न्याय-अन्याय व पश्चाताप बन जाता है।

समय ही दूरी समय ही यादगार बन जाता है,
समय ही मजबूरी समय जीत और हार बन जाता है।

समय के नियमित फेर से दिन रात बन जाता है,
समय ऋतु, मौसम, सर्दी, गर्मी व बरसात बन जाता है।

समय आना जाना, समय ही बहाना बन जाता है।
समय ही दुनियादारी, समय ही जमाना बन जाता है।

समय ही जवाब, समय ही सवाल बन जाता है।
समय जीवन मृत्यु, समय ही अकाल बन जाता है।

समय से पहले, समय के बाद कुछ हाथ नहीं आता है।
समय का रहस्य है कि अंत समय कुछ साथ नहीं जाता है।

समय की आज्ञा बिना पत्ता भी नहीं हिल पाता है।
समय तो अनमोल सब कुछ समय ही करवाता है।

समय मौन ध्यान समय ज्ञान विज्ञान बन जाता है।
समय सुख दुख समय मान अपमान बन जाता है।

समय की पहचान, समय का सदुपयोग वरदान बन जाता है।
"जय भगवान" समय बड़ा बलवान जो भूत, भविष्य व वर्तमान बन जाता है।

जय भगवान
सुरक्षा नायक
61 पार्क यूनिट

देश की विकास दर को है बढ़ाना, भ्रष्टाचार को जड़ से है निकालना

भ्रष्टाचार वैसे तो एक सामान्य सा शब्द है जिसका प्रयोग हम प्रतिदिन करते हैं। भ्रष्टाचार का तात्पर्य है भ्रष्ट आचरण या व्यवहार। ऐसा व्यवहार जो सिर्फ अपने मतलब के लिए अनैतिक और गलत तरीके से किया गया हो। इसका इतिहास बहुत ही पुराना है। जब भारत अंग्रेजों का गुलाम था उसी समय 'फूट डालो शासन करो' की नीति के साथ भ्रष्टाचार ने भारत में जन्म ले लिया था। इस बदलते समय के साथ भ्रष्टाचार ने भी विकराल रूप ले लिया है। यदि आज इसे रोका नहीं गया तो यह एक लाइलाज बीमारी की तरह हो जाएगा। विश्व में भ्रष्टाचार के मामले में भारत का 94वां स्थान है।

वर्तमान में भ्रष्टाचार के प्रकार :

- निजी दफ्तरों से सरकारी दफ्तरों तक भ्रष्टाचार – अपने काम को शीघ्रता से करवाने के लिए छोटे से दफ्तर से लेकर बड़े दफ्तरों तक को रिश्वत देकर हर कोई अपना काम आसानी से करा लेता है। एक छोटे से निजी दफ्तर से लेकर बड़े बड़े सरकारी विभाग में भ्रष्टाचार में लिप्त लोग दिखाई दे सकते हैं।

- मीडिया में भ्रष्टाचार – आज हर व्यक्ति के पास सोशल नेटवर्किंग के साधन उपलब्ध हैं। मीडिया एक अच्छी व बुरी सूचना का माध्यम बन गया है। इस माध्यम को कुछ लोगों ने खरीदकर अपने अनुसार संचालित कर लिया है, जिससे भ्रष्टाचार को और भी बढ़ावा मिल गया है। लेकिन इसे रोकने के लिए भी सरकार ने अनेक कदम उठाए हैं।

- राजनीतिक भ्रष्टाचार – इस क्षेत्र में भी काफी भ्रष्टाचार था लेकिन पिछले कुछ समय से चुनाव आयोग ने महत्वपूर्ण कदम उठा कर इस पर नकेल कसी है।

- व्यापार में भ्रष्टाचार – छोटे व्यापारी से लेकर बड़े उद्योगपति, सभी पैसा खिलाकर भ्रष्टाचार को बढ़ावा दे रहे हैं। चीजों में मिलावट, कालाबाजारी, टैक्स की चोरी करके भ्रष्टाचार को बढ़ावा दिया जा रहा है।

भ्रष्टाचार से मुक्ति – भ्रष्टाचार से मुक्ति के लिए नैतिकता का होना जरूरी है। इसके बिना भ्रष्टाचार, चाहे वह सामाजिक भ्रष्टाचार हो या आर्थिक भ्रष्टाचार कभी खत्म नहीं हो सकता। भ्रष्टाचार को समाप्त करने के तरीके:

- कठोर और प्रभावी कानून व्यवस्था – देश में भ्रष्टाचार और अपराध से निपटने के लिए कठोर और प्रभावी कानून व्यवस्था का होना अति आवश्यक है। इसके लिए पुलिस और अन्य सरकारी संस्थान सही तरीके से काम करें। जिसके लिए जरूरी है एक यूनीक नंबर का होना, जिसके मिलते ही वह सुविधा आम जनता को सही समय पर दी जा सके।

- आत्म नियंत्रण और नैतिक उत्थान – केवल कानून से भ्रष्टाचार पर सीमित नियंत्रण हो सकता है। इसके लिए जरूरी है कि बच्चों को ईमानदारी और नैतिकता की शिक्षा दी जाए। शिक्षा पद्धति में नैतिक मूल्यों, आत्म नियंत्रण, राष्ट्र के प्रति कर्तव्य जैसे विषयों का समावेश होना चाहिए।

- आर्थिक असमानता को दूर करना – देश में बढ़ती आर्थिक असमानता समाज में कुंठा को जन्म देती है। गरीबी और आर्थिक असमानता नैतिक मूल्यों को खत्म कर देती है। इस पर नियंत्रण पाकर ही देश को प्रभावी ढंग से चलाया जा सकता है।

- भ्रष्टाचारी लोगों की वजह से ही भारत महाशक्ति बनने से दूर होता जा रहा है। ये भ्रष्टाचार अपनाकर भारत के विकास में रोक लगाते हैं। इसे रोकने के लिए युवाओं को आगे बढ़ना होगा और बदलाव की क्रान्ति लानी होगी।

पारदर्शिता – विकास की कुंजी – प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी का दृढ़ विश्वास है कि पारदर्शिता और जवाबदेही किसी भी जन हितैषी सरकार के दो आधार स्तम्भ हैं। पारदर्शिता और जवाबदेही न केवल लोगों को और करीब लाकर सरकार से जोड़ती है बल्कि निर्णय लेने की प्रक्रिया में उन्हें समान रूप से अहम भागीदार भी बनाती है। पारदर्शिता और विकास एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। एक के बिना

भ्रष्टाचार मिटाओ देश बचाओ

दूसरे को पाना मुश्किल है। पारदर्शिता को निम्न उपायों से बढ़ाया जा सकता है :

- **डिजिटलीकरण अपनाकर** - लोगों के लिए नीतियों के मसौदे ऑन-लाइन किए जाने चाहिए ताकि वे अपनी प्रतिक्रियाएँ और सुझाव दे सकें।
- विकास का लाभ गरीबों तक सीधे पहुंचाने के लिए 'गरीब कल्याण मेलों' का आयोजन किया जाना चाहिए।
- **ई-गवर्नेंस** - इस मॉडल के तहत नागरिकों को समयबद्ध सेवाएँ प्रदान करने पर ज़ोर दिया जाना चाहिए। इसका मुख्य उद्देश्य होना चाहिए सिटीजन्स चार्टर के अंतर्गत सरकार की ओर से नागरिकों को सेवाएँ प्रदान करना।
- **अध्यादेश में संशोधन** - भूमि अधिग्रहण में उचित मुआवज़ा और पारदर्शिता का अधिकार, पुनर्वास और पुन:स्थापन (संशोधन) अध्यादेश 2015 में संशोधन के लिए सरकार द्वारा मंजूरी दे दी गई है। अधिनियम के प्रावधानों में बदलाव से किसानों को सरकार द्वारा अनिवार्य रूप से अधिग्रहित भूमि के बदले बेहतर मुआवजा, पुनर्वास और पुन:स्थापन लाभ मिलेगा।
- भारत जैसे संसाधन सम्पन्न देशों के आर्थिक विकास के लिए पारदर्शिता और उत्तरदायित्व सरकार की महत्वपूर्ण भूमिका है।

उपसंहार - संस्थानों, नागरिकों और सरकार को एकजुट करके विकास प्रक्रिया में नागरिकों की भागीदारी को सुविधाजनक बनाने के लिए भ्रष्टाचार को खत्म करके पारदर्शिता को बढ़ाने की आवश्यकता है ताकि नागरिकों और सरकार के बीच विश्वास बढ़ने में सहायता मिले। देश को विकसित करने के लिए एक साथ काम करने की जरूरत है, तब जाकर देश उन्नति के पथ पर आगे बढ़ेगा। पारदर्शिता की संस्कृति को विकसित कर हम नागरिकों को अभूतपूर्व तरीके से विकास की दिशा में अग्रसर कर सकते हैं। भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतान्त्रिक देश है। देश में इलेक्ट्रोनिक वोटिंग जिस प्रकार से भ्रष्टाचार को कम कर रही है और चुनावों में पारदर्शिता ला रही है उसी तरह भारत में कैशलेस अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देकर पारदर्शी और साफ सुथरी अर्थव्यवस्था का सूत्रपात किया जा सकता है। इन सब माध्यमों से हम देश में पारदर्शिता और भ्रष्टाचार मुक्त शासन अपनाकर भारत देश को विकसित देशों की सूची में शामिल कर सकते हैं।

श्रिया सामन्ता
धर्मपत्नी - श्री सौरिस सामन्ता
प्रबन्धक, निपटान विभाग,
मेन यूनिट

जीवन

तकदीर अक्सर खेलती है आँखमिचौनी जीवन के साथ
ज़िंदगी तो है मात्र एक बुलबुला नियति के हाथ।
जीवन का मतलब इस तरह है गहन
कौन कर सकता है इसका आकलन।
जीवन का अर्थ ढूंढते ढूंढते उम्र गुजर जाती है
कभी ये हँसाती है तो कभी ये रुलाती भी है।
जीवन है एक साँप-सीढ़ी, खेल आखिरी सांस तक
जीवन में जो होना है कौन पाएगा उसको रोक ।
इंसान को जीना होगा हमेशा नई उम्मीद के साथ
जीवन को हम सार्थक बनाएँगे अपने सत्यकाम के साथ।

अरुंधति दास
धर्मपत्नी - श्री बिजय कुमार दास
वरिष्ठ प्रबन्धक (वित्त)
तारातला यूनिट

मैं आत्मा हूँ

सवेरे नींद खुलने के बाद कुछ लोग अखबार पर नज़र डालते हैं दुनिया की खबर जानने के लिए और उसी में खो जाते हैं और कुछ लोग शरीर का ख्याल रखने के लिए प्रात: भ्रमण पर निकलते हैं। अखबार में छपी हर तरह की खबरें हमारे मस्तिष्क पर छा जाती हैं। जो हमारे मन के संतुलन को बिगाड़ देती हैं। अखबार में से जो भी खबर हमारे दिल और दिमाग में घुसती है वो हमारे मन को प्रभावित करती है। शाम को घर लौटकर आते ही खबरों का सिलसिला फिर शुरू हो जाता है, जो हमारे मन को उत्तेजित करता है।

सभी डॉक्टर यह सलाह देते हैं कि नाश्ता भारी, लंच हल्का और डिनर बैलेन्स्ड होना चाहिए। हम में से कुछ इस बात को मानते हैं और कुछ नहीं भी मानते। खाना तो खाना पड़ता है शरीर के लिए पर हमारे मन को तो कोई ख़ुराक नहीं मिली। शुद्ध मन हमारे शरीर की हर इंद्रियों को काबू में रखता है। इसलिए दिन की शुरुआत होनी चाहिए भगवान का स्मरण करके मंगल कामना के साथ। दिन के शुरू में अगर शुद्ध चित्त और शांत मन के साथ 30 - 40 मिनट हम भगवान से उनकी करुणा के लिए प्रार्थना करें तो आनंद का सारा भण्डार मिल जाता है। तमोसिक शक्ति को पराजित करके स्वततिक शक्ति जागृत होती है। जिसके फलस्वरूप मानसिक चंचलता दूर होकर मन शांति से भर जाता है। हमारे मन मे मानुषता जागृत होकर चित्त दूषण से मुक्ति मिलती है। जब भगवत चिंता हमारे मन और शरीर पर छा जाती है तब वार्तालाप या सोचने के वक़्त हममें से सकारात्मक या पॉज़िटिव ऊर्जा निकलती है, जो स्वयं और दूसरों के लिए मंगलमय साबित होती है। अशुभ चिंता नकारात्मक या नेगेटिव ऊर्जा पैदा करती है और शुभ चिंता सकारात्मक या पॉज़िटिव ऊर्जा उत्पन्न करती है। भगवत चिंता करने से, सद्ग्रंथ पाठ करने से, अथवा सत्संग करने से मन शांत और पवित्र होता है। जिसका असर शरीर, मन और वातावरण पर होता है।

भगवान ने हमें इस दुनिया में सभी संस्कार देकर भेजा है, जिसमें अच्छाइयाँ और बुराइयाँ दोनों ही हैं। हम अपने संस्कार के प्रभाव से कर्म करते हैं। प्रश्न यह है कि संस्कार हमारे अंदर आते कहाँ से हैं। पिछले जन्म के कर्मों के संस्कार, जन्म से पहले माँ की कोख में रहते वक़्त और 7 - 8 साल की उम्र तक माँ के संग रहने से माँ के संस्कार। इस के अलावा हमारे परिवेश से भी हमें संस्कार मिलते हैं। ये संस्कार इतने शक्तिशाली होते हैं कि हमारे मन को अच्छाइयों या बुराइयों की तरफ खींच ले जाते हैं। अगर संस्कार उच्च होंगे तो मनुष्य के अंदर सेवा और त्याग के भावना की वजह से खुद को और दूसरों को भी सुख शांति मिलती है। लेकिन अगर संस्कार निम्न होंगे तो सभी को तकलीफ होती है।

हम कहते हैं कि यह घर, प्रॉपर्टी, गाड़ियाँ, माँ, बाप, बच्चे सब कुछ मेरे हैं और इन सब का मालिक मैं हूँ। ये हाथ, पाँव, मुँह, आँखें यह मैं नहीं हूँ, ये मेरा है। हमारे शरीर के किस अंश पर ये 'मैं' विराजमान है? कहाँ ढूंढें हम इस 'मैं' को। सच तो यह है कि 'मैं' आत्मा का स्वरूप हूँ और ये आत्मा छोटे से छोटे आकार में हमारी दोनों आंखों के बीच विराजमान है। हमारे सारे शरीर का कंट्रोल हमारे मस्तिष्क में है। रक्त का प्रवाह हृदय द्वारा होता है। इस शरीर के अलग अलग हिस्से का काम अलग अलग इंद्रिय द्वारा होता है। पर मस्तिष्क सब कुछ अनुभव करता है। हमारे शरीर का सबसे जरूरी अंग मस्तिष्क आत्मा द्वारा चालित होता है। हमारे शरीर का सिस्टम, अंग किस तरह सुचारु रूप से काम करता है, यह हमने कभी सोचा? आकाश में इतने सारे ग्रह, नक्षत्र किसके आदेश पर सुचारु रूप से काम करते हैं? कोई न कोई तो प्रत्यक्ष रूप से जिम्मेदार होगा। इसे समझने के लिए हमें खुद के अंदर झांकना होगा।

'मैं' आत्मा जब तक इस शरीर में हूँ तो यह शरीर जीवित है। जब यह आत्मा इस शरीर को छोड़ देती है तब शरीर शव बन जाता है। आत्मा ही प्राण है। हम अपना सारा काम संस्कार के अनुसार करते हैं। ये संस्कार आत्मा के अंदर रहते हैं। पर हमारे कर्मों के लिए आत्मा कभी जिम्मेदार नहीं। हम जन्म लेते हैं, संस्कार के हिसाब से काम करते हैं, फिर भी मृत्यु हो जाती है। आत्मा अविनाशी है, अमर है। आत्मा को न काटा जा सकता है, न जलाया जा सकता, न भिगोया जा सकता, न उड़ाया जा सकता और न ही मारा जा सकता है। आत्मा शरीर के अंदर रहते वक़्त तीन अंदर की शक्तियों के माध्यम से काम करती है। वो है मन, बुद्धि, और संस्कार। आत्मा का स्थान दोनों भोंहों के बीच सूक्ष्म रूप में है और वहीं से वह मस्तिष्क को नियंत्रित करती है। संस्कार के हिसाब से हमारे मन में बहुत सारे विचार आते रहते हैं और हमारा बोध अर्थात बुद्धि निर्णय लेती है। जो काम हम संस्कार की वजह से करते हैं वो ठीक हैं या गलत, आत्मा के अंदर उसका प्रभाव पड़ता है और

संस्कार के रूप में स्थान ले लेता है। हमारे मन में पूर्व या इस जीवन में प्राप्त संस्कार की वजह से तरह तरह के विचार आते रहते हैं। कोई सोच या विचार हल्का, कोई मध्यम और कोई गहरा होता है। ये हमारे अवचेतन मन में रहते हैं। यह सोच या विचार हमारे स्वाभाविक जीवन पर बुरा असर डाल सकते हैं। देखा गया है कि सकारात्मक या पॉज़िटिव सोचने वाले शांत और नकारात्मक या नेगेटिव सोचने वाले अशांत होते हैं। हम काम करते हैं अपनी सोच की वजह से और सोच हम पर हावी हो जाती है गंभीर संस्कारों की वजह से।

हम यह सोचें कि हमारा यह स्थूल शरीर एक रथ के समान है। आत्मा रथ पर बैठकर सब कुछ अवलोकन कर रही है। बुद्धि यानि बोध रथ का चालक है, मन है रस्सी (Rope) जो अश्व (Horse) के साथ बंधी हुई है। इंद्रियों की तुलना की है अश्व के साथ जो कि बहुत शक्तिशाली है। रास्ते या मार्ग की तुलना इंद्रियों द्वारा आकर्षित वस्तु के साथ की गई है। अश्व रास्ते पर से रथ को खींच ले जाता है, रस्सी यानि मन अश्व यानि इंद्रियों से बंधा रहता है और रस्सी का पूरा नियंत्रण बुद्धि के हाथ में रहता है। आत्मा साक्षी स्वरूप और सारी इंद्रियानुभूति मन और बुद्धि के ऊपर निर्भर रहती है। जिस रास्ते या मार्ग पर रथ चलता है वह इंद्रियों द्वारा आसक्त है। शरीर नष्ट होने पर भी इंद्रिय शक्ति, मन और बोध जाग्रत रहते हैं। शरीर एक मशीन के अलावा और कुछ नहीं। जिसके सहारे आत्मा हर अनुभव एकत्र करके अपनी कामना वासना पूर्ण करके प्रकृति यानि संस्कार का गठन करती है।

रथ का चालक अर्थात बोधि इस रथ के हर बुरे भले के लिए जिम्मेदार है। अगर बोधि सचेतन न हो तो इंद्रियों रूपी घोड़ा रथ को जहाँ चाहे ले जाएगा। अत: चालक या सारथी की भूमिका सबसे अहम है। यदि अश्व रूपी इंद्रियों को हम कठोरता के साथ दमन करके सदबुद्धि का प्रयोग कर पाएँ तो ज़िंदगी खुशहाल बन सकती है। जिस प्रक्रिया के द्वारा इंद्रियों को बाहरी वस्तुओं से हम अलग कर सकें उसे कहते हैं राजयोग।

देवाशीष चक्रवर्ती
प्रबन्धक
टीटीसी, बारानगर यूनिट

सत्य का अस्तित्व

आज फिर पथ प्रदर्शक हो गया असत्य
और सत्य फिर अँधेरों में खो गया।

आगे बढ़ता ही जा रहा है असत्य
पता नहीं कौन सा सच हो गया फिर मंजिल से दूर।

आज फिर असत्य के सिर पर है ताज
फिर भी चुप सा क्यों है सत्य

क्यों मनुष्य कहे सच पर चले तो
काँटे लगेंगे, कहाँ गई हिम्मत।

असत्य चाहे कितनी भी कर ले तरक्की
अंत समय सत्य ही के सिर पर ताज सोहे।

जीवन मृत्यु दोनों ही सत्य हैं
असत्य केवल भ्रम है।
सब परेशानियों का हल केवल सत्य है।

हे मनुष्य तू भ्रम से जग
अपनों से अपनी बात कर।
अपनी ऊँची उड़ानों को सत्य के पंख दे
और स्वयं को असत्य की जंजीरों से आजाद कर।

अर्चना शर्मा
उप प्रबन्धक, बेली ब्रिज
61 पार्क यूनिट

ट्रैक फॉर चिल्ड्रन – रूपम वैली

43 सदस्यों की टोली जब हैमिल्टन गंज पहुंची तब दिन के बारह बज चुके थे। रोवर्स एण्ड माउंटेन के सदस्यों ने हमारा स्वागत किया। हमारे लिए 5 गाड़ियों की व्यवस्था की गयी थी। 20 किलोमीटर के बाद हम अपने ठिकाने रागमातंग पहुंचे। यह एक छोटा सा गाँव है। यहाँ पर केवल 10-15 परिवार रहते हैं। हमारा कारवां एक बड़े से रिसोर्ट में जाकर रुका। रिसोर्ट में 18 कमरे थे, सामने एक बगीचा और सुंदर सा तालाब था। चारों ओर खूबसूरत जंगल और प्रकृति का अत्यंत मनोरम दृश्य था। भोजन के पश्चात सभी सदस्य एक साथ बैठे। गरम गरम पकौड़े और चाय के साथ इस ट्रैक के बारे में मीटिंग शुरू की।

इस बार हमारी सदस्य संख्या कुछ इस प्रकार थी – 16 बच्चे, 10 महिलाएं और 17 पुरुष। मैं बच्चों को प्रकृति के साथ परिचित करवाना चाहता था। साथ ही उन्हें हिमालय के साक्षात रूप में दर्शन करवाना तथा हिमालय की गोद में बसे छोटे छोटे गांवों और उनकी भावनाओं से भी परिचित करवाना था। कम से कम सुविधाओं में भी मनुष्य कैसे खुश रह सकते हैं, ये जानकारी मैं बच्चों को देना चाहता था।

बच्चों को बताया कि ट्रैकिंग से मानसिक एवं शारीरिक विकास होता है। एक दूसरे का सहारा बन सकते हैं और नेतृत्व कर सकते हैं। हमारा देश भारतवर्ष बहुत ही मनमोहक है। यहाँ सर्वोच्च पर्वतमाला है, घने जंगल हैं, झरने, नदियां और समुद्र हैं। एक ओर हरियाली तो एक ओर सागर है। एक दिशा में घने जंगल तो दूसरी ओर विशाल पर्वत। बच्चों को प्रकृति का यह पाठ सिखाना था।

अगले दिन सुबह नाश्ते के बाद हमारी टोली तैयार हो गई। श्री संजीत चाचा और श्री सुबिमन को ट्रैकिंग रूट के बारे में कुछ जानकारी दी। हमने नारियल तोड़कर धूप जलाकर भगवान से आशीर्वाद लिया। हमारे ग्रुप में 43 सदस्य थे। इसके अलावा 14 कुली, 7 कुकिंग स्टाफ और 3 गाइड भी थे। हमने गाँव के बीच से चलना शुरू किया। गाँव के लोग हमें देखकर हाथ मिलाने लगे व बधाई देने लगे। गाँव की सीमा समाप्त होते ही एक घना जंगल शुरू हुआ। आसमान बिलकुल साफ था और धूप भी काफी तेज थी लेकिन हल्की हल्की ठंडी हवा बह रही थी। रास्ता काफी उतार चढ़ाव वाला था। आहिस्ता आहिस्ता हम 'आदमा' नामक छोटे से

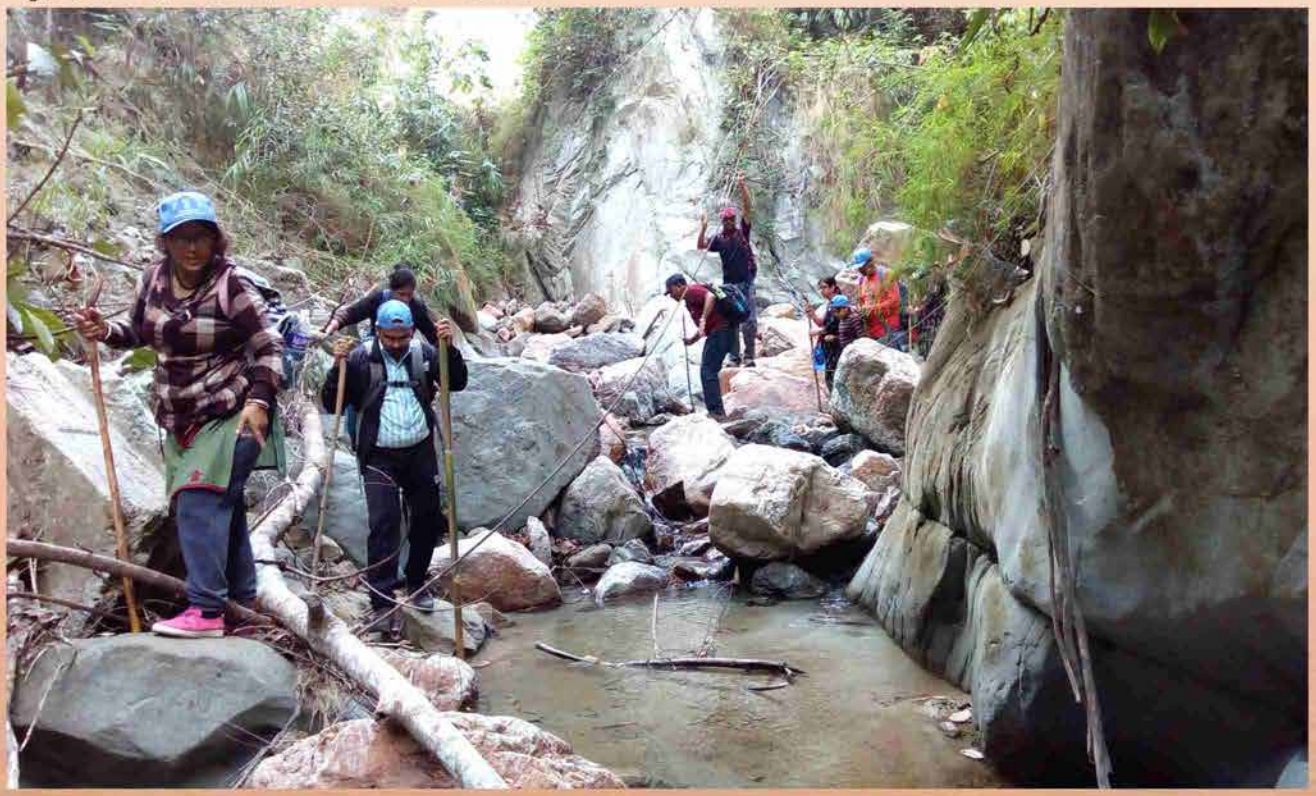

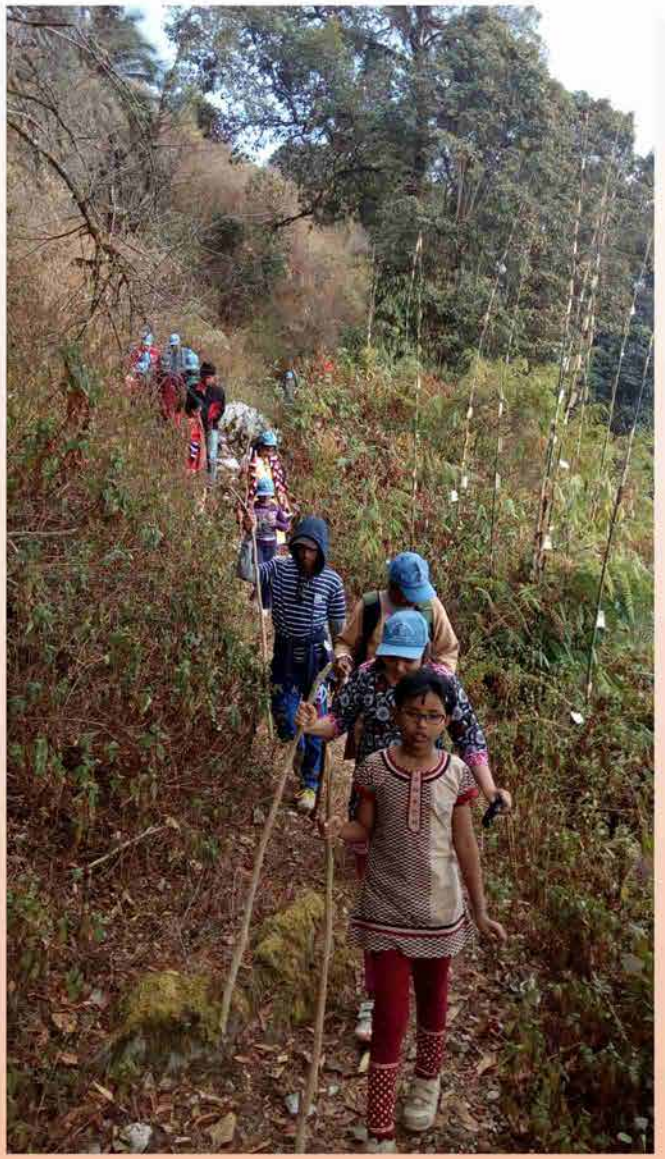

गाँव पहुंचे। आज रात हमें इसी गाँव में रुकना था। वहाँ एक मैदान दिखाई दिया जिसमें कुछ बच्चे फुटबॉल खेल रहे थे। हमारे बच्चे भी बड़ी उत्सुकता से उनके साथ खेलने लगे। इस गाँव में भी 15-16 घर ही थे, जिनमें से चार घरों में हमारे रहने का इंतजाम था। रायमाटंग से आदमा गाँव 9 किलोमीटर की दूरी पर है। हम सभी शाम को मैदान में इकट्ठा हुए और गरम गरम सूप तथा कॉफी पीते हुए वहाँ की जानकारी ली। हमारे सभी सदस्य शारीरिक और मानसिक रूप से बिलकुल ठीक थे। रात को आठ बजे भोजन किया और अगली सुबह की तैयारी करने लगे।

दूसरे दिन सुबह नाश्ते के बाद हम सब चल पड़े। आज हमें 10 किलोमीटर चलना था। हमने ऊपर से नीचे उतार की ओर यात्रा शुरू की। फिर जंगल पार करने के बाद चढ़ाव शुरू हुआ। बीच बीच में जंगल इतना बीहड़ था कि रास्ता नजर ही नहीं आ रहा था। पर हम सभी हंसी खुशी के साथ आगे बढ़ते रहे। बच्चे सबसे तेज चल रहे थे। इस तरह हम सब 'चूनामाटी' गाँव आ पहुंचे। हिमालय की गठन शैली और रूप अलग अलग जगह पर अलग अलग होते हैं। गाँव के लोग इस पहाड़ से चूना निकालते हैं और अपना घर बनाने के लिए प्रयोग में लाते हैं। यह सब देखते देखते हम 'सदर बाजार' गाँव आ पहुंचे। एक छोटा सा गाँव जहां हम सब एक मकान में ठहरे। मकान मालिक श्री इंद्र शंकर थापा बहुत ही सज्जन पुरुष। उन्होंने हम सभी का स्वागत किया। श्री इंद्र शंकर थापा अपने गाँव में बिजली लाने, अच्छा स्कूल खुलवाने और अपने गाँव की संस्कृति बचाने के लिए प्रयत्नशील हैं। उनकी इस प्रयत्नशीलता को देखते हुए भारत सरकार ने 2016 में उन्हें डॉ. अंबेडकर पुरस्कार से सम्मानित किया। शाम को गाँव के मैदान में आग जलाई गई। गाँव के लोग वहाँ एकत्रित हुए। अपने लोकसंगीत व नृत्य से उन्होंने हमारा मनोरंजन कर हमें मंत्रमुग्ध कर दिया। गाँव के लोग हमें अपने साथ पाकर बहुत खुश थे। हमने उन्हें अपना परिचय दिया, अपने कार्य की जानकारी दी, अपनी संस्कृति के बारे में बताया। फिर रात का भोजन कर सभी अगली सुबह के इंतजार में सोने चले गए।

एक जमाने में 'सदर बाजार' बहुत ही व्यस्त और व्यापारियों से भरा हुआ गाँव था। यहाँ पर विभिन्न क्षेत्रों के व्यापारी व्यापार करने के लिए आते थे। इसका कारण इस जगह की भौगोलिक स्थिति था। यहाँ से एक रास्ता ऊपर की तरफ भूटान, नेपाल, तिब्बत, चीन होकर हिंदु कुश को जाता है। इसी प्रकार एक रास्ता नीचे की ओर सांतला बाड़ी, अलीपुरद्वार, कूचबिहार होकर वर्तमान बांग्लादेश तक जुड़ा हुआ है। अब यहाँ पर न तो व्यापार है और न ही व्यापारी। सब कुछ स्मृति बन कर रह गया है। पहले ये सब गाँव और छोटे छोटे शहर भूटान के राजा के अधीन थे। सन 1772 में भूटान के राजा ने कूचबिहार राज्य पर आक्रमण किया। उस समय ईस्ट इंडिया कंपनी ने कूचबिहार के राजा की मदद की। ईस्ट इंडिया कंपनी की मदद से कूचबिहार के राजा ने भूटान के राजा को पराजित कर दिया। उसके बाद यह इलाका भारत में शामिल कर लिया गया और यहाँ पर भारत का आधिपत्य स्थापित हो गया। 1864 में भूटान के राजा ने फिर से यहाँ आक्रमण किया। इस बार ईस्ट इंडिया कंपनी के

कर्नल देदायेत अली खान की सहायता से कूचबिहार के राजा की जीत हुई। सन 1865 में 11 दिसंबर को भूटान के राजा के साथ सिंचुला समझौता हुआ और दोनों देशों में शांति कायम रही। कर्नल देदायेत अली खान के नाम से ही इस जगह का नाम अलीपुरद्वार हुआ। पहले अलीपुरद्वार जलपाईगुड़ी जिले के साथ जुड़ा हुआ था पर 25 जून 2014 को इसे स्वतंत्र जिले के नाम से घोषित किया गया।

ये सब जानकारी लेते हुए हम बक्सा दुर्ग आ पहुंचे जो अतीत में भूटान राजा के अधीन था। बाद में ईस्ट इंडिया कंपनी ने इसे बंदी शिविर बना दिया और इस देश के वीरों ने यहाँ बंदी का जीवन बिताया। आज बक्सा दुर्ग एक खंडहर बन चुका है। वर्तमान में ये जगह बक्सा टाइगर रिजर्व फॉरेस्ट के नाम से जानी जाती है।

आज का हमारा सफर 3 किलोमीटर का था। चढ़ाई बहुत थी पर पहले दो दिन जितनी मुश्किलें नहीं थी। लेकिन बातों बातों में रास्ते का पता ही नहीं चला। हम सब 'लापचाखा' गाँव आ पहुंचे। यह गाँव बहुत ही सुंदर और दिखने में टेबल टॉप जैसा प्रतीत हो रहा था। यहाँ पर एक गोम्पा, एक छोटा सा स्कूल और सीमा सुरक्षा बल का कैंप भी था।

शाम ढलते ही श्री सुबिमल महाशय ने सांपों के विषय में जानकारी दी। हम सभी सदस्य मुग्ध होकर सुनने लगे। उसके बाद वहाँ के लोगों ने संगीत व नृत्य से हमारा मनोरंजन किया। बीच में आग जलाकर पुरुष और महिलाएं उसके चारों ओर गाना गाते हुए नृत्य कर रहे थे। अगले दिन नाश्ता करने के बाद हम सभी रूपम वैली की ओर चल पड़े। यहाँ आना जाना मिलाकर 24 किलोमीटर था। यहाँ चढ़ाई भी थी और जंगल भी। सभी को बहुत आनंद आ रहा था। तभी देखा कि एक बड़े ध्वंस के कारण वहाँ का रास्ता बंद हो गया था। अत: हमने रूपम वैली न जाने का निश्चय किया। लेकिन हमने यह फैसला लिया कि हम रोवर पॉइंट तक जाएंगे। धीरे धीरे हम रोवर पॉइंट तक पहुंचे। वहाँ हमने भगवान की पूजा की, आशीर्वाद लिया। ध्वज के साथ फोटो लिया और कुछ समय वहाँ बिताया। फिर लौटकर लापचाखा आ गए। आने जाने में हमने 17 किलोमीटर की दूरी तय की।

अगले दिन सभी सदस्यों ने सूर्योदय देखा। आज सभी सदस्य बहुत ही उत्सुक और खुश थे क्योंकि आज ट्रैकिंग का अंतिम दिन था। आज हमें 14 किलोमीटर की दूरी तय करनी थी जिसमें 11 किलोमीटर उतार और 3 किलोमीटर समतल था। धीरे धीरे हमने लौटना शुरू किया। जंगल पार करने के बाद छातीनला नाम की नदी आई। बड़े बड़े पत्थर, घना सा जंगल और नदी पार करने के बाद हम सब थक गए थे। नदी पार करने पर हम जयन्ती गाँव पहुंचे। वहाँ सभी सदस्यों ने दोपहर का खाना खाया। तब तक सबकी थकान दूर हो चुकी थी। शाम के समय अलीपुरद्वार के तीन शिक्षक आए। हम सब उनके साथ जयन्ती नदी के किनारे गए। उन्होंने एक एक करके सभी को टेलिस्कोप के माध्यम से आसमान में तारों से अवगत कराया। वो रात बहुत खुशनुमा बीती। अगले दिन सभी ने जंगल का सफर किया। शाम को कैंपफायर में बच्चों ने नाच गाने से हमारा मनोरंजन किया। हमने अपने एक साथी का जन्मदिन भी मनाया।

दूसरे दिन दोपहर के खाने के बाद हम सब अलीपुरद्वार स्टेशन की ओर चल पड़े। इस तरह हमारी आनंदमयी ट्रैकिंग समाप्त हुई। सभी ने अगले साल फिर ट्रैकिंग करने का निश्चय किया।

कल्याण कुमार दे
प्रबन्धक
एफओजे यूनिट

ये कैसी आज़ादी

ये कैसी आज़ादी की लहर चल रही है
आज हमारे देश में,
अधिकार तो सबको मिले
फिर ये भेदभाव क्यों है लोगों के मन में ?

जिन्होंने हमारी भूख मिटाई
किसान उसे कहते हैं हम,
आत्महत्या को उसने गले लगाया
जब मिले न उसे अनाज का दाम।

झुक गया उम्मीद का आसमान
टूट रहे हैं सपने हमारे,
बुला रहा है अनिश्चित भविष्य
तेजी से बढ़ती हुई देश की बेरोजगारी।

मज़दूर आज मजबूर है
काम करे वो सुबह शाम,
खून-पसीना कितना भी बहाए
फिर भी ना मिले मेहनत का इनाम।

कानून आज खामोश है,
गरीब को नहीं मिलता विचार,
ताकतवर ने बिछाया जाल
चारों तरफ है भ्रष्टाचार।

रोज़ देश की बेटियों पर
खुले आम होता है अत्याचार।
उनको सम्मान दिलाने के लिए
आज फिर से करना होगा विचार।

लड़ना है अन्याय के विरुद्ध
इंसाफ सबको दिलाना है,
मिटाना है इस भेद भाव को
देश को फिर से सजाना है।

कौशिक तालुकदार
पर्यवेक्षक (स्टोर)
मेन यूनिट

सुखी जीवन का मंत्र

विवेक बुद्धि संपन्न मनुष्य अधिक महत्वाकांक्षी होने के कारण प्राय: हर दूसरे मनुष्य से अधिक पाने की आशा करता रहता है। अत्यधिक उच्च आकाक्षाओं के कारण वह जितना भी धन प्राप्त कर ले तब भी संतुष्ट नहीं होता, बल्कि और अधिक की चाह करता रहता है। यह प्रवृत्ति ही मनुष्य के अंदर घोर अवसाद को जन्म देती है। सर्वदा इस उच्च आकांक्षा के कारण वह अशांत, अतृप्त और हाहाकार के भीतर रहता है। सब कुछ पाकर भी कुछ न पाने जैसा अनुभव करता है और अति दयनीय रूप से जीवन निर्वाह करता है।

साधारण तौर पर देखा जाए तो एक जानवर अपनी भूख मिटाने के लिए भोजन की तलाश में रहता है और आहार मिलने के बाद संतुष्ट हो जाता है और अधिक भोजन की तलाश से निवृत्त रहता है। लेकिन मनुष्य के मामले में अतृप्ति ही घोर अवसाद का कारण है। जबकि सुसंयत तरीके से कार्य सम्पादन में ही शांति और आनंद मिलता है, विशृंखलित और नीतिहीन आचरण के माध्यम से नहीं।

बचपन में हमने एक कहानी सुनी थी। एक राजा था। भोग विलास में जीवन निर्वाह करने के लिए उसके पास सुब कुछ था। विलास में जीवन बिताने के बावजूद वह सर्वदा तनाव और अवसादग्रस्त रहता था। मन खोल कर हँस भी नहीं पाता था। सर्वदा कुछ न कुछ आशंका के भीतर अत्यंत दुख में दिन बिता रहा था। एक दिन उसने अपने वरिष्ठ राजकर्मचारियों को निर्देश दिया, "जाओ एक ऐसे इंसान को हमारे समक्ष ले आओ जो निरंतर सुख में रहता हो। हम उससे सुखी जीवन का मंत्र लेंगे"।

राजा के आदेश का पालन करते हुए राजकर्मचारी तुरंत एक ऐसे इंसान की खोज में निकल पड़े। इधर-उधर ढूंढने के बाद एक गाँव के मध्य भाग में एक वृक्ष के नीचे बैठे एक भेड़ चराने वाले को देखा, जो बहुत आनंद से गाना गा रहा था। राजकर्मचारी मन ही मन यह सोचने लगे कि यह निश्चित रूप से एक सुखी इंसान है। उस भेड़ चराने वाला को पकड़ कर राजा के समक्ष उपस्थित किया गया। राजा ने उससे इस आनंद का रहस्य पूछा तो उसने नम्रता की साथ कहा, "महाराज ! मुझे जो कुछ भी अपनी मेहनत के कारण मिलता है उससे मैं अपना जीवन निर्वाह कर लेता हूँ। मेरी अन्य कुछ और कामना भी नहीं है। कर्तव्य सम्पादन को ही मैं अपना श्रेष्ठ कर्म और आनंद प्राप्ति का सोपान मानता हूँ। दूसरों की संपत्ति अथवा श्रेष्ठत्व मुझे विचलित नहीं करते। यही मेरे सुख का कारण है"।

कुछ लोगों का यह तर्क है कि इस तरह की आकांक्षा (कम में संतुष्ट) उन्नति के मार्ग में अवरोध करती है। उनका यह मत है कि इंसान के पास उच्च आकांक्षाएं बढ़ते रहने से वह अधिक से अधिक कार्य करने के लिए अनुप्रेरित होता है, जिसके परिणामस्वरूप वह और भी उन्नति करता है। परंतु उन्नति और आकांक्षा का अर्थ क्या है? आकांक्षा महती होना आवश्यक है। लौकिक उन्नति हमें अधिक बंधनों में डालती है, साधक की दृष्टि में इस उन्नति का कोई मूल्य नहीं है। मन की कामनाओं का कभी भी अंत नहीं होता है, यह बढ़ती जाती हैं। मन को नियंत्रित करके, जो भी अपने पास है, उससे संतुष्ट रह कर, इसे ईश्वर का आशीर्वाद मान कर सरल भाव से स्व कर्तव्य सम्पादन करने से ही अवसाद और दुखों से मुक्ति मिलती है।

बिजय कुमार दास
वरिष्ठ प्रबन्धक (वित्त)
तारातला यूनिट

राजभाषा जागृति
कैमरे से

कमांडर सौम्य चौधुरी, भानौ (सेवानिवृत्त),
महाप्रबंधक (एफओजे)
के कैमरे से

चिकन पॉक्स

चिकन पॉक्स क्या है ?

चिकन पॉक्स जिसे छोटी माता भी कहा जाता है, एक संक्रामक रोग है जो वैरिसेला ज़ोस्टर नामक वायरस के कारण होता है। इससे शरीर पर फुंसी और निशान बन जाते हैं और खुजली होती है। यह पहले से ही संक्रमित मरीजों के शरीर पर लाल चकत्तों/दाने के सीधे संपर्क के माध्यम से फैलता है।

चिकन पॉक्स के दानों को कैसे पहचाना जाए ?

चिकन पॉक्स के दाने तीन चरणों में विकसित होते हैं। दाने ही वह कारण है जो चिकन पॉक्स होने का संकेत देते हैं।

लाल चित्ती/निशान

निशान छोटे, उभरे हुए लाल धब्बे के रूप में शुरू होते हैं।

सामान्यत: ये दाने शरीर के अन्य भागों में फैलने से पहले अक्सर चेहरे या धड़ पर दिखाई देते हैं। दाने बहुत कम सिर्फ कुछ स्थानों पर हो सकते हैं या ये सैकड़ों की मात्रा में शरीर के अधिकांश हिस्से पर हो सकते हैं। कभी कभी दाने हथेलियों, पैरों के तलवों, कानों या मुंह के अंदर या नीचे या जननांगों के आसपास भी दिखाई दे सकते हैं।

फफोले

आने वाले घंटों अथवा अगले दिन दानों का ऊपरी भाग द्रव से भरे छालों के रूप में विकसित हो जाता है। फफोलों में बहुत खुजली हो सकती है, लेकिन यह ध्यान रखा जाना बहुत महत्वपूर्ण है कि फफोलों को खरोंचा न जाए। खरोंचने से संक्रमण दूसरों तक फैल सकता है और इससे त्वचा के गंभीर संक्रमण की संभावना बढ़ जाती है।

पपड़ी

अगले कुछ दिनों में, छाले का तरल पदार्थ काला पड़ जाता है और फफोले सूखने लगते हैं। कुछ दिनों तक और नए दानों का निकलना जारी रह सकता है, इसलिए एक ही समय में शरीर पर दाने, फफोले और पपड़ी का मिश्रण हो सकता है। जब तक हर दाना और हर फफोला पपड़ी के रूप में सूख नहीं जाता, जिसमें आमतौर पर पाँच या छह दिन लगते हैं, चिकन पॉक्स संक्रामक होता है। सूखे हुए दानों पर बनी पपड़ी अगले हफ्ते या दो हफ्ते में खुदबखुद गिर जाती है।

क्या चिकन पॉक्स खतरनाक है ?

चिकन पॉक्स केवल एक खुजली वाली बीमारी है। यह एक ऐसी बीमारी है जो 4-10 वर्ष के आयु वर्ग वाले बच्चों को होती है। वयस्कों में यह शायद ही कभी होती है, लेकिन जब यह बीमारी वयस्कों में होती है, तो यह और अधिक गंभीर रूप में होती है। गर्भवती महिलाओं के लिए यह बीमारी बहुत ही गंभीर है और यह स्नायु तंत्र, मस्तिष्क, आंख और शरीर को प्रतिकूल रूप से प्रभावित करती है। यह रोग घातक नहीं है, लेकिन गंभीर मामलों में इसके परिणामस्वरूप स्ट्रोक या दाद (हरपीज़ ज़ोस्टर) हो सकता है।

चिकन पॉक्स के विभिन्न प्रकार क्या हैं?

चिकन पॉक्स केवल एक प्रकार का है और यह वैरिसेला संक्रमण है, जो बेहद संक्रामक है। यह एक ही वायुजनित वायरस है जो एक संक्रमित रोगी के छींकने या खाँसने द्वारा आसानी से फैल सकता है। आम तौर पर वायरस द्वारा संक्रमण के 10 से 20 दिनों के पश्चात शरीर पर दाने दिखाई देते हैं।

चिकन पॉक्स के लक्षण क्या हैं?

चिकन पॉक्स के लक्षण हैं – भूख न लगना, सिरदर्द, मतली और मांसपेशियों में दर्द। चेहरे, सिर, शरीर, हाथों और पैरों पर दाने निकल जाते हैं। दाने त्वचा पर धब्बे के रूप में उभरते हैं, फिर उभरे हुए फफोले और उनके सूखने पर पपड़ी बन जाती है। वयस्कों में ये दाने निकलना अधिक गंभीर होता है जो बाद में न्युमोनिया भी हो सकता है। गंभीर मामलों में छाती में दर्द और साँस लेने में कठिनाई के साथ दानों के आसपास लाली होती है।

यदि चिकन पॉक्स संक्रमण होता है तो किस चिकित्सक से परामर्श करना चाहिए?

चिकन पॉक्स के लिए, बच्चों के मामले में किसी बाल चिकित्सक और वयस्कों के मामले में किसी सामान्य चिकित्सक से परामर्श करना चाहिए।

क्या चिकन पॉक्स का इलाज संभव है?

चिकन पॉक्स का एक आवधिक चक्र है और समाप्त होने पर यह अपने आप ठीक हो जाता है। टीकाकरण इसका उपचार है। इसके अतिरिक्त रोगी को अलग थलग रखकर और उन्हें घर में ही रहने की हिदायत दिए जाने से इस बीमारी के फैलने के जोखिम को कम किया जा सकता है। इसमें दानों को खँरोचा न जाए और साफ सफाई का कड़ाई से पालन किया जाए।

क्या चिकन पॉक्स संक्रामक है?

चिकन पॉक्स अत्यधिक संक्रामक बीमारी है। जब तक दाने/फफोले सूख कर पपड़ी नहीं बन जाते, रोग बिगड़ता है और बेहद संक्रामक होता है। जिन व्यक्तियों में रोगों से प्रतिरक्षा की शक्ति नहीं होती, ऐसे व्यक्ति जब तक दाने फट कर सूख नहीं जाते, सीधे संपर्क के माध्यम से बीमारी को फैलाते हैं।

क्या चिकन पॉक्स जीवन के लिए खतरनाक हो सकता है?

प्रतिरक्षा प्रणाली और दवाएं प्रभावी ढंग से चिकन पॉक्स के बुखार को कम करती हैं। वयस्कों के लिए यह रोग अधिक जोखिम वाला होता है। अधिक जोखिम वाले मामलों में मस्तिष्क की सूजन, एन्सेफ्लाइटिस, निमोनिया और यहां तक कि मृत्यु भी हो सकती है। समय पर ध्यान देने और दवाएं लेने से घातक परिणाम के जोखिम को कम किया जा सकता है।

चिकन पॉक्स होने वाले प्रभावों व दुष्परिणामों को कैसे कम किया जा सकता है?

चिकन पॉक्स की रोकथाम इससे प्रभावित व्यक्तियों को अलग थलग रख कर की जा सकती है। ओका स्ट्रेन से टीके विकसित किए गए हैं। वर्सीला टीकाकरण विद्यालयों में एक अनिवार्य खुराक नहीं है, और यदि दिया भी जाता है, तो इसके देने के बाद भी यदि चिकन पॉक्स होता है तो संक्रमण मामूली होता है।

चिकन पॉक्स का वैक्सीन – क्या यह इस बीमारी का एक उपाय है?

गियोवन्नी फ़िलिपो (1510-1580) वह पहला व्यक्ति है जिसने वैरिसेला वैक्सीन को विकसित किया, जिसे आमतौर पर चिकन पॉक्स वैक्सीन कहा जाता है। 1970 के दशक में, मिशिआकी द्वारा जापान में एक वैरीसेला वैक्सीन विकसित की गई थी। जिन बच्चों को कभी चिकन पॉक्स नहीं हुआ उन्हें चिकन पॉक्स वैक्सीन की 2 खुराक दी जानी चाहिए। 13 वर्ष से अधिक आयु के लोग (जिन्हें कभी चिकन पॉक्स नहीं हुआ है या उन्हें चिकन पॉक्स वैक्सीन नहीं मिली है) को एक माह के अंतराल पर दो खुराक दी जानी चाहिए।

चिकन पॉक्स वैक्सीन की सलाह इन लोगों के लिए कभी भी नहीं दी जानी चाहिए :

- एचआईवी / एड्स या अन्य बीमारी जो इम्यून सिस्टम को प्रभावित करते हैं।
- जिनका उपचार उन दवाओं से किया जा रहा है, जो प्रतिरक्षा प्रणाली को प्रभावित करते हैं, जैसे स्टेरॉयड।
- जिन्हें किसी भी प्रकार का कैंसर है और रेडिएशन अथवा दवाओं से उपचार चल रहा है।
- जिन्हें हाल ही में ट्रान्स्फ्यूजन हुआ है अथवा उन्हें रक्त संबंधी अन्य दवाएं दी गई हैं।

चिकन पॉक्स के दौरान किस तरह की स्वच्छता का पालन करना चाहिए ?

स्नान तथा सफाई से नाखूनों को काटने पर चिकन पॉक्स के गौण बैक्टीरियल संक्रमणों से बचा जा सकता है। चिकन पॉक्स एक संक्रामक वायरल बीमारी है। चिकन पॉक्स एक खास मौसम में और पूरे विश्व में महामारी के रूप में होता है। इसका वायरस पहले से मौजूद साँस की कठिनाई से फैलता है और यह बच्चों में आम बीमारी है।

डॉ. अशोक कुमार हलदर
मुख्य चिकित्सा अधिकारी
अनुवाद - **सुनीता शर्मा**, उप महाप्रबंधक (राजभाषा)

हे प्रकृति तुम्हें प्रणाम

हे प्रकृति ।
तुम्हारी करुणा, दया, अनुकंपा से मैं चरम आल्हादित,
तुम्हारा स्नेह, श्रद्धा पाकर मैं आजीवन आनंदित।
मेरी आँखों की दृश्य रश्मिरेखा में तुम सितारा जगमगाता,
मेरे हाथ, पाँव, मस्तिष्क के चलने में तुम्हारी महानता।
मेरे सुख, दुख, शांति, प्रशांति की सीमित वेला में
तुम हो असीम आलिंगन ।
तुम्हारे ग्रह, नक्षत्र, वृक्ष लताएँ
झर, निर्झर, सरिता, स्थावर, अस्थावर व्याप्ति में
तुम ही हो परम सुखदायी निर्लिप्त चित्तसत्ता।
हे प्रकृति
मेरे हृदय की गहराई से तुम्हें मेरा निविड़ प्रणाम।

बिजय कुमार दास
वरिष्ठ प्रबन्धक (वित्त)
तारातला यूनिट

हजार योद्धाओं पर विजय पाना आसान है, लेकिन जो अपने आप पर विजय पाता है वही सच्चा विजेता है।

- गौतम बुद्ध

जातीय एकता और आदि शंकराचार्य

हिन्दू सनातन वैदिक धर्म के प्राण प्रतिष्ठाता और प्रचारक, श्री जगन्नाथ चेतना की चतुर्धामूर्ति के विशिष्ट उपासक एवं संस्थापक और भारत के चतुर्धाम के दूरदर्शी जगद्गुरू आदि शंकराचार्य आज विश्व के एक महान धर्मगुरु और विशिष्ट ब्रह्मज्ञानी विद्वान के रूप में पूजित हैं। आचार्य शंकर ने केरल के कालाड़ी में जन्म लिया। केवल बत्तीस वर्ष के जीवन काल में प्रतिभावान मातृभक्त आचार्य शंकर ने अपनी मातृभूमि भारत की एकता और संहति के लिए जैसे इतिहास रच दिया है, वह आज भी हमारी जातीय एकता और अखंडता की वैजयंती के साथ साथ प्रेरणा के स्रोत बन गए हैं।

इस युगस्रष्टा ने बहुत पहले से ही इस विशाल भारत वर्ष को जिस एकता के सूत्र में बांधने के प्रयास किए थे व सफल भी हुए थे, वह भारत को विपर्यस्थ करने के लिए विदेशियों द्वारा सृष्टि की गई विभिन्न परिस्थितियों का सामना करके आज भी हमारे सामने अटूट हैं। यह है भारत की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक एकता का सूत्र। आचार्य शंकर ने अपने जीवन काल में समग्र भारतवर्ष का पैदल भ्रमण करके इसके भौगोलिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक महत्व का विश्व में प्रचार प्रसार किया है। 'शंकर दिग्विजय' ग्रन्थ में जगद्गुरू की इस विजय यात्रा के विषय में अत्यंत सुंदर रूप में वर्णित है। पूर्व, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण प्रान्त के जिन जिन स्थानों का भ्रमण कर आचार्य भारतीय परंपरा के स्मृति चिन्ह छोड़ गए हैं, उनमें से कुछ मुख्य स्थान हैं: अनंतशयन (त्रिवेन्द्रम के पास), अयोध्या (उत्तरप्रदेश), इंद्रप्रस्थ (दिल्ली), उज्जैन (मध्यप्रदेश), कर्नाटक, कांचीपुरम (तमिलनाडु), काशी (उत्तरप्रदेश), केदारनाथ (हिमालय), रामेश्वरम (दक्षिण भारत), गया (बिहार), गोकर्ण (महाराष्ट्र), चिदम्बर (दक्षिण भारत), जगन्नाथ पुरी (पूर्व भारत), द्वारिका (पश्चिम भारत), नयमिषारण्य (उत्तर भारत), प्रयाग, बद्रीनाथ (हिमालय, उत्तर भारत), मथुरा, मायापुरी (हरिद्वार), शृंघेरी (दक्षिण भारत) और श्रीपर्वत (तमिलनाडु)।

उस समय भारत की विभिन्न दिशाओं में शंकराचार्य ने मुख्यत: चार स्थान निर्धारित किए थे, जहाँ पर उन्होंने हिन्दू सनातन धर्म के प्रचार और प्रसार के लिए चार मठों की स्थापना भी की। उन्होंने अपने पहले चार शिष्यों को इन चारपीठ के प्रथम पीठाधिपति के रूप में अभिषिक्त किया।

जगद्गुरू शंकराचार्य ने भारत के चार धर्मपीठों को विश्व के सर्वप्राचीन ग्रंथ, चार वेदों के प्रति समर्पित किया है। प्रत्येक वेद के निर्यास स्वरूप, एक एक महाकाव्य इस सनातन धर्मपीठ के साथ संयुक्त किया। पुरुषोत्तम क्षेत्र में प्रतिष्ठित जगन्नाथ पीठ ऋग्वेद और इसका महाकाव्य 'प्रज्ञान ब्रह्म' के साथ संपृक्त। दक्षिण में प्रतिष्ठित शृंगेरीपीठ यजुर्वेद एवं इसका महाकाव्य 'अहं ब्रह्मास्मि' के साथ जुड़ा हुआ है। पश्चिम में प्रतिष्ठित शारदापीठ सामवेद एवं इसका महाकाव्य 'तत्वमसी' के साथ संपृक्त। उसी तरह उत्तर में अवस्थित बद्रीनाथ अथर्ववेद और इसका महाकाव्य 'अयमात्मा ब्रह्म' के साथ संपृक्त।

भौगोलिक दृष्टि से देखा जाए तो ये चार धाम भारत के मानचित्र में चार दिशाओं की सीमान्त में अवस्थित हैं। वेद व महाकाव्य के माध्यम से यह चार पुण्यपीठ भारतीय सांस्कृतिक तथा आध्यात्मिक गौरव की व्याख्या करते हैं। परंपरा के अनुसार चार धाम का भ्रमण समग्र भारतवर्ष भ्रमण के समकक्ष है। पुनश्च यह चार युग के साथ भी संपृक्त है। बद्रीनाथ के बद्रीनारायण सतयुग, रामेश्वरम के रामनाथ त्रेता, द्वारिका के द्वारिकानाथ द्वापर और पुरी के जगन्नाथ कलियुग के देवता के रूप में प्रसिद्ध हैं।

जातीय एकता और अखंडता के लिए उसकी भौगोलिक सीमारेखा जितनी जरूरी है, उससे अधिक आवश्यकता है उसकी सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और बौद्धिक वैभव की। जगद्गुरू शंकराचार्य समग्र विश्व के प्रणम्य महर्षि और दार्शनिक हैं। उनकी दृष्टि में भौगोलिक एकता से भगवत और सांस्कृतिक एकता अधिक सुदृढ़ है। इसीलिए उन्होंने भौगोलिक एकता के साथ भगवत और सांस्कृतिक एकता के सूत्र में समग्र भारतवर्ष को युगों युगों तक बांधे रखने का जो संकल्प लिया है, वही है हम सब का ध्येय।

अरुंधति दास
धर्मपत्नी – श्री बिजय कुमार दास
वरिष्ठ प्रबन्धक (वित्त)

निगमित सामाजिक दायित्व

स्थानीय सरकारी औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों (आईटीआई) का विकास : औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान (आईटीआई) भारत में व्यावसायिक शिक्षा का आधार हैं और औद्योगिक संगठनों में स्किल कार्यों को करने के लिए अपेक्षित वर्क फोर्स यहीं से उपलब्ध होती है। आईटीआई से प्रशिक्षित होने वाली मानव संख्या शक्ति और औद्योगिक संगठनों को अपेक्षित मानव संख्या शक्ति के बीच के अंतराल को पूरा करने के लिए जीआरएसई ने स्थानीय आईटीआई में निम्नलिखित पहल की है:

जीआरएसई ने टॉलीगंज गवर्नमेंट आईटीआई में उन्नत विशेषताओं वाले वेल्डिंग बूथ मुहैया कर एड्वान्स्ड वैल्डिंग के उत्कृष्ट केंद्र की स्थापना में सहयोग दिया है।

महिला आईटीआई, कोलकाता (गरियाहाट) का अंगीकरण : जीआरएसई ने इलेक्ट्रोनिक मकेनिक ट्रेड व कंप्यूटर ऑपरेटर एवं प्रोग्रामिंग असिस्टेंट (सीओपीए) ट्रेड के क्लास रूम, प्रयोगशाला और वर्कशोपों के लिए मशीन, उपकरण, शैक्षिक उपकरणों तथा अन्य आधारभूत सुविधाओं को अपग्रेड करने हेतु सुविधाएं उपलब्ध कराई हैं।

स्वच्छ भारत मिशन

स्वच्छ विद्यालय के अंतर्गत स्थानीय स्कूलों में शौचालयों का निर्माण : जीआरएसई मेटियाब्रज, महेशतला तथा खिदिरपुर में शौचालयों का निर्माण कर स्वच्छ भारत तथा स्वच्छ विद्यालय मिशन में सक्रिय रूप से भाग ले रही है।

स्वच्छ भारत मिशन के अंतर्गत स्कूल के बच्चों को स्वच्छता और सफाई के बारे में प्रशिक्षण : स्वच्छता की अच्छी आदतों के बारे में उन चार स्थानीय स्कूलों में प्रशिक्षण दिया जा रहा है जहां जीआरएसई द्वारा शौचालयों का निर्माण किया गया है। स्वच्छ विद्यालय मिशन को कार्यान्वित करने के लिए निम्नलिखित समितियां गठित की गई हैं: ◆ चाइल्ड केबिनेट ◆ पेरेंट टीचर एसोसिएशन ◆ स्कूल प्रबंधन समिति/स्कूल विकास समिति/वार्ड शिक्षा समिति इसके अतिरिक्त स्वच्छता के विषय में व्यापक प्रचार प्रसार तथा स्वच्छता व्यवहार को सुनिश्चित करने के लिए विद्यार्थियों के आवासों का दौरा आदि गतिविधियां शामिल हैं। विश्व जल दिवस, विश्व स्वास्थ्य दिवस, विश्व पर्यावरण दिवस, विश्व शौचालय दिवस तथा ग्लोबल हैंड वॉशिंग दिवस का आयोजन प्रतियोगिताओं, कार्यशालाओं, रैली, नुक्कड़ नाटकों आदि के माध्यम से किया जाता है।

स्वच्छ भारत मिशन रोडमैप के लिए टीआईएसएस द्वारा अध्ययन : नेशनल सीएसआर हब, टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइन्सेज ने मेटियाब्रज में स्वच्छ भारत मिशन कार्यान्वित करने हेतु जीआरएसई के लिए परियोजनाओं का पता लगाने और रोडमैप तैयार करने के लिए मेटियाब्रज क्षेत्र (कोलकाता) का गहराई से अध्ययन किया है।

स्वच्छ भारत कोष और क्लीन गंगा फंड को अंशदान: जीआरएसई ने स्वच्छ भारत कोष में 75 लाख रुपए और क्लीन गंगा फंड में 25 लाख रूपए का योगदान दिया है।

सीआईआई के सहयोग से मेटियाब्रज के आंगनवाड़ी केन्द्रों का सुधार : मेटियाब्रज के 20 आंगनवाड़ी केन्द्रों को सुधार कर आदर्श केन्द्रों के रूप में परिणत करने के लिए जीआरएसई ने सीआईआई फाउंडेशन के साथ एक एमओयू पर हस्ताक्षर किए हैं। इस वर्ष 03 नए केन्द्रों को शामिल किया है। यह एक अनूठा सीएसआर प्रोजेक्ट है, जिसे सीआईआई-यूनिसेफ सीएसआर हब द्वारा मदद दी जा रही है। यह परियोजना आधारभूत सुविधाओं के लिए सहयोग दे रही है जैसे बाल सुलभ टोएलेट्स का निर्माण, वॉटर प्योरिफायर, बर्तन, दवाइयाँ, शैक्षणिक उपकरण आदि। जीआरएसई आंगनवाड़ी वर्करों और हेल्परों को भी प्रशिक्षण देने में सहयोग देती है।

एएलआईएमसीओ के सहयोग से दिव्याङ्ग जनों को सहयोगी उपकरण वितरित किया जाना : जीआरएसई ने आर्थिक रूप से गरीब दिव्याङ्गजनों को सहयोगी उपकरण वितरित करने के लिए आर्टिफ़िशियल लिंब्स मेनुफ़ेक्चरिंग कॉर्पोरेशन से हाथ मिलाया है। मेटियाब्रज हाई स्कूल में आयोजित समारोह में 912 लाभार्थियों को ट्राई साइकिल, व्हील चेयर, अक्सीला क्रच, एल्बो क्रच, स्मार्ट केन, ब्रेल किट, एडीएल किट तथा सेलफोन वितरित किए गए।

मेटियाब्रज, कोलकाता के गरीब और जरूरतमन्द लोगों के लिए केटेरैक्ट सर्जरी : नेशनल आई केयर के जरिए 2016-17 के दौरान कुल 500 सर्जरी की गईं। प्री-ओपरेटिव और पोस्ट ओपरेटिव जांच तथा दवाइयों आदि के अतिरिक्त लाभान्वितों को चश्मे भी वितरित किए गए।

कैंसर अस्पताल को आधारभूत सुविधाओं में सहयोग : टाटा मेडिकल सेंटर को मिड रेंज अल्ट्रासाउंड मशीन, पोर्टेबल अल्ट्रासाउंड मशीन तथा रिपोर्टिंग वर्कस्टेशन की खरीद में सहयोग दिया गया।

रक्तदान शिविर : रामकृष्ण मिशन सेवा प्रतिष्ठान, ब्लड बैंक तथा थेलेसेमिया सोसाइटी ऑफ इंडिया के सहयोग से 02 रक्तदान शिविर लगाए गए। जीआरएसई कार्मिकों, ट्रेड अप्रेंटिसों और सीआईएसएफ़ कार्मिकों ने जरूरतमंदों के लिए रक्तदान किया।

समर्थ भारत का सपना

हर एक इंसान किसी न किसी क्षेत्र में दक्ष होता हैं। दक्षताओं को पहचान कर उनका विकास करने के लिए बहुत सारे माध्यम भी हैं। परिवार, सामाजिक कार्य, शिक्षानुष्ठान, खेलकूद तथा विभिन्न प्रतिष्ठानों के माध्यम से दक्षता की जानकारी और परिचय मिलता है। पर्याप्त सुविधा मिलने से ही यह विकसित होती है। दक्षता अथवा सामर्थ्य को आधार बनाकर, सही स्थान पर उपयुक्त सामर्थ्य के विनियोग से काम करने पर अपने साथ साथ देश की प्रगति भी होती है। एक आदमी के दक्षता से कार्य करने पर सार्वजनिक उपकार भी होता है।

प्रतिभा को पहचान कर, उसे विकसित और उसका सदुपयोग करने वाला देश ही विज्ञान और कला के क्षेत्र में प्रतिष्ठा प्राप्त करता है। अगर सही स्थान पर सही प्रतिभा को स्थापित न किया जाए तो दक्ष प्रतिभाओं का पलायन होने की संभावना बढ़ जाएगी।

हाल ही में हमारे प्रधानमंत्री ने युवाशक्ति के पास मौजूद दक्षताओं को खोजने का प्रयास किया है। प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना इस दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। इसमें सरकार ने दक्षता के अनुसार रोजगार देने की योजना प्रारम्भ की है। दक्षता अथवा सामर्थ्य की तलाश करना तथा उसे प्रोत्साहन देना एक स्वागत योग्य कदम है।

अधिकांश क्षेत्रों में यह देखा गया है कि कोई शैक्षिक योग्यता हो या अभियांत्रिक शिक्षा की तालीम हो, समयसीमा की परिसमाप्ति पर उस दिशा में कोई भी आगे अनुसंधान करने, सेमिनार में भाग लेने, अपने ज्ञान को और आगे बढ़ाने आदि कार्यों को महत्व नहीं देता है। जितनी पढ़ाई की है या तालीम हासिल की है बस उसी को आधार बना कर लोग जीविका निर्वाह करना पसंद करते हैं। इस वजह से, निर्दिष्ट दक्षता व तालीम प्राप्त ज्ञान के ऊपर नए नए ज्ञान-कौशल को जानना संभव नहीं होता है। जान भी लें तो उसका ठीक तरह से प्रयोग करना कठिन होता है। इसलिए निरंतर साधना, निष्ठा, अनुसंधान तथा सरकारी प्रोत्साहन मूलक योजना के माध्यम से दक्षताओं का विकास करना जरूरी है। इससे देश की प्रगति संभव है।

आज के युग में कृषि विज्ञान कितना आगे बढ़ गया है। लेकिन आज भी हमारे कृषक भाइयों में से अधिकांश पारंपरिक पद्धति में ही खेती करते हैं। कृषक भाइयों को इस क्षेत्र से संबन्धित तालीम प्रदान करने से कृषि की क्षेत्र में उनकी दक्षता अधिक विकसित होगी।

विज्ञान और कारीगरी ज्ञान कौशल में दक्षता हासिल की हुई अधिकांश युवाशक्ति आज निजी क्षेत्र में अपने सामर्थ्य का विनियोग कर रही है। उपयुक्त सुविधा न मिलने के कारण उनका अन्य देशों में पलायन भी हो रहा है। सरकारी क्षेत्र में दक्षता का उपयुक्त विनियोग होने से सामान्य जनता ज्यादा उपकृत हो सकेगी।

सामर्थ्य के विकास के साथ साथ नैतिकता का विकास भी उतना ही जरूरी है। प्रतिभा या सामर्थ्य मस्तिष्क का कार्य है। नैतिकता हृदय का कार्य है। दोनों का आपस में गहरा संबंध है। जीवन और जीविका के लिए दोनों की आवश्यकता है। प्रतिभा के कारण नए नए आविष्कार और उद्भावन जानकारी में आते हैं। दक्षता और नैतिकता विकसित हो कर एक स्थान पर जुड़ जाने से देश की प्रगति निश्चित है। इससे सेवा प्रदानकारी और सेवा ग्रहणकारी दोनों उपकृत होते हैं। सेवा ग्रहणकारी, सामर्थ्य की प्रशंसा करने के साथ साथ अधिक उन्नति के लिए प्रोत्साहित करता है। दक्षता अगर नैतिकता से दूर चली जाए तो सामाजिक प्रोत्साहन नहीं मिलता।

सामाजिक स्तर पर, प्रतिभा की प्रशंसा और उसे प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है। सामाजिक उत्साह के अभाव के कारण कोपरनिकस, गैलीलियो, सोक्रेटिस जैसी दक्षताओं को उस समय का समाज पहचान नहीं पाया था। इसीलिए विज्ञान, कारीगरी और प्रतिभा को सामाजिक अन्धविश्वास से दूर रहना चाहिए।

कहते हैं दक्षता को पहचानने की हुनर एक दक्ष इंसान के पास ही होती है। आज समय आ गया है युवा शक्तियों को सभी दिशाओं में समर्थ बनाने तथा उनके पास मौजूद प्रतिभाओं को इस्तेमाल कर उपयुक्त विनियोग करने की। आज विज्ञान के क्षेत्र में अधिक से अधिक प्रयोगशालाएँ प्रतिस्थापित कर विज्ञान को अधिक लोकप्रिय बनाने की भी आवश्यकता है।

सामर्थ्य को ठीक तरह से न समझने से यह दिन पर दिन नष्ट हो जाएगी। इसीलिए सामर्थ्य की तलाश करना, तालीम प्रदान करना तथा सही स्थान पर इससे विनियोग करना, यह देश के लिए शुभ संकेत है। इससे समर्थ भारत का सपना निश्चित रूप से साकार होगा।

बिजय कुमार दास
वरिष्ठ प्रबन्धक (वित्त)
तारातला यूनिट

हिन्दी काव्य के ये मुस्लिम कवि

आज के भारत में भले ही हिंदुओं और मुसलमानों के बीच वैचारिक मतभेद असहिष्णुता और विद्वेष की हद तक पहुँच गया है, पुराने समय में ऐसा नहीं था। विशेष रूप से मध्यकालीन भारत में जब भारत पर मुसलमान बादशाहों का शासन था, भारतीय संस्कृति की मूल धारा अविरल रूप से न केवल प्रवाहमान थी बल्कि अनेक मुसलमान कवियों-कलाकारों द्वारा संवर्धित हो रही थी। इन्हीं मुसलमान कवियों में शामिल थे सर्वकालीन महान कवि त्रयी - कबीर, रहीम एवं रसखान। यद्यपि ये तीनों ही मुसलमान थे परंतु तीनों की सामाजिक पृष्ठभूमि अलग थी और तीनों भारतीय सांस्कृतिक चेतना के संगम में मिलने वाली तीन धाराओं के प्रतिनिधि थे।

कबीर

कबीर मुस्लिम समाज के अत्यंत ही पिछड़े वर्ग से आए हैं। उन्हें लिखना पढ़ना नहीं आता जिसे बड़ी ही साफ़गोई से उन्होंने अपने एक दोहे में स्वीकारा है - "मसि कागज छूओ नहीं, कलम धरी नहीं हाथ"। कबीर यद्यपि अनपढ़ हैं पर बहुत बड़े ज्ञानी हैं। उनका ज्ञान "आंखिन देखी" है, अनुभवजन्य है, गहरे चिंतन से उपजा है।

शायद शोषित और वंचित होने के कारण उनके जीवन में अक्खड़पन है और भाषा में भी। वे पूरी दुनिया को चुनौती देते दिखते हैं :

कबीरा खड़ा बाजार में लिए लुकाढी हाथ।
जो घर जारे आपना चलो हमारे साथ।।

कबीरदास को आडंबर बिलकुल पसंद नहीं और इसका विरोध करने का उनमें अपार साहस भी है। ईश्वर की साधना में वे बाह्याचार, कर्मकांड, परंपरा या रिवाज के सख्त विरोधी हैं। उन्होंने मूर्तिपूजा के लिए हिंदुओं की आलोचना की तो मस्जिद से ऊंची आवाज लगाने के लिए मुसलमानों को भी नहीं बक्शा।

आडंबर, कर्मकांड के बजाय वे आत्मचिंतन पर ज़ोर देते हैं :

माला फेरत जुग भया फिरा न मन का फेर।
करका मनका डार दे मनका मनका फेर।।

ईश्वर को बाहर ढूँढने के बजाय वे उसे भीतर ढूँढने की सलाह देते हैं:

कस्तूरी कुंडली बसे मृग ढूँढे बन माहीं,
ऐसे घर घर राम हैं दुनिया जाने नाहीं।

वे तन को सँवारने के बजाय, वेश बनाने के बजाय मन को सँवारने पर बल देते हैं: **तन को जोगी सब करे मन को विरला कोय।**
सहजे सब विधि पाइए जो मन जोगी होय।।

मन सँवारने के लिए मन की पवित्रता बहुत जरूरी है जो आत्मालोचना, आत्मचिंतन से ही आ सकती है। इसके सही आलोचक का पास में होना जरूरी है : **निंदक नियरे राखिए आँगन कुटीर छवाय।**
बिन पानी साबुन बिना निर्मल करत सुभाय।।

ईश्वर की सच्ची साधना के लिए संयम और संतोष जरूरी है। बहुत पाने की इच्छा या संग्रह की इच्छा ईश्वर साधना में सबसे बड़ी बाधा है। इसलिए :

साँई इतना दीजिए जामें कुटुंब समाय।
मैं भी भूखा ना रहूँ साधु न भूखा जय।।

ईश्वर प्राप्ति के मार्ग में अहंकार बहुत बड़ी बाधा है। जहां अहंकार है वहाँ प्रभु का निवास नहीं : **जब मैं था तब प्रभु नहीं अब प्रभु है मैं नाहीं।**
प्रेम गली अति साँकरी ता में दो न समाय।।

मन में ईश्वर का निवास हो इसके लिए मन में प्रेम होना चाहिए। प्रेम के बिना ईश्वर को जानना असंभव है:-

पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ पंडित भया न कोय।
ढाई आखर प्रेम का पढे सो पंडित होय।।

परंतु प्रेम पाने का मार्ग बहुत ही दुष्कर है क्योंकि :

प्रेम न बारी उपजे प्रेम न हाट बिकाय।
राजा प्रजा जेहि रुचे सीस दे सो ले जाए।।

कबीर एक महान संत हैं। साधु बनने के लिए कबीर ने गृहस्थी का त्याग नहीं किया अपितु गृहस्थी को साधु बनने का एक साधन बना दिया। संतत्व को उन्होंने उपार्जन का माध्यम नहीं बनाया। अपने भरण पोषण के लिए आजीवन जुलाहे का काम किया। उन्होंने संसार की हर वस्तु को ईश्वर का उपहार समझा और उसका कभी दुरुपयोग नहीं किया। यहाँ तक कि अपने शरीर को भी ईश्वर का उपहार समझ उसे भी- जस की तस धर दीनी चदरिया। अपनी साधना के बल पर कबीर ने भारतीय संस्कृति को एक नया मोड़ दे दिया, भारत में एक नयी साधना पद्धति "कबीर पंथ" की स्थापना कर दी।

अब्दुर्रहीम खानखाना उर्फ रहीम

कबीरदास से उलट रहीम उच्च वर्ग से आते हैं। तत्कालीन शासक वर्ग से उनका जन्म का रिश्ता था। उन्हें तत्कालीन समय की सबसे ऊँची शिक्षा मिली थी। वे एक साथ कई भाषाओं -तुर्की, फ़ारसी और संस्कृत के साथ कई विषयों के विद्वान थे। वे सम्राट अकबर के अति विश्वसनीय व्यक्ति थे। वे एक कुशल योद्धा और रणनीतिकार थे। सत्ता के सानिध्य में रहकर भी, प्रभुता सम्पन्न होकर भी घमंड उनके मन को छूआ तक नहीं था। रहीम में वीरता, विद्वता और वैराग्य का अद्भुत संगम था। सत्ता के सानिध्य में रहने से उन्हें एक तरफ सामाजिक मान सम्मान और भौतिक सुख तो मिला पर दूसरी तरफ सत्ता के इर्द गिर्द पलने वाले षडयंत्रों का भी उन्हें शिकार होना पड़ा। इन षडयंत्रों के चलते जहां बचपन में सिर से पिता का साया

उठ गया वहीं बुढ़ापे में अपनी आँखों से बेटों और दामादों की मौत देखनी पड़ी। परंतु इन सब के बावजूद ईश्वर और समाज पर उनकी आस्था अडिग रही। उनके मन का बड़प्पन घटा नहीं। रहीम जैसे संत हृदय महापुरुष बहुत कम होते हैं जो दुनिया का जहर पीकर भी दुनिया को अमृत दान करें। दुनिया उन्हें तोड़ती रही पर वे दुनिया को जोड़ने की सलाह देते रहे :-

रहिमन धागा प्रेम का मत तोड़ो चटकाय।
टूटै पै फिर न जुरै, जुरै गाँठ परिजाय।।

और भी

सोना सज्जन साधुजन टूटि जुरै सौ बार।
दुर्जन कुम्भ कुम्हार को एकै धक्का दरार।।

जहां कबीरदास की कविता का ध्येय आत्मोत्थान है, वहीं रहीम की कविताओं का ध्येय अच्छी सामाजिक व्यवस्था एवं व्यवहार है। रहीम समाज में समरसता चाहते हैं। भेदभाव उन्हें पसंद नहीं। यह भावना उनके दोहों में देखी जा सकती है:

रहिमन देख बड़ेन को लघु न दीजिए डार।
जहां काम आवै सूई कहाँ करे तलवार।।
जो बड़ेन को लघु कहें नहिं रहीम घटि जाहिं।
गिरिधर मुरलीधर कहें कछु दुख मानत नाहीं।।

रहीम परोपकार के हिमायती हैं क्योंकि सज्जनों की सहज प्रवृत्ति यही है:

वृक्ष कबहुँ नहीं फल चखै नदी न संचय नीर।

इतना ही नहीं परोपकार में दान देने वाले के साथ साथ उसका साथ निभाने वाले को सुख मिलता है।

यों रहीम सुख होत है उपकारी के संग।
बाँटनवारे को लगे ज्यों मेंहदी को रंग।।

रहीम स्वभाव से परोपकारी और महान दानी थे। वे स्वयं तो मांगने के खिलाफ थे किन्तु याचक को ना कहना उनके लिए मरने के समान था। इस संबंध में उनका प्रसिद्ध दोहा है:

रहिमन वे नर मर चुके जे कहूँ माँगन जाहिं।
ताते पहले वे मुए जिन मुख निकलत नाहिं।।

रहीम दानी थे पर दान देने का रत्तीभर भी अभिमान उन्हें नहीं था। दान देते समय वे अपनी नजरें नीची कर लेते थे क्योंकि संत हृदय रहीम अपनी दान दे पाने की योग्यता को ईश्वर की अनुकंपा समझते थे :

देनदार कोउ और है भेजत सो दिन रैन।
लोग भरम हम पै धरें यातें नीचे नैन।।

रहीम में ईश्वर पर भरोसा और स्वाभिमान कूट कूट कर भरा था। उन्हें मानपूर्वक विष पीना तो स्वीकार्य था पर अपमान के साथ अमृत पीना नहीं :

रहिमन मोहि न सुहाय अमिय पियावै मान बिन।
बरू विष देई बुलाय मान सहित मरिबो भलो।।

रहीम का मानना था कि सब कुछ दाँव पर लगाकर भी प्रतिष्ठा की रक्षा करनी चाहिए। मनुष्य के जीवन से यदि प्रतिष्ठा चली गयी तो जीवन निस्सार हो जाता है। रहीम के शब्दों में:

रहिमन पानी राखिए बिन पानी सब सून।
पानी गए न उबरे मोती, मानुस चून।।

रहीम ने अपने काव्य से भारतीय जीवन को गहराई तक छूआ है। जीवन का शायद ही कोई पहलू हो जिसके लिए रहीम के सटीक दोहे उपलब्ध न हों। रहीम भारतीय संस्कृति रूपी जलयान के लिए

ऊँचे दीप स्तम्भ की तरह हैं जो मानवता के पथप्रदर्शन के लिए सदियों से खड़ा है और सदियों तक खड़ा रहेगा।

सैयद इब्राहिम उर्फ 'रसखान'

रसखान न तो कबीर की तरह समाज के अत्यंत निम्न वर्ग से आए हैं और न रहीम की तरह समाज के अत्यंत उच्च वर्ग से। वे समाज के खाते पीते मध्यम वर्ग से आए हैं। इसीलिए जीवन में न तो उन्हें दरिद्रता का दंश झेलना पड़ा और न सत्ता के षडयंत्रों का शिकार होना पड़ा। रसखान के काव्य में न रहीम की तरह सामाजिक सरोकार की चिंता है और न कबीर की तरह आत्मोत्थान का आग्रह। यदि कुछ है तो अपने प्रिय नटनागर रंगरसिया कृष्ण की लीलाओं के रस में अवगाहन की उत्कट इच्छा। रसखान का काव्य रस की खान है। यहाँ छंदों की छटा है, अलंकारों की मधुरिमा है। रसखान का काव्य "साहित्य साहित्य के लिए" की श्रेणी का काव्य है जिसकी रचना रसखान ने "स्वांत: सुखाय" की है।

रसखान के लिए कृष्ण ही सर्वस्व हैं। बोलना भी उन्हीं के लिए और सुनना भी उन्हीं के लिए:-

बैन वही उनको गुन गाइ, औ कान वही उन बैन सो सानी।

रसखान के लिए वही सार्थक है जो कृष्ण से जुड़ा है चाहे वह मनुष्य हो, पशु पक्षी हो या निर्जीव पदार्थ हो।

मानस हौं तो वही रसखान बसौं ब्रज गोकुल गाँव के ग्वारन।
जो पशु हौं तो कहा बस मेरो चरौ नित नंद कि धेनु भंझारन।।
पाहन हौं तो वही गिरि को जो धर्यो कर छत्र पुरंदर धारन।
जो खग हौं तो बसेरो करौं मिलि कालिंदी कूल कदंब की डारन।

रसखान की कृष्ण के प्रति एकनिष्ठ भक्ति तुलसीदास की रामभक्ति से स्पर्धा करती दीखती है। रसखान ने भक्तिरस के अतिरिक्त वात्सल्य एवं श्रृंगार रस में रचनाएँ की हैं। कृष्ण के बालरूप का चित्रण करने में वे सूरदास से आगे निकलते दीखते हैं। एक बानगी देखिए:

धूरि भरे अति सोभित स्यामजू
तैसी बनी सिर सुंदर चोटी।
खेलत खात फिरै अँगना
पग पैंजनी बाजति पीरी कछोरी।

वा छवि को रसखान बिलोकत
बारत काम कला निज कोटी।
काग के भाग बड़े सजनी
हरि हाथ सौं लै गयो माखन रोटी।।

श्रृंगार रस में रसखान इतने गहरे उतर गए हैं कि उन्होंने हिन्दी के प्रसिद्ध कवियों बिहारीलाल और पद्माकर को भी पीछे छोड़ दिया है। रंगरसिया कृष्ण के साथ ब्रज की होली का श्रृंगार रस में डूबा एक चित्र देखिए:

फागुन लग्यो सखी जब ते
तब ते ब्रजमंडल धूम मच्यो है।
नारि नवेली बचै नहिं एक
बिसेख भरै सबै प्रेम अंच्यो है।।

साँझ सकारे वही रसखानि
सुरग गुलाल लै खेल रच्यो है।
को सजनी निलजी न भई
अरु कौन भटू जिहि मान बच्यो है।।

इन तीनों कवियों का जीवन वृत्त और उनकी रचनाएँ पढ़ने के उपरांत कोई भी उनके बगैर हिन्दी साहित्य और भारतीय संस्कृति की कल्पना नहीं कर सकता। ये मुसलमान साहित्यकार भारतमाता के ऐसे सपूत हैं जिनपर सब कुछ न्यौछावर किया जा सकता है। ऐसे ही मुसलमान साहित्यकारों के लिए आधुनिक हिन्दी साहित्य के पितामह भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने कहा है:

"इन मुसलमान हरिजनन पर, कोटिन हिंदून वारिए"।

प्रभुनाथ मिश्र
उप महाप्रबंधक (डेक मशीनरी)
तारातला यूनिट

आयुर्वेदिक दोहे

दही मथे माखन मिले, केसर संग मिलाए ।
होठों पर लेपित करें, रंग गुलाबी आए ।।

बहती यदि जो नाक हो, बहुत बुरा हो हाल
यूकेलिप्टिस तेल ले, सूँघे डाल रूमाल

अजवायन को पीसिए, गाढ़ा लेप लगाए
चर्म रोग सब दूर हों, तन कंचन बन जाए

अजवायन को पीस लें, नींबू संग मिलाए
फोड़ा-फुंसी सब दूर हों, सभी बला टल जाए

अजवायन-गुड़ खाइए, तभी बने कुछ काम
पीठ रोग में लाभ हो, पाएंगे सुकून आराम

ठण्ड लगे जब आपको, सर्दी से बेहाल
नींबू मधु के साथ में, अदरक पीएँ उबाल

अदरक का रस लीजिए, मधु लेवें समभाग
नियमित सेवन जब करें, सर्दी जाए भाग

रोटी मक्के की भली, खाले यदि भरपूर
बेहतर लीवर बने आपका, टी.बी. हो दूर

गाजर रस संग आँवला, बीस औ चालिस ग्राम
रक्तचाप हृदय सही, बने तंदुरुस्त एवं पाएँ आराम

संकलित
रोहित कुमार कौशिक
सुपुत्र - श्री पवन कुमार कौशिक
पर्यवेक्षक, बेली ब्रिज
61 पार्क यूनिट

पारदर्शिता - भ्रष्टाचार रोधक उपाय

भ्रष्टाचार शब्द 'भ्रष्ट' तथा 'आचार' शब्दों के योग से बना है। भ्रष्ट का अर्थ है गिरा हुआ तथा आचार का अर्थ होता है आचरण या कार्य। अत: भ्रष्टाचार का अर्थ होता है, ऐसा आचरण या कार्य जो बुरा हो। आचार संहिता के विरुद्ध स्वार्थ ग्रस्त होकर जो अनुचित कार्य समाज में, कार्यालयों आदि में, सम्पन्न हो रहे हैं, वे सब भ्रष्टाचार के अन्तर्गत आते हैं। किसी भी संस्था, राज्य या राष्ट्र के विकास में भ्रष्टाचार एक बहुत बड़ी बाधा है।

भ्रष्टाचार फैलने के प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं:

- व्यक्तिगत कारण
- स्वार्थ सिद्धि
- सामाजिक और आर्थिक कारण
- त्रुटिपूर्ण व्यवस्था
- राजनीतिक कारण

भ्रष्टाचार न तो एक व्यक्ति या वर्ग फैला सकता है और न ही यह किसी एक व्यक्ति या वर्ग द्वारा समाप्त हो सकता है। इसे दूर करने के लिए सामूहिक प्रयास आवश्यक हैं। यह प्रयास सरकार, सरकार के अंग, प्रशासन, राजनेताओं तथा जन-जन से होना चाहिए। इसे समाप्त करने के लिए निम्नलिखित उपाय अपनाए जाने चाहिए :-

- कठोर कानून व्यवस्था
- नैतिकता का भाव उत्पन्न करना
- मूल्य वृद्धि पर रोक लगाना
- चीजों को बाजार में सर्व-सुलभ कराना
- प्रशासन में चुस्ती लाना
- बड़े अपराधियों को कठोर सजा देकर उनकी सम्पत्ति को जब्त करना
- समान आय तथा वेतन की सुविधा देकर, सेवा मुक्ति पर न्यूनतम जीवन निर्वाह की सुविधा से कर्मचारियों को आश्वस्त करना
- अपराधों की पहल करने वालों को सजा देना
- व्यापारियों पर कठोर अंकुश लगाना तथा
- कम आय वर्ग को सामाजिक प्रतिष्ठा प्रदान करना

भ्रष्टाचार से देश को मुक्त कराना आज प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है। यह कार्य स्वदेश प्रेम का ही एक तरीका है। तस्करी, विदेशी मुद्रा, चोर बाजारी, मिलावट, अनियमितता आदि पर हमारी सरकार की कड़ी दृष्टि है। सुशासन या विकास की कुन्जी जनता और सरकार के मध्य पारदर्शिता में निहित है। निर्वाचित सदस्य एवं सरकार में जनता के ही व्यक्ति होते हैं। अत: विकास के लिए आवश्यक है जनता शिक्षित एवं विवेकपूर्ण चरित्रवाली बने। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिये हमारे माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र दामोदर राव मोदी जी द्वारा एक नई योजना बनाकर उसे कार्यान्वित किया जा रहा है। इस योजना के तहत मोबाइल द्वारा वे भारत के जन-जन से सरकार के कार्यों के बारे में पूछेंगे कि जनता सरकार के कार्यों से सन्तुष्ट है या असन्तुष्ट है। यदि असन्तुष्ट है तो कारण के साथ जनता अपना सुझाव भेजेगी। इस योजनानुसार सरकार जनता के सुझावों को समझकर अपने कार्यों में सुधार लाने का प्रयास करेगी।

पारदर्शिता का अर्थ है कि जनता सरकार के कार्यों को देखे, समझे और अपने विचारों से सरकार को अवगत कराए। हमारा देश और देशवासी विकास की सीढ़ी पर चढ़ कर प्रगति तभी कर सकते हैं, जब हमारी सरकार पारदर्शी बने। जनता के कल्याण के लिए किए गए अपने वायदों को निष्ठा से पूर्ण कर जनता के समक्ष रखे। यही पारदर्शिता की परिभाषा है और सफलता प्राप्त करने का एक महत्वपूर्ण यन्त्र, मन्त्र और कुन्जी है। "सबका साथ और सबका विकास" हमारा नारा होना चाहिए और यही है भी।

विदेशों से राजनैतिक, आर्थिक और व्यापारिक नीतियों को सुदृढ़ कर हमारे प्रधानमंत्री जी देश को विकास की दिशा में लेकर काफी अग्रसर हो चुके हैं, जो इस देश के विकास का परिचायक है। हमें अपने कर्तव्यों की तरफ अधिक ध्यान देना चाहिए। सरकार के उन्नतशील व रचनात्मक कार्यों को पूरा करने में सहयोग करना चाहिए। ऐसे कार्यों के सम्पूर्ण होने पर जनता का विकास होता है जो वस्तुत: देश का ही विकास है। जनतंत्र शासन जनता का, जनता के लिये और जनता के द्वारा चलायी जाने वाली शासन प्रणाली है जो शीशे की तरह पारदर्शी होता है। सत्ता पक्ष से विरोधी पक्ष सूझ-बूझ और शक्तिशाली होना चाहिए ताकि सरकार के कार्यों का सही अवलोकन हो सके। इस प्रकार जनता का कल्याण होगा और राष्ट्र विकास के पथ पर निरंतर अग्रसर होता रहेगा।

दुर्गेन्द्र मिश्र
प्रबन्धक (उत्पादन योजना और नियंत्रण)
मेन यूनिट

परमाणु विद्युत शक्ति की आवश्यकता

परमाणु विद्युत शक्ति एक उत्तम विकल्प है। निबंध आरंभ करने से पहले परमाणु शक्ति के विषय में सम्यक सूचना देना चाहूँगा। साल 1941 में अमेरिका के शिकागो विश्वविद्यालय के गवेषनागार में प्रथम परमाणु शक्ति का परीक्षण करते वक्त वैज्ञानिकों ने देखा कि अत्यंत छोटी वस्तु से अधिक मात्रा में शक्ति निर्गत हो रही है। इस जिज्ञासा ने उन्हें अधिक आविष्कार की ओर अग्रसर किया। यह परीक्षण वैज्ञानिक एनरिको फर्मी के नेतृत्व में हुआ था।

उसके बाद अमेरिका के राष्ट्रपति रूज़वेल्ट मैनहटन ने प्रोजेक्ट को अनुमोदित किया। इस प्रोजेक्ट में परमाणु शक्ति की सामर्थ्य और कौशल के विषय में अनेक नए नए तथ्य निकले और इसकी वास्तविक शक्ति का आकलन 1945 में अमेरिका में किया गया। यह वैज्ञानिक आइन्स्टीन के नेतृत्व में हुआ था। इस परीक्षण का परवर्ती रूप परमाणु बम तैयार करने में विशेष सहायक हुआ, जिनका प्रयोग विश्व युद्ध में हुआ था। पहला बम, जिसका नाम लिटल बॉय था उसे 6 अगस्त 1945 को जापान के हिरोशिमा शहर के ऊपर फेंका गया। उसके तीन दिन बाद दूसरा परमाणु बम नागासाकी शहर पर फेंका गया। दोनों परमाणु बमों की भयावहता ने सबको हैरान कर दिया। वैज्ञानिकों, जिन्होंने इनका आविष्कार किया था वे भी दुख में टूट गए थे।

इसके बाद से परमाणु शक्ति का प्रयोग केवल शांति तथा जनहित में किए जाने के प्रयास विश्व स्तर पर प्रारम्भ किए गए। तब से परमाणु शक्ति का प्रयोग विद्युत शक्ति उत्पादन तथा अन्य जनहितकारी कार्यों के लिए विश्व के विभिन्न देशों द्वारा किया जा रहा है। अमेरिका में वर्ष 1951 में प्रथम आणविक विद्युत केंद्र से विद्युत शक्ति उत्पादन प्रारम्भ हुआ। भारत में भी वर्ष 1954 से ले कर 1968 तक परमाणु शक्ति विकास के अनेक संस्थान खुले, यथा डिपार्टमेंट ऑफ अटॉमिक एनर्जी, यूरेनियम कार्पोरेशन ऑफ इंडिया, जादूगुड़ा यूरेनियम प्लांट, हैदराबाद आणविक ईंधन संस्थान एवं ट्रांबे परमाणु विद्युत उत्पादन केंद्र। परमाणु शक्ति का विभिन्न क्षेत्रों में उपयोग करके विशेष सफलता प्राप्त हुई है, जैसे चिकित्सा क्षेत्र, महाकाश विज्ञान, उपग्रह योगायोग, विद्युत उत्पादन इत्यादि।

परमाणु शक्ति ईंधन मिट्टी के नीचे पर्याप्त मात्रा में मौजूद है। इसके उपयोग द्वारा अमेरिका में 1,02,000 मेगावाट, फ्रांस में 63,000 मेगावाट, जापान में 45,000 मेगावाट विद्युत केंद्र स्थापित हुए हैं। इन केंद्रों से उन देशों में क्रमश: 30 प्रतिशत , 75 प्रतिशत और 35 प्रतिशत ऊर्जा की आवश्यकता पूरी हो रही है। 2010 तक विभिन्न देशों में 14670 रिएक्टरों में 4,00,000 मेगावाट जेनरेटर स्थापित हुए हैं। इस क्षमता को 2030 तक 7,50,000 मेगावाट करने का निर्णय 2008 में विएना सम्मेलन में तय हुआ। इस तरह के निर्णय का पहला कारण है थर्मल विद्युत केंद्र के लिए आवश्यक ईंधन ज्यादा से ज्यादा 2050 तक चल सकेगा और दूसरा कारण है, थर्मल ईंधन से निकलने वाला ताप और धूल विश्व की तापमात्रा बढ़ाने और परिवेश को दूषित करने के लिए जिम्मेदार है।

भारत में भी 7 केंद्रों में 5800 मेगावाट परमाणु विद्युत उत्पादन हो रहा है। ये सब महाराष्ट्र, राजस्थान, तमिलनाडु, उत्तरप्रदेश, गुजरात और कर्नाटक में अवस्थित हैं। यहाँ से वार्षिक 3800 करोड़ यूनिट विद्युत उत्पादित हो रही है। इसकी कार्यदक्षता भी अति उत्तम है। इसके अलावा और 4000 मेगावाट निर्माणाधीन अवस्था में है।

हमारी विद्युत शक्ति आवश्यकता का 3 प्रतिशत परमाणु शक्ति से मिलता है।

हमारे ऊपर अनेक वर्षों से आणविक शक्ति विकास हेतु प्रतिबंध रहने के कारण हम ज्यादा आगे नहीं बढ़ सके। अब यह प्रतिबंध उठ गया है और आणविक शक्ति से विद्युत उत्पादन बढ़ने लगा है। हमारा वर्तमान उत्पादन खर्चा प्रति यूनिट 2.50 से 3.00 रुपये है, जो ज्यादा उत्पादन होने से और भी कम होगा।

हमारे देश में यूरेनियम की खान है। ईंधन उत्पादन के लिए केंद्र हैं, अनेक प्रयोगशालाएं हैं। विद्युत केंद्र चलाने के लिए दक्ष प्रतिभा भी है। हमारे देश में परमाणु ऊर्जा केंद्र के लिए अनेक उपयुक्त स्थान भी हैं। इस सब का सही उपयोग करने से विश्व में हम एक परमाणु शक्ति केंद्र के रूप में परिगणित हो सकेंगे।

बिजय कुमार दास
वरिष्ठ प्रबन्धक (वित्त)
तारातला यूनिट

भ्रष्ट आचरण			
धन	**परिसंपत्ति**	**लोग**	**शक्ति**
रिश्वत	गबन	बेगार	प्रिडेटरी प्रेक्टिस
एहसान	चोरी	पक्षपात	अधिक शक्ति
वापसी	खरीदार योजना	प्रताड़ना	दंड मुक्ति
स्किमिंग	रियायत लेना	पद का दुरुपयोग	न्याय अवरोध
टेंटेड ऋण	बिलिंग धोखाधड़ी	भाई भतीजावाद	दमन
गबन	संग्रह धोखाधड़ी	अंतरंग मित्रों की भर्ती	डराना धमकाना
धोखा	विक्रेता योजना	अयोग्य	नगण्य प्रभाव
चोरी	छिपाव	हितों का संघर्ष	जमाखोरी
जबरन वसूली	खातों में हेराफेरी	साहित्यिक चोरी	भेदिया लेन देन
ब्लैकमेल	गलत बयान	बोली में हेराफेरी	अवैध संवर्धन
काले धन को वैध बनाना	व्यय पैडिंग	दर तय करना	धन लुटाना
उपहार	बेनामी	महिला शोषण	

संकलित
सुनीता शर्मा
उप महाप्रबंधक (राजभाषा)

नीम

नीम का पेड़ बड़ा गुणकारी,
शीतल छाया बड़ी निराली।
करता है यह शुद्ध हवा को,
स्वस्थ रहे सब नर-नारी।

इसकी सूखी पत्तियाँ जलाओ,
मक्खी-मच्छर दूर भगाओ।
नीम पत्तियों को ढेर में रखकर,
अनाजों को कीड़ों से बचाओ।

नीम छाल का पाउडर बनाकर,
लगे घाव पर इसे लगाओ।
शीघ्र सूख जाता हर घाव,
इतना सुन्दर है इसका प्रभाव।

नीम लकड़ियों से बने दरवाजे,
और खिड़कियाँ होती मजबूत।
इनमें कभी नहीं लगता घुन,
परखो भाई सब इसके गुण।

प्रातः नीम दातुन जो करते,
उनके दाँत सदा चमकते।
शुभ्र चमकते उनके दाँत,
जीवन भर देते हैं साथ।

आओ हर दरवाजे पर भाई,
मिलकर नीम के पौधे लगाएँ।
सीचें, रखें अरु इसे बड़ा कर,
इसके गुणों का लाभ उठाएँ।

दुर्गेन्द्र मिश्र
प्रबन्धक (उत्पादन योजना और नियंत्रण)
मेन यूनिट

बेटी

मेरी बेटी बाज़ार में मेहंदी वाली को देखते ही मचल गयी और बोली पापा मुझे मेहंदी लगवानी है। मैंने मेहंदी वाली से सवाल किया, "कैसे लगाती हो मेहंदी" ? "एक हाथ के पचास और दो के सौ" मेहंदी वाली ने जवाब दिया। मुझे मालूम नहीं था कि मेहंदी लगवाना इतना महंगा हो गया है। मैने कहा, "नही भई एक हाथ के बीस रुपए ले लो, वरना हमें नहीं लगवानी"। यह सुनकर बेटी ने मुँह फुला लिया। "अरे बेटी अब चलो भी, नहीं लगवानी इतनी महंगी मेहंदी"। मेरे माथे पर लकीरें उभर आई। "अरे लगवाने दो ना साहब, अभी आपके घर में है तो आपसे लाड भी कर सकती है, कल पराए घर चली गयी तो पता नहीं ऐसे मचल पाएगी या नहीं, तब आप भी तरसोगे बिटिया की फरमाइश पूरी करने के लिए"।

मेहंदी वाली के शब्द थे तो चुभने वाले पर उन्हें सुनकर अपनी बड़ी बेटी की याद आ गयी, जिसकी शादी तीन साल पहले एक खाते-पीते, पढ़े -लिखे परिवार में की थी। उन्होंने पहले साल से ही उसे छोटी-छोटी बातों पर सताना शुरू कर दिया था। दो साल तक मैं मुट्ठी भर-भर के उनके मुँह में रुपया ठूँसता रहा, उनका पेट बढ़ता ही चला गया और अंत में एक दिन सीढ़ियों से गिर कर बेटी की मौत की खबर ही मायके पहुंची। आज मैं छटपटाता हूँ कि मेरी वह बेटी फिर से मेरे पास लौट आए और चुन -चुनकर मैं उसकी सारी अधूरी इच्छाएं पूरी कर दूँ। पर मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि अब यह असम्भव है।

मेहंदी वाली ने कहा, "लगा दूँ बाबूजी ? एक हाथ में ही सही"। मैंने डबडबायी आंखों को पोंछते हुए कहा, "हाँ हाँ लगा दो, एक हाथ में नहीं दोनों हाथों में, और हाँ इससे भी अच्छे वाली हो तो वो लगाना" और बिटिया को आगे कर दिया। जब तक बेटी हमारे घर है, उसकी हर इच्छा जरूर पूरी करनी चाहिए। क्या पता ससुराल में कोई इच्छा पूरी हो पाए या न हो पाए।

ये बेटियाँ भी अजीब होती हैं, जब ससुराल में होती हैं, तब मायके जाने को तरसती हैं। सोचती हैं कि घर जाकर माँ को ये बताऊंगी, पापा से ये मांगूगी, बहन से ये कहूंगी, भाई को सबक सिखाऊंगी और मौज -मस्ती करूंगी। लेकिन जब सच में मायके जाती हैं तो एकदम शांत हो जाती हैं। किसी से कुछ भी नहीं बोलतीं। बस माँ-बाप, भाई-बहन से गले मिलती हैं, बहुत खुश हो जाती हैं, भूल जाती हैं कुछ पल के लिए पति और ससुराल क्योंकि एक अनोखा प्यार होता है मायके में, एक अजीब सी कशिश होती है मायके में। ससुराल में कितना भी प्यार मिले माँ-बाप की एक मुस्कान को तरसती हैं ये बेटियाँ। ससुराल में कितनी भी परेशान हों, कितनी भी रोएं, पर ससुराल में एक भी आंसू नहीं बहाती ये बेटियाँ क्योंकि बेटियों का सिर्फ एक ही आंसू माँ-बाप, भाई-बहन को हिला देता है, रुला देता है। कितनी अजीब हैं ये बेटियाँ, कितनी नटखट हैं ये बेटियाँ, भगवान की अनमोल देन हैं ये बेटियाँ। हो सके तो बेटियों को बहुत प्यार दें, उन्हें कभी भी ना रुलाएं, क्योंकि ये अनमोल बेटी दो परिवारों को जोड़ती हैं, अपने प्यार और मुस्कान से दो रिश्तों को साथ लाती हैं।

मीना कौशिक
धर्मपत्नी - श्री पवन कुमार कौशिक
पर्यवेक्षक, बेली ब्रिज

डॉ ए पी जे अब्दुल कलाम के अनमोल विचार

डॉक्टर ए.पी.जे. अब्दुल कलाम की चंद लाइनें जो हमें जीवन में हमेशा याद रखनी चाहिए और हो सके तो इन पर अमल भी करना चाहिए –

- जीवन में कभी किसी को बेकार मत समझना, क्योंकि बंद पड़ी घड़ी भी दिन में दो बार सही समय बताती है।
- किसी की बुराई तलाश करने वाले इंसान की मिसाल उस मक्खी की तरह है, जो सारे खूबसूरत जिस्म को छोड़कर केवल जख्म पर ही बैठती हैं।

- टूट जाता है गरीबी में वो रिश्ता जो खास होता है, हजारों यार बनते हैं जब पैसा पास होता है।
- मुस्करा कर देखो तो सारा जहाँ रंगीन है, वरना भीगी पलकों से तो आईना भी धुंधला नजर आता है।
- जल्द मिलने वाली चीजें ज्यादा दिन तक नहीं चलती, और जो चीजें ज्यादा दिन तक चलती हैं वो जल्दी नहीं मिलती।
- बुरे दिनों का एक अच्छा फायदा, अच्छे दोस्त परखे जाते हैं।
- बीमारी खरगोश की तरह आती है और कछुए की तरह जाती है, जबकि पैसा कछुए की तरह आता है और खरगोश की तरह जाता है।
- छोटी छोटी बातों में आनंद खोजना चाहिए, क्योंकि बड़ी बड़ी तो जीवन में कुछ ही होती है।
- ईश्वर से कुछ मांगने पर न मिले तो उससे नाराज ना होना, क्योंकि ईश्वर वह नहीं देता जो आपको अच्छा लगता है, बल्कि वह देता है जो आपके लिए अच्छा होता है।
- ये सोच है हम इन्सानों की, कि एक अकेला क्या कर सकता है, पर देख जरा उस सूरज को वो अकेला ही तो चमकता है।
- लगातार हो रही असफलताओं से निराश नहीं होना चाहिए, क्योंकि कभी कभी गुच्छे की आखिरी चाबी भी ताला खोल देती है।
- रिश्ते चाहे कितने ही बुरे हो, उन्हें तोड़ना मत क्योंकि पानी चाहे कितना भी गंदा हो, अगर प्यास नही बुझा सकता तो वो आग तो बुझा सकता है।
- अब वफा की उम्मीद भी किस से करे भला, मिट्टी के बने लोग कागजों में बिक जाते हैं।
- इंसान की तरह बोलना ना आए तो जानवर की तरह मौन रहना अच्छा है।
- जब हम बोलना नही जानते थे तो हमारे बोले बिना "माँ" हमारी बातों को समझ जाती थी और आज हम हर बात पर कहते हैं छोड़ो भी "माँ" आप नही समझोगी।
- शुक्र गुजार हूँ उन तमाम लोगों का, जिन्होंने बुरे वक्त में मेरा साथ छोड़ दिया, क्योंकि उन्हें भरोसा था कि मैं मुसीबतों से अकेले ही निपट सकता हूँ।
- शर्म की अमीरी से इज्जत की गरीबी अच्छी है।
- जीवन में उतार चढ़ाव आना बहुत जरूरी है–, क्योंकि ECG में सीधी लाइन का मतलब मौत ही होता है।
- रिश्ते आजकल रोटी की तरह हो गए हैं, जरा सी आंच तेज क्या हुई जल भून कर खाक हो गए हैं।
- जीवन में अच्छे लोगों की तलाश मत करो, खुद अच्छे बन जाओ, शायद किसी की तलाश पूरी हो।

संकलित
मोहित कुमार कौशिक
सुपुत्र – श्री पवन कुमार कौशिक
पर्यवेक्षक, बेली ब्रिज
61 पार्क यूनिट

देश की शक्ति देश की भक्ति

भारत माता की संतान हैं हम
उज्ज्वल भविष्य का सितारा हैं हम।
यह देश प्यारा जन्मभूमि हमारा
भर देंगे इसमें सुषमा की धारा।
जन्मभूमि हमारी स्वर्ग से सुंदर
करेंगे न कभी इसका अनादर।
अन्याय के आगे हम कभी न झुकेंगे
संकट के आगे सदा साहस रखेंगे।
चुनौती से हम कभी न भागेंगे
भ्रष्टाचार से हम सदैव लड़ेंगे।
ईर्ष्या क्रोध हम कभी न करेंगे
नदी के स्रोत जैसे आगे बढ़ेंगे ।
हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई
हम सब हैं भाई भाई।
एकता ही हमारे देश की शक्ति
मिलकर करेंगे देश की भक्ति।

प्रीति दास
सुपुत्री – श्री बिजय कुमार दास
वरिष्ठ प्रबन्धक (वित्त)
तारातला यूनिट

हमारे कर्मचारी - हमारी बहुमूल्य संपदा

"**You can buy** a man's time, you can buy a man's physical presence at a certain place, you can even buy a measured number of skilled muscular motions per hour or day.

But you cannot buy enthusiasm, you cannot buy initiative, you cannot buy loyalty; you cannot buy the devotion of hearts minds, and souls. **YOU HAVE TO EARN THESE THINGS."** — Clarence Francis

अर्थात–

"आप एक व्यक्ति का समय खरीद सकते हैं, आप एक व्यक्ति की स्थान विशेष पर उसकी वास्तविक उपस्थिति खरीद सकते हैं, यहाँ तक कि आप उसकी मांसपेशियों की कुशल गति प्रति घंटे या प्रति दिन के हिसाब से खरीद सकते हैं।

परंतु आप उत्साह नहीं खरीद सकते, आप प्रेरित भाव नहीं खरीद सकते, आप निष्ठा नहीं खरीद सकते; आप हृदय, मस्तिष्क और आत्मा का समर्पण का भाव नहीं खरीद सकते। **आप को यह सब कमाना पड़ेगा"।**

क्लारेंस फ्रांसिस के उपरोक्त शब्द आज के परिवेश में एक सफल नेतृत्व और लीडरशिप देने और किसी भी संस्था की कामयाबी का मूल मंत्र है। आज सभी को प्रतिस्पर्धा के समान अवसर हैं, चाहे वह सार्वजनिक क्षेत्र हो या निजी क्षेत्र। सब्सिडी कल्चर, जिसमें उत्पादन मूल्यों पर ज़्यादा ध्यान नहीं दिया जाता था, अब चलन खतम हो रहा है। आज सफलता के लिए, सभी को अपने संसाधनों का इष्टतम उपयोग कर, उच्च गुणवत्ता युक्त उत्पाद न्यूनतम दामों पर समय पर उपलब्ध करवाने होंगे।

पहले उच्च अधिकारियों व उनके अधीन कर्मचारियों में मास्टर / मालिक व नौकर का रिश्ता समझा जाता था। जगह जगह पर अनेक साइन बोर्ड देखने को मिलते थे, जहां आखिर में लिखा होता था: आदेशानुसार (By Order)। दूसरे शब्दों में, डंडे के ज़ोर पर काम करवाने का तरीका अपनाया जाता था। दमन की नीति कुछ हद तक चलती आ रही थी। तकनीक ज़्यादा विकसित नहीं थी, न ही

आज की प्रतिस्पर्धा का कोई माहौल था, न कुदरती धनसंपदा की कोई कमी थी। कंपनी में कर्मचारियों को दूसरे संसाधनों की अपेक्षा बहुत कम महत्व दिया जाता था। न ही उनके प्रति अपेक्षित संवेदनशीलता थी। दूसरे शब्दों में पहले शासन किया जाता था अब संचालन की प्रथा है। आज माहौल एक दम विपरीत है। आज के परिवेश में मानव संसाधन बहुमूल्य सम्पदा समझी जाती है। अब सोच में बदलाव आया है, कर्मचारी उनके लिए काम करते हैं के स्थान पर सोच में यह तबदीली आयी है, कि कर्मचारी उनके साथ काम करते हैं।

मानव संसाधन एक नई संकल्पना है। मानव संसाधन प्रबंधन वह प्रबंधन है, जो मानव संसाधन विभाग द्वारा डिज़ाइन किया जाता है ताकि नियोक्ता के सामरिक उद्देश्यों को पूरा करने के लिए कार्मिक के कार्य निष्पादन को अधिकतम किया जा सके। हालांकि, पहली बार यह अठारवीं शताब्दी के यूरोप में औद्योगिक क्रांति के दौरान, रोबर्ट ओवेन (Robert Owen) और चार्ल्स बब्बगे (Charles Babbage) के सरल विचारों से विकसित हुई थी, जिनके अनुसार कार्मिक किसी भी संस्था की कामयाबी के लिए अति महत्वपूर्ण हैं और कर्मचारी कल्याण, कार्य की उत्तमता व अधिकतम उत्पादन को जन्म देता है। परंतु मानव संसाधन, बीसवी शताब्दी के प्रारंभ में विशिष्ट क्षेत्र के रूप में उभरा जिसमें F. W. Taylor(1856-1915) व H.Fayol(1841-1925)ने महत्वपूर्ण योगदान दिया, जिन्हें इस क्षेत्र में वैज्ञानिक प्रबंधन का जनक कहा जाता है।

मानव संसाधन एक विशाल विषय है, अत: तकनीकियों जैसे Functions of Management, Planning, Organising, Recruitment, Selection, Job analysis/description/ evaluation, T&D, Promotion, Demotion, Appraisals, या कानूनी अधिनियम जैसे न्यूनतम मजदूरी अधिनियम, ठेका श्रमिक अधिनियम, पीएफ़, ईएसआई, ग्रेचुइटी, कामगार क्षतिपूर्ति अधिनियम आदि में न जाते हुए, इस लेख में केवल उनके महत्व, उनके प्रति संवेदनशीलता व उन्हें प्रेरित करने की आवश्यकता के कुछ पहलुओं पर ही लेख को सीमित किया जा रहा है।

किसी भी संस्थान को चलाने के लिए अनेक संसाधनों की आवश्यकता

होती है, जैसे भूमि, संयंत्र एवं मशीनरी, कच्चा माल इत्यादि, परंतु इन सब में सबसे महत्वपूर्ण संसाधन, मानव संसाधन है, क्योंकि बाकी सब संसाधन स्थिर हैं, केवल मानव संसाधन ही गतिशील है, और यही संसाधन है जो अन्य संसाधनों को उच्चतम तरीके से उपयोग कर परंपरागत अर्थव्यवस्था को आधुनिक व औद्योगिक अर्थव्यवस्था में परिवर्तित करता है। अत:, किसी भी संस्था या कंपनी की कामयाबी, मुख्यत: उसके मानव संसाधनों पर निर्भर होती है।

मानव संसाधन की महत्ता इस बात से भी आँकी जा सकती है, कि जो औद्योगिक घराने पहले अपनी कंपनियों में खुद या अपने परिवार के सदस्यों को ही सी.ई.ओ. या प्रबंध निदेशक बनाते थे, आज बाहरी कौशल सामर्थ्ययुक्त लोगों को इन पदों पर नियुक्त कर, इन्हें नेतृत्व सौंप रहे हैं। टाटा, इंफ़ोसिस, विप्रो, टेक महिंद्रा आदि इसके जीते जागते उदाहरण हैं, जिन्होंने इन कंपनियों को, इस प्रतिस्पर्धा के दौर में नई ऊंचाइयों पर पहुंचाया है।

आज, किसी भी संस्था या कंपनी को सफलतापूर्वक चलाने के लिए ये आवश्यक है, कि उसके कर्मचारी खुश, संतुष्ट व प्रेरित हों और कंपनी के लाभ व कामयाबी के समानुपात में हों, अन्यथा आज के परिवेश में संस्था ज़्यादा देर नहीं टिक पाएगी। नाखुश, असंतुष्ट व प्रेरणा रहित कर्मचारी या तो संस्था छोड़ कर चला जाएगा और अगर नहीं भी गया तो कंपनी में रह कर भी भावनात्मक रूप से चला जाएगा और उत्पादन प्रभावित होगा।

मानव संसाधन, एक गतिशील विषय है। पहले संस्थाओं में कार्मिक विभाग (Personnel Department) होता था जो केवल अपनी संस्था के कर्मचारियों से संबन्धित कार्यों तक सीमित रहता था, लेकिन आज के परिवेश में यह परिवर्तित हो कर मानव संसाधन विभाग (HR Management) में बदल गया है और उसका संबंध हर उस व्यक्ति से है, जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से संस्था या कंपनी के कार्य से जुड़ा है। चाहे वह ट्रांसपोर्टर हो, वेंडर हो, या कोई सर्विस प्रोवाइडर हो, उनको सभी को समयबद्ध तरीके से गुणवत्ता व उचित दामों पर सर्विस प्रोवाइड करने के लिए Facilitate करना ज़रूरी है। Ease of doing business, इसी सोच व दिशा का एक रूप है।

प्रबंधन अब पुरानी सोच से बाहर निकल रहे हैं और अब सोच ये है कि मालिक और **कर्मचारी उद्योग में बराबर के साझीदार हैं और सम्मानजनक व्यवहार के हकदार हैं।** आज बहुत से सार्वजनिक व निजी क्षेत्र के बड़े औद्योगिक संस्थान, अपनी कंपनी के शेयर अपने कर्मचारियों को दे कर उनको कंपनी में हिस्सेदार बना रहे हैं।

मुख्यत: उच्च प्रबंधन व मानव संसाधन विभाग का दायित्व है कि वो सुनिश्चित करे कि, उसका हर एक कर्मचारी खुश, संतुष्ट व प्रेरित व हाई मोरेल में है, ताकि वह अपने कौशल व अन्य संसाधनों का ईष्टतम उपयोग कर उच्चतम गुणवत्ता व अत्यधिक मात्रा में न्यूनतम लागत पर उत्पादन कर स्पर्धा के माहौल में कामयाब हो सके।

उपरोक्त के अलावा सभी विभागों के उच्च प्रबंधन, मध्यम प्रबंधन व कनिष्ठ प्रबंधन जिनका अपने अधीनस्थ कर्मचारियों या किसी अन्य व्यक्ति, जो कंपनी से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से जुड़ा है, से संवाद होता है, वे भी मानव संसाधन के काम की प्रक्रिया से जुड़े हैं, जो मानव संसाधन के स्पेशियलाइज्ड अधिकारियों के सहयोग व मार्गदर्शन से इस प्रक्रिया को निष्पादित करते हैं। मानव संसाधन संस्था का वह Central sub system है, जो सभी प्रकार के फंक्शनल मैनेजमेंट से जुड़ा है, चाहे वह Production Management हो, Marketing Management हो, Financial Management हो या कोई अन्य विभाग।

मानव संसाधन विभाग का दायित्व, हर एक कर्मचारी, समाज व संस्था के प्रति जुड़ा हुआ है। **हर व्यक्ति** की कुछ आशाएँ, आकांक्षाएँ और महत्वकांक्षाएँ होती है, जब वह किसी संस्थान को जॉइन करता है, जैसे जॉब संतुष्टि, चुनौतिपूर्ण कार्य, गर्व, स्टेटस, Recognition, उन्नति के लिए अवसर इत्यादि। इसी तरह **संगठन के** अपने लक्ष्य होते हैं, जिसमें शामिल हैं सर्वाइवल, उन्नति, विकास, लाभकारिता, उत्पादकता, नवीकरण, उत्कृष्टता आदि और ऐसे ही, **समाज के भी** कुछ उद्देश्य होते हैं जिनमें रोजगार के समान अवसर, पिछड़े वर्गों व दिव्यांगों के हितों की रक्षा, आर्थिक असमानता को कम कर के आमदनी का समान बँटवारा, सीएसआर के जरिए विभिन्न गतिविधियों द्वारा समाज का विकास आदि।

उच्च प्रबंधन विशेषकर मानव संसाधन का दायित्व है कि वो **व्यक्तिगत** लक्ष्यों, **संगठन** के लक्ष्यों और **समाज** के लक्ष्यों को एकीकृत व समन्वित करे, ताकि मानव संसाधन का ईष्टतम उपयोग हो व संस्था इस परिवेश में कामयाबी व सफलता हासिल कर सके और सभी की आशाएँ व आकांक्षाएँ पूरी हो सकें।

अगर हम किसी कामयाब संस्थान या कंपनी का अवलोकन कर

देखें, तो पाएंगे कि ये वही कंपनी हैं, जिनके कर्मचारी खुश, संतुष्ट व प्रेरित हैं। जबकि अनेक कंपनियां जो डूब गई हैं, वे वही हैं, जिनके कर्मचारी असंतुष्ट, नाखुश, और De-motivated हैं।

कर्मचारियों का विश्वास जीतने के लिए, उनको साथ लेकर चलने के लिए संस्थान में पारदर्शिता लानी होगी, किसी भी प्रकार के भेदभाव को रोकना होगा, भ्रष्ट प्रेक्टिस व निजी स्वार्थों को ताक पर रखना होगा, मनमाने निर्णयों से बचना होगा, कर्मचारियों के प्रति संवेदनशील होना पड़ेगा, उनकी निजी या कंपनी में परेशानियों को समझना होगा, उनकी समस्याओं का ईमानदारी से निदान करना होगा, कंपनी की पॉलिसी में उनके हितों का ध्यान रखना होगा। कर्मचारियों पर किसी बहुमूल्य परिसंपत्ति की तरह तवज्जो देनी होगी। इस ओर खास ध्यान देना होगा कि हर कर्मचारी खुश, संतुष्ट व प्रेरित है, चाहे वह रेगुलर कर्मचारी हो, चाहे कांट्रैक्ट कर्मचारी हो, चाहे प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से संस्थान के कार्य से जुड़ा हो। इन सबसे न केवल उच्चतम गुणवत्ता व अधिकतम उत्पादन होगा बल्कि औद्योगिक संबंध की कठिनाई भी उत्पन्न नहीं होगी।

आज सभी कामयाब उद्योग अपने बहुमूल्य मानव संसाधनों को संभाल कर रखने के लिए चिंतित है और कर्मचारियों के Retention के नए नए तरीखे ढूँढते हैं, ताकि कोई अन्य उद्योग उनको छीन कर न ले जाए। अनेक संस्थाएं या उद्योग, वर्कर्स को निर्णय प्रणाली की प्रक्रिया में शामिल करते हैं। उनको अपना शेयर होल्डर बनाते हैं। सार्वजनिक क्षेत्र के अनेक बैंकों में तो वर्कर्स रिप्रेजेंटेटिव को बोर्ड में निदेशक नोमिनेट किया जाता है। हर कर्मचारी चाहे वह कोंटरैक्ट लेबर हो, रेगुलर कर्मचारी हो या कंपनी के उत्पादन में किसी भी तरह जुड़ा है, उसकी सुध लेनी होगी, समाज को जोड़ना होगा यानि कंपनी, कर्मचारियों व समाज के लक्ष्यों को कंपनी के लक्ष्यों के साथ समन्वित/कोओर्डिनेट और इंटीग्रेट करना होगा ताकि संस्थान के उत्पादन व लाभ में बढ़ोतरी हो, देश की अर्थव्यवस्था का विकास हो, देशवासी लाभान्वित हों।

हमारे आदरणीय प्रधान मंत्री जी ने देश व जनता के विकास व लोगों को प्रेरित करने के लिए अनेक कदम उठाए है। उन्होंने बड़ा महत्वपूर्ण नारा दिया है, 'सबका साथ, सबका विकास'। इसके इलावा उन्होंने सुशासन (Good Governance) पर ज़ोर दिया है। पारदर्शिता पर ज़ोर दिया है। उन्होंने जवाबदेही पर ज़ोर दिया है। ईज़ ऑफ डूइंग बिज़नेस पर ज़ोर दिया है, लोगों के साथ संवाद के माध्यम से जुड़ने की प्रथा बनाई है। लोगों को साथ ले कर चलने, कठिन परिश्रम करने, सबके विकास के लिए अनेक कदम उठाने से, न केवल लोगों में वो लोकप्रिए हुए हैं अपितु देश की बागडोर संभालने के कुछ समय के अंदर ही, देश के विकास में क्रांति सी ला दी है। लोग दिल से और जोश से, उनके मार्ग दर्शन में, विकास के रास्ते पर चल रहे है। लाखों लोगों ने उनकी एक अपील पर गैस सब्सिडी अपनी मर्ज़ी से त्याग दी, ताकि गरीब लोगों को गैस दी जा सके।

इस में कोई शक या शुबा नहीं है कि मानव संसाधन की मुख्य Responsibility संस्थान के मानव संसाधन व उच्च अधिकारियों की है, लेकिन इस प्रक्रिया में हर लाइन व स्टाफ के लोग जुड़े हुए हैं, चाहे वह टॉप मैनेजमेंट हो, मीडियम मैनेजमेंट हो, या जूनियर मैनेजमेंट हो। टॉप मैनेजमेंट पूरी कंपनी का व मीडियम और जूनियर मैनेजमेंट अपनी डिविजन व डिपार्टमेंट लेवल पर इससे जुड़े हुए हैं। वे एक अनुकूल माहौल बनाने व कंपनी की सफलता व समाज व देश के विकास में मददगार साबित हो सकते हैं।

> "A willing heart is a key to the door of possibilities. A person with a willing heart can do a lot of things, that were declared as being impossible."
>
> **— Kyos Magupe**

आइए हम सब मिल कर, अपने कर्मचारियों को अपनी संस्था में बराबर का साथी बना कर, उनके प्रति संवेदनशील हो कर, उनको साथ लेकर, अपनी संस्था, समाज और देश के विकास में अपना भरपूर योगदान दें और हरमन प्यारे प्रधानमंत्री जी की मुहिम, सबका साथ सबका विकास और गुड गवर्नेंस से जुड़ कर देश को विकास की नई बुलन्दियों तक पहुंचाएं।

अशोक कुमार
पति – श्रीमती सुनीता शर्मा
उप महाप्रबंधक (राजभाषा)

हिंदी व कम्प्यूटर कार्यशालाएं

कंपनी में नियमित रूप से हिंदी व कंप्यूटर कार्यशालाओं का आयोजन किया जाता है। कर्मचारियों को हिंदी में काम के व्यावहारिक ज्ञान के साथ साथ कम्प्यूटर पर हिंदी में काम करने की जानकारी दी जाती है। समय समय पर कार्यशालाएं किसी विभाग विशेष के अधिकारियों को शामिल कर की गईं ताकि एक ही प्रकृति के कार्य का अभ्यास एक साथ करवाया जा सके। वर्ष के दौरान हिंदी कार्यशाला के साथ साथ कम्प्यूटर कार्यशालाएं भी आयोजित की गई। इसके अतिरिक्त समय समय पर विभिन्न यूनिटों की उत्पादन शॉपों में कार्मिकों के कार्यस्थल पर टेबल कार्यशालाएँ आयोजित कर उन्हें हिंदी में काम करने के विषय में जानकारी दी जाती है। उन्हें उनके ही कम्प्यूटर पर हिंदी में काम करने का अभ्यास करवाया जाता है और उनके द्वारा प्रयोग किए जा रहे मानक मसौदों को हिंदी/द्विभाषी में उपलब्ध करवाया जाता है। इस प्रयोग से न केवल सर्विस विभागों अपितु उत्पादन विभागों में भी हिंदी के प्रयोग में महत्वपूर्ण वृद्धि हुई है।

आरबीडी यूनिट में दिनांक 22.06.2017 को हिन्दी/कंप्यूटर कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्मिकों को कंप्यूटर पर हिन्दी में काम करने का अभ्यास करवाया गया और गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा विकसित ई-टूल्स की जानकारी दी गई। संकाय सदस्य के रूप में गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के कोलकाता कार्यालय से श्री अनूप कुमार, सहायक निदेशक ने बड़े ही रोचक और सरल ढंग से कार्मिकों को संबन्धित जानकारी दी। इस अवसर पर डीआईजी सुब्रोतो घोष, महाप्रबन्धक (आरबीडी) भी उपस्थित थे, उन्होंने आरबीडी में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ाने के लिए इस कार्यशाला को अत्यंत लाभकारी बताया।

डीईपी, रांची यूनिट में दिनांक 29.05.17 और 30.05.17 को विभिन्न विभागों में राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी मॉनिटरिंग व टेबल कार्यशालाएँ की गई। उप महाप्रबंधक (राजभाषा) श्रीमती सुनीता शर्मा व उप प्रबन्धक (राजभाषा) श्री मनीष कुमार सिंह द्वारा कार्मिकों को उनके कार्यस्थल पर जाकर राजभाषा के प्रयोग के विषय में जानकारी देने के साथ साथ कम्प्यूटरों पर हिन्दी में काम करने का अभ्यास करवाया गया।

30.05.17 को उप महाप्रबंधक एवं प्रभारी, डीईपी श्री डी के जे सिंह की अध्यक्षता में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक आयोजित की गई जिसमें सभी विभागों के अधिकारियों को अपने अपने विभाग में राजभाषा कार्यान्वयन कार्य बढ़ाने के निदेश दिए गए।

रक्षा मंत्रालय द्वारा जीआरएसई में राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी निरीक्षण

10 जुलाई 2017 को रक्षा मंत्रालय, रक्षा उत्पादन विभाग से श्री बाबू लाल, परामर्शदाता (राजभाषा) और श्री काले खां, वरिष्ठ अनुवादक जीआरएसई में राजभाषा के प्रयोग का निरीक्षण करने के लिए उपस्थित हुए। उन्होंने जीआरएसई द्वारा राजभाषा के प्रयोग व इस दिशा में किए गए उल्लेखनीय कार्यों की सराहना की।

हिन्दी पत्राचार व हिन्दी नोटिंग-ड्राफ्टिंग को बढ़ावा देने के लिए अंत: विभागीय त्रैमासिक प्रोत्साहन योजना

इस प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत सर्विस, उत्पादन व उत्पादन सपोर्ट ग्रुप के विजेता विभागों को उनके द्वारा भेजी गई हिंदी के प्रगामी प्रयोग संबंधी तिमाही रिपोर्ट के आधार पर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक में अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक द्वारा पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र वितरित किए जाते हैं ।

दिसंबर 2016 तिमाही पुरस्कार वितरण - 24 मार्च 2017

मार्च 2017 तिमाही पुरस्कार वितरण - 20 जून 2017

स्कूलों में हिन्दी प्रतियोगिताओं का आयोजन

राजभाषा का प्रयोग जीआरएसई की चारदीवारी तक ही सीमित नहीं है, अपितु कंपनी के बाहर भी स्कूलों में नियमित प्रतियोगिताएं आयोजित कर इसका प्रचार प्रसार किया जाता है। दिनांक 28.04.17 को आदर्श हिन्दी हाई स्कूल, कोलकाता में हिन्दी प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं और तीन विजेता विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया गया।

हिन्दी पत्रिका का प्रकाशन

हिन्दी पत्रिका '**राजभाषा जागृति**' के 14वें अंक का विमोचन अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक द्वारा 24.03.17 को आयोजित राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक में किया गया। **राजभाषा जागृति** के दोनों अंकों में प्राप्त सर्वश्रेष्ठ प्रविष्टियों के लिए हिंदी भाषी और हिंदीतर भाषी कार्मिकों को वर्ष के दौरान नकद पुरस्कार दिए जाते हैं। इसके अतिरिक्त कार्मिकों के परिवार के सदस्यों द्वारा लिखी सर्वश्रेष्ठ रचनाओं को भी पुरस्कृत करने के लिए प्रोत्साहन योजना लागू है।

कार्मिकों के परिवारों को हिन्दी पत्रिका से जोड़ा गया

कंपनी की हिन्दी पत्रिका 'राजभाषा जागृति' में कार्मिकों के परिवारों की रचनाओं को शामिल कर उन्हें भी हिन्दी लेखन की ओर प्रेरित किया गया है। परिवार के सदस्यों की सर्वश्रेष्ठ रचनाओं को भी पुरस्कृत करने की प्रोत्साहन योजना लागू है। वर्ष के दौरान ऐसे रचनाकारों को 19.04.17 को आयोजित 'जीआरएसई दिवस' के दौरान पुरस्कृत किया गया।

"राजभाषा जागृति' अर्धवार्षिक पत्रिका के 14वें अंक की प्रति प्राप्त कर हमें प्रसन्नता हुई। इस अंक की सभी रचनाएँ उच्चस्तरीय हैं। आवरण कथा के अंतर्गत छपी रचना "**वरिष्ठ नागरिक- हमारी धरोहर**" बहुत ही अच्छी एवं प्रशंसनीय है। वरिष्ठ नागरिक को समर्पित इस अंक में छपी अन्य रचनाएँ -मासूम बुढ़ापा और ओल्ड इज़ गोल्ड हृदयस्पर्शी हैं। पत्रिका की साज सज्जा व मुद्रण आकर्षक एवं सुंदर है।

संपादक मण्डल का प्रयास सराहनीय है। पत्रिका के संपादक मण्डल को भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण की ओर से हार्दिक बधाइयाँ एवं आगामी अंक हेतु ढेर सारी शुभकामनाएँ।

राजभाषा के सर्वश्रेष्ठ कार्यान्वयन हेतु भारत के माननीय राष्ट्रपति महोदय से गार्डन रीच शिपबिल्डर्स एण्ड इंजीनियर्स लिमिटेड को **राजभाषा कीर्ति प्रथम पुरस्कार** तथा गृह पत्रिका पुरस्कार योजना के अंतर्गत राजभाषा जागृति को **राजभाषा कीर्ति पुरस्कार** प्राप्त होने पर विशेष रूप से हार्दिक बधाई।

अनीता गोस्वामी
सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा)
भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण
कोलकाता

आपके उद्यम की हिन्दी पत्रिका 'राजभाषा जागृति' का नवीनतम अंक प्राप्त हुआ। याद से पत्रिका भेजने के लिए धन्यवाद। पत्रिका में प्रस्तुत राजभाषा गतिविधियों से राजभाषा कार्यान्वयन के प्रति उद्यम की प्रतिबद्धता प्रकट होती है। 'मारिन, नीदरलैंड में 17-ए का मॉडल परीक्षण', 'गोलियथ क्रेन' तथा 'जहाज निर्माण के भविष्य को बदलने वाली 5 टेकनोलोजी' पर आधारित लेख ज्ञानवर्धक हैं। विमुद्रीकरण, पर्यटन संबंधी लेख और सभी कविताएं पठनीय हैं। अधिकारी व कर्मचारियों के साथ साथ उनके परिजनों के लेखन को भी पत्रिका में जगह देना अभिनंदनीय है।

पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति की शुभकामनाओं के साथ।
सधन्यवाद।

होमनिधि शर्मा
वरिष्ठ प्रबन्धक (राजभाषा एवं
सदस्य सचिव, टोलिक (उ)
भारत डायनामिक्स लिमिटेड
हैदराबाद

आपके कार्यालय की राजभाषा गृह पत्रिका – "राजभाषा जागृति" का 14वाँ अंक, मार्च 2017 प्राप्त हुआ। पत्रिका उपलब्ध कराने के लिए धन्यवाद! आपकी इस पत्रिका के माध्यम से आपके कार्यालय की राजभाषा संबंधी विविध गतिविधियों के अलावा कंपनी की अन्य गतिविधियों की जानकारी प्राप्त होती है। गार्डन रीच शिपबिल्डर्स एण्ड इंजीनियर्स लिमिटेड की विभिन्न उत्कृष्ट उपलब्धियों की जानकारी भी मिली। उपलब्धियों के लिए हार्दिक अभिनंदन!

56 पृष्ठों की इस पत्रिका में आपने अपनी कार्यकुशलता का परिचय दिया है। 'वरिष्ठ नागरिक – हमारी धरोहर' आवरण कथा से लेकर 'राजभाषा गतिविधिया' तक की प्रत्येक सामग्री पठनीय और दर्शनीय है। भारतीय अर्थव्यवस्था और विमुद्रीकरण संबंधी- विमुद्रीकरण और भ्रष्टाचार निर्मूलन (बिजय कुमार दास), विमुद्रीकरण-भारतीय अर्थव्यवस्था (नबनीता बेरा), मेरी नजर में भारत की नकदीहीन अर्थव्यवस्था (सौरिस सामंता) के आलेख काफी ज्ञानवर्धक हैं। कविताएँ – मासूम बुढ़ापा (अर्चना शर्मा), आशा के दीप (दुर्गेंद्र मिश्र), सर्जिकल स्ट्राइक (जय भगवान) तथा कदम-कदम बढ़े चलो (रत्ना कुमारी) अच्छी लगीं। बिंब और प्रतीकों के माध्यम से रचनाकारों ने भावों को संप्रेषित करने का सफल प्रयास किया है।

सुंदर और पठनीय पत्रिका प्रकाशित करने के लिए कलात्मक दृष्टि की आवश्यकता होती है। परिश्रम के बिना इतनी अच्छी पत्रिका प्रकाशित कर पाना संभव नहीं। आपका संपादन कौशल सराहनीय है। शुभकामनाएँ!!!
अगले अंक की प्रतीक्षा में.....

डॉ. बी बालाजी
सहायक प्रबंधक (राजभाषा)
मिश्र धातु निगम लिमिटेड (मिधानि)
हैदराबाद

राजभाषा के क्षेत्र में रचा गया सुनहरा इतिहास

गत 15 वर्षों में (2002-03 से 2016-17) स्थापित नए कीर्तिमान

नया कीर्तिमान स्थापित: 2002-03 - कंपनी को पहली बार राजभाषा पुरस्कार

सुनीता शर्मा, उप महाप्रबंधक (राजभाषा) — **जीआरएसई**

2002-03	जीआरएसई में 04.09.2002 को सेवारम्भ	नराकास से राजभाषा शील्ड
2003-04		नराकास से वैजयंती पुरस्कार
2004-05		नराकास से द्वितीय पुरस्कार
2005-06	राजभाषा के उत्कृष्ट कार्यान्वयन हेतु पुरस्कार	नराकास से द्वितीय पुरस्कार

नया कीर्तिमान स्थापित: 2006 से हिन्दी पत्रिका राजभाषा जागृति का प्रकाशन - प्रत्येक अंक पुरस्कृत

2006-07	राजभाषा के उत्कृष्ट कार्यान्वयन हेतु पुरस्कार	नराकास से तृतीय पुरस्कार
	हिन्दी पत्रिका के सम्पादन हेतु पुरस्कार	राजभाषा जागृति को द्वितीय पुरस्कार
2007-08	राजभाषा के उत्कृष्ट कार्यान्वयन हेतु पुरस्कार	नराकास से तृतीय पुरस्कार
	हिन्दी पत्रिका के सम्पादन हेतु पुरस्कार	राजभाषा जागृति को तृतीय पुरस्कार
2008-09	राजभाषा के उत्कृष्ट कार्यान्वयन हेतु पुरस्कार	नराकास से तृतीय पुरस्कार
	हिन्दी पत्रिका के सम्पादन हेतु पुरस्कार	राजभाषा जागृति को द्वितीय पुरस्कार
2009-10	राजभाषा के उत्कृष्ट कार्यान्वयन हेतु पुरस्कार	नराकास से राजभाषा शील्ड
	हिन्दी पत्रिका के सम्पादन हेतु पुरस्कार	राजभाषा जागृति को द्वितीय पुरस्कार
2010-11	राजभाषा के उत्कृष्ट कार्यान्वयन हेतु पुरस्कार	नराकास से राजभाषा शील्ड
	हिन्दी पत्रिका के सम्पादन हेतु पुरस्कार	राजभाषा जागृति को प्रथम पुरस्कार

नया कीर्तिमान स्थापित - पहली बार देश का सर्वोच्च राजभाषा पुरस्कार भारत के माननीय राष्ट्रपति जी द्वारा प्रदान किया गया

2011-12		**सर्वोच्च पुरस्कार-इंदिरा गाँधी राजभाषा पुरस्कार**
	राजभाषा के उत्कृष्ट कार्यान्वयन हेतु पुरस्कार	नराकास से राजभाषा शील्ड
	हिन्दी पत्रिका के सम्पादन हेतु पुरस्कार	राजभाषा जागृति को प्रथम पुरस्कार

नया कीर्तिमान: सुनीता शर्मा, उप महाप्रबंधक(राजभाषा) को भारत सरकार ने जीआरएसई में राजभाषा नीति के उत्कृष्ट कार्यान्वयन में प्रशंसनीय उपलब्धियों के लिए प्रशस्ति पत्र प्रदान किया।

2012-13	**उल्लेखनीय योगदान हेतु** भारत सरकार द्वारा प्रशस्ति पत्र	**सर्वोच्च पुरस्कार- इंदिरा गाँधी राजभाषा पुरस्कार -प्रथम**
	राजभाषा के उत्कृष्ट कार्यान्वयन हेतु पुरस्कार	नराकास से राजभाषा शील्ड
	हिन्दी पत्रिका के सम्पादन हेतु पुरस्कार	राजभाषा जागृति को प्रथम पुरस्कार
2013-14	हिन्दी पत्रिका के सम्पादन हेतु पुरस्कार	राजभाषा जागृति को द्वितीय पुरस्कार
2014-15		**सर्वोच्च पुरस्कार -राजभाषा कीर्ति पुरस्कार**
	राजभाषा के उत्कृष्ट कार्यान्वयन हेतु पुरस्कार	नराकास से राजभाषा शील्ड
	हिन्दी पत्रिका के सम्पादन हेतु पुरस्कार	राजभाषा जागृति को प्रथम पुरस्कार

नया कीर्तिमान: "राजभाषा जागृति" को भारत सरकार, द्वारा पहली बार देश का सर्वोच्च पुरस्कार

2015-16		**सर्वोच्च पुरस्कार -राजभाषा कीर्ति पुरस्कार - प्रथम**
		सर्वोच्च पुरस्कार -राजभाषा कीर्ति पुरस्कार -पत्रिका
	राजभाषा के उत्कृष्ट कार्यान्वयन हेतु पुरस्कार	नराकास से तृतीय पुरस्कार
	पत्रिका के सम्पादन हेतु पुरस्कार	राजभाषा जागृति को प्रथम पुरस्कार
2016-17		**सर्वोच्च पुरस्कार -राजभाषा कीर्ति पुरस्कार**
	राजभाषा के उत्कृष्ट कार्यान्वयन हेतु पुरस्कार	नराकास से द्वितीय पुरस्कार
	पत्रिका के सम्पादन हेतु पुरस्कार	राजभाषा जागृति को प्रथम पुरस्कार

एक गौरवशाली प्रथम श्रेणी मिनी रत्न प्राप्त उपक्रम

गार्डन रीच शिपबिल्डर्स एण्ड इंजीनियर्स लिमिटेड

(भारत सरकार का उपक्रम)

43/46, गार्डन रीच रोड, कोलकाता – 700 024
दूरभाष सं. : 2469-8100 से 8113, फैक्स : (033) 2469-8150
वेबसाइट : www.grse.nic.in

सम्पादन, डिजाइनिंग तथा संकल्पना श्रीमती सुनीता शर्मा, उप महाप्रबंधक (राजभाषा) द्वारा